

मिलने का पता—

१ कुम्भकरण टीकमचन्द चोपड़ा

मु० आठगांव, पो० ढींग,

(आसाम)

२ कुम्भकरण टीकमचन्द चोपड़ा

गंगाशहर (वीकानेर)



संख्या	विषय	पृष्ठांक
--------	------	----------

१	श्री चौबीस जिन स्तवन २४	१
२	श्री नवकार (१०८ गुणों के नाम सहित)	२५
३	सामायक लेखों की पाटी	२८
४	सामायक पारखों की पाटी	२९
५	तिक्लुता की पाटी	२९
६	पंच पद बंदना	२९
७	पच्चीस बोल	३१
८	चौरासी लाख योनि	४८

६	श्रद्धा ऊपर सज्जाय	४८
१०	तेरापंथ ओलखणां की ढाल	५०
११	सालह सती नो स्तवन	५३
१२	श्री भिखुगणी स्वामी के गुणां की ढाल (जयाचार्य कृत)	५५
१३	आचार्य गुणमाला	५६
१४	श्री कालूगणी के गुणा की ढाल १ ली	६०
१५	” ” २ ली	६२
१६	जिन कल्पी साधु की ढाल	६४
१७	अनाथी मुनि को स्तवन	६६
१८	श्री भिखुगणी के गुणा की ढाल	६८
१९	आयुष टूटी को सान्धो को नहिं रे की ढाल	७०
२०	मुक्ति जाने की डिग्री	७१
२१	करणी हो कीज्यो चित्त निर्मले की ढाल	७४
२२	अन्तर ढाल	७७
२३	दश दानों की ढाल	८०
२४	चेतावनौ	८४
२५	कर्म नौ सिज्जाय	८६

२६	जीवा तू तो भोलो रे की ढाल	८८
२७	थौबन धन पावणा की ढाल	९२
२८	उपदेश पच्चीसी	९३
२९	सुगुरु पच्चीसी	९६
३०	कुगुरु पच्चीसी	९९
३१	स्त्री चरित्र की ढाल	१०१
३२	सुदर्शन सेठ के बखान की ढाल ३२ वीं	१०६
३३	„ „ ३३ वीं	१०८
३४	„ „ ३६ वीं	११२
३५	पाना की चरचा	११५
३६	प्रतिक्रमण	१५३
३७	चार निक्षेपां रौ चौपाई ढाल १ ली	१८६
	„ „ दूजी	१९२
	„ „ तीजी	१९४
	„ „ चौथी	२०३
	„ „ ५ वीं	२१२
	„ „ ६ ठी	२१७
३८	हिम नवरसे की ढाल ७ मी	२२८
३९	श्री पूज्य यह बिनय है फिर शीघ्र दर्श देना	२३२

निवेदन



य पाठकों ! यह पुस्तक 'जैन-हित-शिखा' प्रथम भाग श्रावक कुम्भकरणी टीकमचन्दजी चोपड़ा के कहने से मैंने तैयार की है । इस में पच्चीस बोल, चर्चा आदि थोकड़ों के सिवाय बहुत सी उपदेशिक ढालें तथा श्रीपुण्यजी महाराज के गुणों की ढालें तथा चार निवेदनों की चौपाई की ढालें भी उपयोगी समझ कर संग्रह कर दी हैं—जिस से अन्य पुस्तकों की अपेक्षा इस में कुछ विशेषता आ गई है । परन्तु मेरा परिश्रम तभी सफल है जब कि आप लोग इन्हें जयगायुत पढ़ें व दूसरों को पढ़ कर सुनावें तथा शुद्ध समकित दृढ़ कर अपना व दूसरों का आत्मिक हित करें । श्री वीतराग देव के वचनों की यथार्थ ओलखना कर उस पर दृढ़ आस्था-प्रतीति रखना ही भव सागर में पार होने का एक मात्र उपाय है ।

पुस्तक के लिखने व छपाने में भग्नक सावधानी से काम लिया गया है. तथापि मेरी अल्पज्ञता के कारण व प्रमाद वश कुछ भूल चुक व त्रुटियां रह गई हों तो विज जन उन्हें स्वयं शुद्ध कर

लें तथा मुझे उस से अवश्य सूचित करें ताकि दूसरी आवृत्ति में शुद्ध कर दी जायें ।

निक्षेपों की ढालें जिस हस्त-लिखित प्रति से उतार कर छपी गई है उस प्रति के कई स्थल ठीक ठीक पढ़ने व समझने में नहीं आये इस से ज्यों के त्यों उसी के अनुसार छाप दिये गये हैं । अतएव जिन महाशयों के पास चार निक्षेपों की चौपाई की ढालों की हस्त-लिखित प्रतियें हों वे उसे इस पुस्तक की छपी हुई ढालों से मिलान करें और जहां २ अन्तर दिखाई दे उस से मुझे सूचित करें, तो मैं उन महाशयों का चिर कृतज्ञ रहूंगा और दूसरी आवृत्ति में उन लोगों के नाम धन्यवाद सहित प्रकाशित करूंगा ।

अन्त में ओसवाल प्रेस के मालिक बा० महालचन्दजी बयेद को धन्यवाद देकर निवेदन समाप्त करता हूं—जिनकी सहायता से इस पुस्तक के संग्रह करने व छपाने में मुझे पूरी सरलता हुई ।

यदि जिनेश्वर देव के बचनों के विरुद्ध कुछ छप गया हो तो मुझे मिच्छामि दुःख ।

निवेदकः—

दुर्जनदास सेठिया ।

(भीनासर निवासी)

ॐ गजल ॐ

जिनेश्वर धर्म सारा है ।

मेरे प्राणों से प्यारा है ॥

जिनका ध्यान घर भाई ।

श्री जिनराज फरमाई ॥

जिससे होत सुखदाई ।

इसीसे दिल हमारा है ॥ जिने ॥१॥

जिनेश्वर नाम जो गावे ।

कि भव से पार हो जावे ॥

जनम वो फेर ना पावे ।

होय भवसिन्धु पारा है ॥ जिने ॥२॥

येसे जिनराज प्यारे हैं ।

जिन्हों ने भक्त त्यारे हैं ॥

जि हों ने कर्म मारे हैं ।

उन्हींका मो आधार है ॥ जिने ॥३॥

विमुख जो धर्म से होवे ।

पकड़ शिर अन्त में रोवे ॥

जिनेश्वर धर्म वो छोवे ।

जिन्हों को नर्क प्यारा है ॥ जिने ॥४॥

नहीं नर भव जनम हारे ।

जिनेश्वर धर्म जो धारे ॥

योही यम फांस को टारे ।

महालचंद दास थारा है ॥ जिने ॥५॥

श्रीजिनाय नमः ।

अथ

॥ श्रीचौबीसजिनस्तुतिप्रारम्भः ॥

दोहा—ॐ नमः अरिहंत अतनु । आचार्य उव
ज्जाय ॥ मुनि पंच परमेष्ठिए ॐकाररै मांहि ॥ १ ॥
बलि प्रणमुं गुणवंत गुरु । भिक्षु भरत मभार ॥ दान
दया न्याय छाणनें । लीधो मारग सार ॥ २ ॥ भारी
माल पट भलकता । तीजै पट ऋषिराय ॥ प्रणमु मन
वच कायकरी पांचुं अंग नमाय ॥ ३ ॥ इम सिद्ध साधु
प्रणमी करी । ऋषभादिक चौबीस ॥ स्तवन करुं प्रमो-
द करी । जय जश कर जगदीश ॥ ४ ॥ मल्लिनेमए दोय
जिन । पाणीयहण न कीध ॥ शेष बावीसजिनेश्वरुं रमण
छांड ब्रत लीध ॥ ५ ॥ वासुपूज्य मल्लिनेम जिन । पारस
अनें वर्द्धमान ॥ कुमर पदै अरु प्रथम वय । धाखो चरण
निधान ॥ ६ ॥ कचपति उगणीस जिन । ब्रत तीजै वय
सार ॥ उत्कृष्ट आयु जिह समय तसु त्रिण भाग बिचार
॥ ७ ॥ बीर समय उत्कृष्ट स्थिति । वर्ष सवा सय
होय ॥ भाग तीन कीजै तसु । एतीनुं वय जोय ॥ ८ ॥
इमसगलै उत्कृष्ट स्थिति । त्रिणभागे वय तीन ॥ अंतिम

वय उगणीस जिन । धुर वय पंच मुचीन ॥६॥ श्वेत
 वरण चंद सुविधि जिन । पदम वासु पूज्य लाल ॥ मुनि
 सुव्रत रिठनेम प्रभु । कृष्ण वरण सुविशाल ॥ १० ॥
 मल्लिनाथ फुन पाश्वर् प्रभु । नील वरण वर अंग ॥
 षोडस शेष जिनेश तनु । सोवन वरण मुचंग ॥ ११ ॥
 श्रेयांस मल्लि मुनिमुव्रत जिन । नेम पाश्वर् जगदीश ॥
 प्रथम पहर दीक्षाग्रही पिंकलै पोहर उन्नोस ॥ १२ ॥
 सुमति जीम दीक्षाग्रही । अठम भक्त मल्लि पास ॥ छठ
 भक्त जिन बीस वर । वासुपूज्य उपवास ॥ १३ ॥ ऋषभ
 अष्टापद शिवगमन । वीर पावापुरी दीस ॥ नेम गिरना
 र वासु चंपा । शिखर समेत सुवीस ॥ १४ ॥ ऋषभ
 संधारै शिव गमन । चउदश भक्त उदार ॥ चरम छठ
 अणसण पवर बावीस मास संधार ॥ १५ ॥ ऋषभ
 वीर अरु नेम जिन । पत्यंक आसण शिव पेख ॥ शेष
 ब्रह्मवीश जिनेश्वर काउसग मुद्रा देख ॥ १६ ॥ जिन
 चौवीस तणा सुगुण । रचियै वचन रसाल ॥ ध्यान
 मुधा वर सार रस जय जग करण विशाल ॥ १७ ॥

प्रथम ऋषभजिनस्तवन ।

(ऐसे गुरु किम पाचियै पदेशी)

वन्दु वैकर जोड़ने । जुग आदि जिनन्दा ॥ कर्म
 रिपु गज उपरै । मृगराज मुनिन्दा ॥ प्रणमू प्रथम

जिनन्दनें जय जय जिन चन्दा ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥
 अनुकूल प्रतिकूल सम सही । तप विविध तपिन्दा ॥
 चेतन तनु भिन्न लेखवी । ध्यान शुक्त ध्यावंदा ॥ २ ॥
 पुद्गल मुख और पेखिया । दुःख हेतु भयाला ॥ विरक्त
 चित बिगड्यो इसो । जाण्या प्रत्यक्ष जाला ॥ ३ ॥
 संवेग सरवर भूलतां । उपशम रस लीना ॥ निन्दा
 स्तुति मुख दुःखे । सम भाव सुचीना ॥ ४ ॥ बांसी
 चंदन सम पणे । थिर चित जिन ध्यायां ॥ इम तन
 सार तजी करी । प्रभु केवल पायां ॥ ५ ॥ हुं बलिहारी
 तांहरी वाह वाह जिन राया ॥ ३ ॥ उवा दशां किण दिन
 आवंसी । मुक्त मन उमाया ॥ ६ ॥ उगणीसै मुदि भाद्रवे
 दशमी दीतवारं ॥ ऋषभदेव रटवेकरी । हुओ हर्ष
 अपारं ॥ ७ ॥

श्री अजितजिनस्तवन ।

(अहो प्रिय तुम बट पाडी पदेशी)

अहो प्रभु अजित जिनेश्वर आपरी । ध्याउं ध्यान
 हमेश ही ॥ अहो प्रभु अशरण शरण तुंही सही ।
 मेटण सकल कलेश ही ॥ अहो प्रभु तुम ही दायक शिव
 पंथना ॥ १ ॥ अहो प्रभु उपशम रस भरौ आपरी ।
 बाणी सरस विशाल ही ॥ अहो प्रभु मुगत निसरणी

महा मनोहर । सुण्यां मिटे भ्रमजाल हो ॥ २ ॥
 अहोप्रभु उभय बंधण आप आखिया रागद्वेष विकराल
 हो ॥ अहो प्रभु हेतुए नरक निगोदना । राच्या मूरख
 बाल हो ॥ ३ ॥ अहो प्रभु रमणी राखसणी समी कही ।
 विष बेलि मोह जाल हो ॥ अहो प्रभु काम नें भोग
 किम्पाक सा । दाख्या दीन दयाल हो ॥ ४ ॥ अहो प्रभु
 विविध उपदेश देई करी । तें ताच्या नर नार हो ॥
 अहो प्रभु भव सिंधु पोत तुंही सही । तुंही जगत्
 आधार हो ॥ ५ ॥ अहो प्रभु शरण आयो तुज साहिवा ।
 बस रक्षा होया मांहि हो ॥ अहो प्रभु आगम बथण
 अंगी करी । रक्षो ध्यान तुज ध्याय हो ॥ ६ ॥ अहो
 प्रभु सखत् उगणीसै नें भाद्रवै । दशमी आदित्यवार
 हो । अहो प्रभु आप तणा गुण गाविया बर्त्ता जय
 जयकार हो ॥ ७ ॥

श्री संभव जिनस्तवन ।

(हुं बलिहारी हो जादवां पदेशी)

संभव साहिव समरीये । धाखो हो जिण निरमल
 ध्यान कै ॥ इक पुद्गल दृष्टि थापनें ॥ कीधो हे मन
 मेरु समान कै ॥ संभव साहिव समरिये ॥ १ ॥ ए
 आंकणी । तन चंचलता मेटनें हुआहे जगणी उदासीन

कै ॥ धर्म शुक्त थिर चित्त धरै । उपशम रस में
 होय रक्षा लीन कै । सं० ॥ २ ॥ सुखइन्द्रादिकनां
 सह । जाणया हे प्रभु अनित्य असार कै ॥ भोग भयंकर
 कटुक फल । देख्या हे दुर्गति दातार कै ॥ सं० ॥
 ॥ ३ ॥ सुधा संवेग रसे भग्या । पेख्याहे पुद्गल मोह
 पाशके ॥ अरुचि अनादर आण नें आत्मध्यानैं करता
 विलास कै । सं० ॥ ४ ॥ संग छांड मन वशकरी ।
 इन्द्रिय दमन करी दुर्दंत कै ॥ विविध तपे करी
 स्वामजी । घाती कर्मनो कीधी अंत कै ॥ सं० ॥ ५ ॥
 हूं तुज शरणे आवियो । कर्म विदारन तुं प्रभु वीर कै ।
 ते तन मन बच वश किया । दुःकर करणी करण
 महाधीर कै ॥ सं० ॥ ६ ॥ संबत उगणीसै भाद्रवै ।
 सुदि इग्यारस आण विनोद कै ॥ संभव साहिब सम-
 रिया । पाम्यो हे मन अधिक प्रमोद कै ॥ सं० ॥ ७ ॥

श्री अभिनन्दन जिनस्तवन ।

(सती कलूजी हो हुआ संजमनै त्यार पदेशी)

तीर्थंकर हो चोथा जग भाण छांडि गृहवास
 करी मति निरमली । विषय विटम्बण हो तजिया
 विष फल जाण । अभिनंदन बान्दु' नित्य मनरली ॥ १ ॥
 ए आंकणी । दुःकर करणी हो कीधी आप दयाल ॥

ध्यान शुधा रस सम दम मन गली । संग त्याग्यो हो
 जाणी माया जाल ॥ अ० ॥ २ ॥ वीर रसे करी
 हो कीधी तपस्या विशाल । अनित्य अशरण भावन
 अशुभ निरदली ॥ जग भूठो हो जाण्यो आप कृपाल ॥
 अ० ॥ ३ ॥ आत्म मंत्री हो सुख दाता सम परिणाम ॥
 एहीज अमिद अशुभ भावे कलकली ॥ एहवी भावन
 हो भाया जिन गुण धाम ॥ अ० ॥ ४ ॥ लीन संवेगे
 हो ध्याया शुक्ल ध्यान ॥ चायक श्रेणी चढी हुषा
 केवली ॥ प्रभु पाम्या हो निरावरण सुन्नान ॥ अ०
 ॥ ५ ॥ उपशम रस भरी हो वागरी प्रभु वाण ॥ तन
 मन प्रेम पाया जन सांभली ॥ तुम वच धारी हो
 पाम्या परम कलाण ॥ अ० ॥ ६ ॥ जिन अभिनंदन
 हो गाया तन मन प्यार ॥ संवत उगणीसैने भाद्रवे
 अवदली ॥ सुदि द्रग्यारस हो हुषो हर्ष अपार ॥
 अ० ॥ ७ ॥

श्री सुमति जिनस्तवन ।

(मुख्य जीवडा रे गाफल मत रहे)

सुमतिजिनेश्वर साहेव शोभता ॥ सुमति करण
 संसार ॥ सुमति जप्यांथी सुमति वधै घणी ॥ सुमति
 सुमति दातार ॥ सु० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ ध्यान

सुधारस निर्मल ध्यायने ॥ पास्या केवल नाण ॥ वाण
 सरस वर जन बहु तारिया ॥ तिमिर हरण जग भाण ॥
 सु० ॥ २ ॥ फटिक सिंहासन जिनजी फावता ॥
 तरु अशोक उदार ॥ कुव चामर भामंडल भलकतो ॥
 सुर दुंदुभि भिणकार ॥ सु० ॥ ३ ॥ पुष्प वृष्टि वर
 सुर ध्वनी दीपती ॥ साहिब जग सिणगार ॥ अनंत
 ज्ञान दर्शन मुख बल घणुं ॥ ए द्वादश गुण श्रीकार ॥
 सु० ॥ ४ ॥ बाणी अमी सम उपशम रस भरी ॥
 दुर्गति मूल कषाय ॥ शिव मुखना अरि शब्दादिक
 कछा ॥ जग तारक जिन राय ॥ सु० ॥ ५ ॥ अंतर
 जामीरे शरणै आपरे ॥ हुं आयो अवधार ॥ जाप
 तुमारीरे निश दिन संभरु ॥ शरणागत मुखकार ॥
 सु० ॥ ६ ॥ संवत उगणीसैरे सुदि पक्ष भाद्रवे ॥
 बारस मंगलवार ॥ सुमतिजिनेश्वर तन मनस्यं
 रखा आनन्द उपनो अपार ॥ सु० ॥ ७ ॥

पद्म जिनस्तवन ।

(जिन्दवेरी देशी छै सुणभगते भगवन्तके पदेशी)

निर्लेप पद्म जिसा प्रभु ॥ पद्म प्रभु पीछाणर संय-
 म लीधो तिण समै ॥ पाया चौथो नाण ॥ पद्म प्रभु
 नित्य समरिये ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ ध्यान शुक्ल प्रभु

ध्यायनें ॥ पाया केवल सोयर दीन दयाल तणी दिशा ॥
 कहणी नावे कोय ॥ पद्य० ॥ २ ॥ सम दम उपशम
 रस भरी ॥ प्रभु आपरी वाणि ॥ त्रिभुवन तिलक तुंही
 सही ॥ तुं हो जनक समान ॥ पद्य० ॥ ३ ॥ तुं प्रभु
 कल्प तरु समो ॥ तुं चिन्तामणि जोय २ ॥ समरण
 करतां आपरो ॥ मन वंछित होय ॥ पद्य० ॥ ४ ॥
 सुखदायक सह जग भणी ॥ तुं ही दीन दयाल २ शरणे
 आयो तुज साहिबा ॥ तुं ही परम कृपाल ॥ पद्य०
 ॥ ५ ॥ गुणगातां मन गहगहे ॥ सुख संपति जाण २ ॥
 विघ्न मिटै समरण कियां ॥ पामै परम कल्याण ॥
 पद्य० ॥ ६ ॥ संवत उगणीसैनें भाद्रवे ॥ सुदि बार
 स देख ॥ पद्य प्रभु रघ्या लाडनूं ॥ हुओ हर्ष विशेष ॥
 पद्य० ॥ ७ ॥

श्री सुपास जिनस्नवन ।

(कृपण दीन अनाथ पदेशी)

सुपास सातमां जिणंद ए ॥ ज्यांने सेवे सुर नर
 वंदए ॥ सेवक पूरण आशए ॥ भजिये नित्य स्वामि-
 सुपासए ॥ १ ॥ एआंकणी ॥ जन प्रतिबोधण कामए ॥
 प्रभु वागरे वाण असामए ॥ संसार स्यूं हुवै उदासए ॥
 भ० ॥ २ ॥ पामै काम भोगयी उडगेए ॥ बलि उपजै

परम संवेगए ॥ एहवा तुम वच सरस विलासए ॥
 भ० ॥ ३ ॥ घणी सीठी चक्रीनी खीर ए ॥ वलि खौर
 समुद्रनो नीर ए ॥ एहथी तुम वच अधिक विमासए ॥
 भ० ॥ ४ ॥ सांभलनें जन वृन्द ए ॥ रोम रोम में पामें
 आनंद ए ॥ ज्यांरी मिटै नरकादिक वास ए ॥
 भ० ॥ ५ ॥ तुं प्रभु दीन दयाल ए ॥ तुं ही अशरण
 शरण निहाल ए ॥ हुं कुं तुमारो दासए ॥ भ० ॥ ६ ॥
 संवत उगणीसै सोयए ॥ भांद्रवा सूदि तेरस जोय
 ए ॥ पहुंची मननी आश ए ॥ भ० ॥ ७ ॥

श्री चंद्रप्रभुजिन स्तवन ।

(शिवपुर नगर सुहामणो पदेशी)

हो प्रभु चंद जिनेश्वर चंद जिस्वा ॥ बाणी शीतल
 चंद सौ न्हालहो ॥ प्रभु उपशम रस जन सांभलै ॥
 मिटै कर्म भ्रम मोह जाल हो ॥ प्रभु० ॥ १ ॥
 एआंकणी ॥ हो प्रभु सूरत मुद्रा सोहनी ॥ बारु रूप
 अनूप विशाल हो ॥ प्रभु इन्द्र शची जिन निरखती ॥
 तेतो तृप्त न होवे निहालहो ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ अहो
 बीतराग प्रभु तूं सही ॥ तुम ध्यावे चित्त रोकहो ॥
 प्रभु तुम तुल्य ते हुवे ध्यान स्थूं ॥ मन पाया परम
 संतोष हो ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ हो प्रभु लीन पणै तुम

ध्यावियां ॥ पामै इन्द्रादिकनी ऋद्धि हो ॥ वले
 विविध भोग सुख सम्पदा ॥ लहे आमोसही आदि
 लब्धिहो ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ हो प्रभु नरेन्द्र पद पामै
 सही ॥ चरण सहीत ध्यान तम मनहो ॥ प्रभुअह
 मिंद्र पद पावै वलि ॥ क्रियां निश्चल धारो भजनहो ॥
 प्रभु० ॥ ५ ॥ हो प्रभु शरण आयो तुज साहिबा ॥ तुम
 ध्यान धरुं दिन रयनहो ॥ तुज मिलवा मुक्त मन
 उमछो ॥ तुम शरणाख्युं सुखचैनहो ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥ संवत
 उगणीसैनै भाद्रवे ॥ सुदि तेरसने बुधवारहो ॥ प्रभु चंद्र
 जिनेश्वर समरिया ॥ हुओ आनंद हर्ष अपारहो ॥
 प्रभु० ॥ ७ ॥

श्री सुविधि जिन स्तवन ।

(सीहीतेरापंथ पावै हो पदेशी)

सुविधि करी भजिये सदा ॥ सुविधि जिनेश्वर
 स्वामी हो ॥ पुष्पदंत नाम दूसरो ॥ प्रभु अंतरजामी
 हो ॥ सुविधि भजिये शिरनामी हो ॥ १ ॥ ऐआंकणी ॥
 श्वेत वरण प्रभु शोभता वारु वाण अमामीहो ॥ उप-
 शम रस गुण आगली ॥ मेठण भव भव खामीहो सु०
 ॥ २ ॥ समवसरण विच फावता ॥ त्रिभुवन तिलक
 तमामी हो ॥ इंद्र धकी ओपै घणां ॥ शिवदायक
 स्वामी हो सु० ॥ ३ ॥ सुरेंद्र नरेंद्र चन्द्र ते इंद्राणी

अभिरामी हो ॥ निरख निरख धापै नहीं एहवो रूप
 अमामीहो ॥ ॥ ४ ॥ मधु मकरंद तणीपरें । सुर नर
 करत सलामीहो ॥ तोपिण राग व्यापै नहीं । जीत्यो
 मोह हरामीहो ॥ सु० ॥ ५ ॥ जे जोधा जगमें घणा ॥
 सिंघ साथे संगामीहो ॥ ते मन इन्द्रिय बश करी ॥
 जोड़ी केवल पामीहो ॥ सु० ॥ ६ ॥ उगणीसै पुनम
 भाद्रवी प्रणमु शिरनामीहो ॥ मनचिन्तित वस्तु
 मिलै ॥ रटियां जिन स्वामीहो ॥ सु० ॥ ७ ॥

श्री शीतलजिन स्तवन ।

(हुं देवा आह ओलंभडो सासुजी एदेशी)

शीतलजिन शिवदायका ॥ साहेबजी ॥ शीतल चंद
 समान हो ॥ निस्नेही ॥ शीतल अमृत सारिखा ॥
 साहेबजी ॥ तप्त मिटै तुम ध्यानहो ॥ निस्नेही ॥
 सूरत थारी मन बसी साहेबजी ॥ १ ॥ बंदे निंदे तोभणी
 साहेबजी ॥ राग द्वेष नहीं तामहो ॥ निस्नेही ॥ मोह
 दावानल तें मेटियो ॥ साहेबजी ॥ गुणनिष्पन्न तुम नाम
 हो ॥ निस्नेही ॥ सू० ॥ २ ॥ नृत्य करै तुज आंगलें
 साहेबजी ॥ इन्द्राणी सुरनारहो ॥ निस्नेही ॥ राग
 भाव नहीं उपजै ॥ साहेबजी ॥ तेअंतर तप्त निवारहो
 ॥ निस्नेही ॥ सू० ॥ ३ ॥ क्रोध मान माया लोभए ॥
 साहेबजी ॥ अग्निमु' अधिक्की आगहो ॥ निस्नेही ॥

शुक्ल ध्यान रूप जलकरी ॥ साहेबजी ॥ यथा शीत
 लिभूत महाभाग्यहो ॥ निस्तेही ॥ सू० ॥ ४ ॥ इंद्रिय
 नोद्गन्धिय आकरा ॥ साहेबजी ॥ दुर्जय नै दुर्दांतहो ॥
 निस्तेही ॥ तें जीता मन थिर करी ॥ साहेबजी ॥ धरि
 उपशम चित शांतिहो ॥ निस्तेही ॥ सू० ॥ ५ ॥ अंतर-
 जामी आपरो ॥ साहेबजी ॥ ध्यान धरुं दिन रैनहो ॥
 निस्तेही ॥ उवाही दिशा कद आवसी ॥ साहेबजी ॥
 होसी उत्कृष्टो चैनहो ॥ निस्तेही ॥ सू० ॥ ६ ॥ उग-
 णीसै पूनम भाद्रवी ॥ साहेबजी ॥ शीतल मिलवा
 काजहो ॥ निस्तेही ॥ शीतल जिनजीनें समरिया ॥
 साहेबजी ॥ हियो शीतल हुओ आजहो ॥ निस्तेही ॥
 सू० ॥ ७ ॥

श्री श्रेयांसजिन स्तवन ।

(पुत्रवसुदेवनो पदेशी)

मोक्षमार्गश्रेयशोभता ॥ धाम्या स्वाम श्रेयांस उदाररे ॥
 जेजेश्रेय वस्तु संसारमें ॥ ते ते आप करी अङ्गीकाररे ॥
 ते ते आपकरी अंगीकार श्रेयांस जिनेश्वरु प्रणमू नित्य
 वेकर जोड़रे ॥ १ ॥ समिति गुप्ति दुःधर घणा ॥ धर्म
 शुक्ल ध्यान उदाररे ॥ एश्रेय वस्तु शिव दायनी ॥ आप
 आदरी हर्ष अपाररे ॥ श्रे० ॥ २ ॥ तन चंचलता मेठनें ॥
 पझासन आप विराजरे ॥ उत्कृष्टो ध्यान तणी कियो ॥

आलम्बन श्रीजिनराजरे ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ इन्द्रिय विषय
 विकारथी ॥ नरकादि रुलियो जीवरे ॥ किंपाक फलनी
 उपमा ॥ रहिये दूर थी दूर सदीवरे ॥ श्रे० ॥ ४ ॥
 संयम तप जप शीलए ॥ शिव साधन महा सुखकाररे ॥
 अनित्य अशरण अनंतए ॥ ध्यायो निर्मल ध्यान उदाररे
 ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ स्त्रियादिक ना सङ्गते ॥ आलम्बनदुःख
 दाताररे ॥ अशुद्ध आलम्बन छांडने ॥ धर्यो ध्यान आल-
 म्बन साररे ॥ श्रे० ॥ ६ ॥ शरणे आयो तुज साहिबा ॥
 करुं बारंवार नमस्काररे ॥ उगणीसै पूनम भाद्रवे ॥
 मुज वर्त्ता जय जय काररे ॥ श्रे० ॥ ७ ॥

श्री वासुपूज्य जिन स्तवन ।

(इम जाप जपो श्रीनवकारं पदेशी)

द्वादशमा जिनवर भजिये ॥ राग द्वेष मच्छर माया
 तजिये ॥ प्रभु लालवरण तन क्विब जाणी ॥ प्रभुवासुतपूज्य
 भजले प्राणी ॥ १ ॥ बनिता जाणी वैतरणी ॥ शिव सुंदर
 वरवा हंस घणी ॥ काम भोग तज्या किंपाक जाणी ॥
 प्र० ॥ २ ॥ अञ्जन मञ्जन स्युं अलगा ॥ वलि पुष्प विले-
 पन नहीं विलगा ॥ कर्म काव्या ध्यान मुद्रा ठाणी ॥ प्र०
 ॥ ३ ॥ इन्द्र थकी अधिका ओपै ॥ करुणागर कदेइ नहीं
 कोपै ॥ वर शाकर दूध जिसी बाणी ॥ प्र० ॥ ४ ॥ स्त्री
 स्नेह पाशा दुर्दता ॥ कह्या नरक निगोद तणा पंथा ॥

ब्रह्म भव परभव दुःखदाणी ॥ प्र० ॥ ५ ॥ गज कुम्भ दलै
मृगराज हणी ॥ पिण दोहिली निज आत्मा दमणी ॥
द्रुम सुग बहु जीवचेत्या जाणी ॥ प्र० ॥ ६ ॥ भाद्रवी
पूनम उगणीसो ॥ कर जोड़ नमूं वासुपूज्य ब्रूसो ॥ प्रभु
गांतां रोम राय हुलसाणी ॥ प्र० ॥ ७ ॥

श्री विमल जिन स्तवन ।

कांयनमांगाकांयनमांगाहोराणाजीमांगपूर्णप्रितवीजं

(कांयनमांगाहो पदेशी)

शरणे तिहारेहो विमलप्रभु ॥ सेवकनी अरदाश ॥
आयो शरण तिहारेहो ॥ विमल करण प्रभु विमलनाथजी ॥
विमल आप मल रहीत ॥ विमल ध्यान धरतां हुवे निर्मल ॥
तन मन लागी प्रीत ॥ साहेव शरणे तिहारेहो ॥ १ ॥
विमल ध्यान प्रभु आप ध्याया ॥ तिण सूं हुआ विमल
जगदीश ॥ विमल ध्यान बलि जे कोई ध्यासी ॥ होसी
विमल सरीस ॥ सा० ॥ २ ॥ विमल गृहवासे द्रव्य जिनंद्र
घा ॥ दीक्षा लियां भावे साध ॥ केवल उपना भावे जि-
नेश्वर ॥ भावे विमल आराध ॥ सा० ॥ ३ ॥ नाम स्थापना
द्रव्य विमल थी कारज न सरेकोय ॥ भाव विमल थी
कारज सुधरे ॥ भाव जप्यां शिव होय ॥ सा० ॥ ४ ॥ गुण
गिरवो गंभीर धीरतूं ॥ तूं मेठण जम चास ॥ में तुम
वयण आगम शिर धास्या ॥ तूं मुक्त पूरण आश ॥

सा० ॥ ५ ॥ तूँही कृपाल दयाल तूँ साहेब । शिवदा-
यक तूँ जगनाथ ॥ निश्चल ध्यान करे तुज ओलख ॥
ते मिले तुज संघात ॥ सा० ॥ ६ ॥ अंतरजामी आप
उजागर ॥ में तुम शरणो लीध ॥ संवत उगणीसै भाद्रवी
पुँनम वंक्षितकार्य सिद्ध ॥ सा० ॥ ७ ॥

अनंत जिन स्तवन ।

(पायो युगराजपद मुनि पदेशी)

अनंतनाम जिन चउदमारे ॥ द्रव्य चोथे गुणठाण
भलांजी कांडे द्रव्य० ॥ भावे जिन हुवै तेरमेरे ॥ इतले
द्रव्य जिन जाण ॥ भलाजी कांडे इतले द्रव्य जिन
जाण ॥ पायो पद जिनराजनुरे ॥ शुद्ध ध्यान निरमल
ध्याय ॥ भलां० पायोपद ॥ १ ॥ जिन चक्री सुर जुग-
लियारे ॥ वासुदेव बलदेव भलां० बा० ॥ ऐपञ्चम गुण
पावै नहीरे ॥ ए रीत अनादि स्वमेव भलां० ए० ॥ पा०
॥ २ ॥ संयम लीधो तिण समैरे ॥ आया सातमें गुण-
ठाण भलां० आ० ॥ अंतर मुहूर्त्त तिहार हीरे ॥ छठे
बहुस्थिति जाण भलां० छ० ॥ पा० ॥ ३ ॥ आठमां थी
दोय श्रेणीछेरे ॥ उपशम खपक पिछाण भलां० उ०
उपशम जाम द्रग्यारमैरे ॥ मोह दबावतो जाण भलां०
मो० ॥ पा० ॥ ४ ॥ श्रेणी उपशम जिन ना लहैरे ॥ खपक-
श्रेणी धर खंत भ० ख० चारिदमोह खपावतारै ॥

चठिया ध्यान अत्यन्त भ० च० ॥ पा० ॥ ५ ॥ नवमें
 आदि संजलचिह्नरे ॥ अंतसमे इक लोभ भ० अं० ।
 दसमें सूक्ष्म मात्रतेरे ॥ सागार उपयोग शोभ भ० सा०
 ॥ पा० ॥ ६ ॥ एकादशमो उलंघनैरे ॥ बारमें मो
 खपाय ॥ भ० बा० ॥ तिकर्म एक समै तोड़तारे तेरमें
 केवल पाय ॥ पा० ॥ ७ ॥ तीर्थ थाप योग रुंध नैरे ।
 चउदमा थी शिवपाय भ० च० ॥ उगणीसै पुनम भाद्र-
 वेरे ॥ अनंत रक्षा हरपाय भ० अं० ॥ पा० ॥ ८ ॥

॥ ओ स्तवन नीचे लिखे मूजव
 चालमें भी गायो जावे है ॥

अनंत नाम जिन चवदमां, जिनरायारे ॥ द्रव्यध
 चोथि गुण स्थान, स्वाम सुखदायारे ॥ भावे जिन हुवै
 तेरमें, जिनरायारे ॥ इतलै द्रव्य जिन जाण, स्वाम
 सुखदायारे ॥ १ ॥

धर्म जिन स्तवन ।

(भद्रपदभारीमालभलक एदेशी)

धर्म जिन धर्म तणा धोरी ॥ चटक मोहपाश
 नाख्या तोड़ी ॥ चरण धर्म आत्म स्युं जोड़ी अहो प्रभु
 धर्म देव प्यारा ॥ १ ॥ शुद्ध ध्यान अमृत रस लीना ॥

संवेग रसे करी जिन भीना ॥ प्याला प्रभु उपशमना
 पीना ॥ अ० ॥ २ ॥ जाण्या शब्दादिक मोह जाला ॥
 रमणि मुख किंपाक सम काला ॥ हेतु नरकादिक
 दुःख आला ॥ अ० ॥ ३ ॥ पुद्गल शिव अरि जाण्या
 स्वामी ॥ ध्यानधिर चित्त आत्म धामी ॥ जोडी युग
 केवलनी पामी ॥ अ० ॥ ४ ॥ थाप्या प्रभु चार तीरथ
 ताथो ॥ आख्यो धर्म जिन आज्ञा मांथो ॥ आज्ञा
 बाहिर अधर्म दुःखदायो ॥ अ० ॥ ५ ॥ ब्रतधर्म धर्मजिन
 आख्याता ॥ अविरत कही अधर्म दुःखदाता ॥ सावद्य
 निरवद्य जु जुआ कह्या खाता ॥ अ० ॥ ६ ॥ बहु जन
 तार मुक्ति पाया ॥ उगणीसै आसू धुर दिन आया ॥
 धर्मजिन रटवे मुख पाया ॥ अ० ॥ ७ ॥

श्री शांतिजिन स्तवन ।

हुं बलिहारी भीषणजी साधरी ।

शांतिकरण प्रभु शांतिनाथजी ॥ शिव दायक
 मुखकंदकी ॥ बलिहारी हो शांतिजिणंदकी ॥ १ ॥
 अमृत बाणी सुधासी अनुपम ॥ मेटण मिथ्या मंदकी ॥
 ॥ व० ॥ २ ॥ काम भोग राग द्वेष कटुक फल ॥ विष
 बेलि मोह धंदकी ॥ व० ॥ ३ ॥ राक्षसणी रमणी वैत-
 रणी पुतली अशुचि दुर्गंधकी ॥ व० ॥ ४ ॥ विविध
 उपदेश देइ जन तास्या ॥ हुं वारी जाउं विश्वानंद

॥ ५ ॥ जप्त जाप खपत पाप ॥ तप्त हि मिटायो ॥
 मल्लि देव त्रिविधि सेव ॥ जग अछेरो पायो ॥ ६ ॥
 उगणौसै आसोज तीज कृष्ण सुदिन आयो ॥ कुम्भनंदन
 कर आनंद ॥ हर्षथी में गायो ॥ म० ॥ ७ ॥

श्री मुनिसुव्रत जिनस्तवन ।

शोरठ ।

भरतजी भूप भयाछो वैरागी ।

सुमिंत नंदन श्रीमुनिसुव्रत ॥ जगत नाथ जिन
 जाणी ॥ चारित्र लेइ केवल उपजायो ॥ उपशम रसनी
 वाणीरा ॥ प्रभुजी आप प्रवल बड़ भागी ॥ १ ॥ त्रिभुवन
 दौपक सागीरा ॥ प्र० ॥ आ० एआंकणी ॥ चौतीस
 अतिशय पेंचीसवाणी ॥ निरखत सुर इन्द्राणी ॥
 संवेग रसनी वाणी सांभल ॥ हर्षस्युं आंख्यां भराणीरा
 ॥ प्र० ॥ आ० ॥ २ ॥ शब्द रूप रस गंध अने स्पर्श
 प्रात कूल न हुवै तुम आगे ॥ ज्युं पंच दर्शन थास्युं पग
 नहीं मांडे ॥ तिम अशुभ शब्दादिक भागीरा ॥ प्र० ॥
 आ० ॥ ३ ॥ सुर कृत जलस्थल पुष्प पुंजवर ॥ तेछांडी
 चित दीनो ॥ तुज निश्वास सुगंध मुख परिमल मन-
 भ्रमर महालीनोरा ॥ प्र० ॥ आ० ॥ ४ ॥ पंचेन्द्री सुर
 नर तिरि तुमस्युं ॥ किम हुवै दुखदायो ॥ एकेंद्री

अनिल तजै प्रतिकूल पशुं ॥ बाजै गमती वायोरा ॥
 प्र० आ० ॥ ५ ॥ राग द्वेष दुर्दंत ते दमिया ॥ जीत्या
 विषय विकारो ॥ दीन दयाल आयो तुज शरणे ॥
 तुंगति मति दातारोरा ॥ प्र० आ० ॥ ६ ॥ सखत उग-
 णोसै आसोज तीज कृष्ण श्री मुनिमुव्रत गाथा ॥ लाडनूँ
 शहर मांछि रूढ़ी रीतें आनंद अधिको पायारा ॥ प्र०
 आ० ॥ ७ ॥

श्री नमि जिन स्तवन ।

परम गुरु पुज्यजी मुज प्यारारे ।

नमिनाथ अनाथांरानाथोरे ॥ नित्य नमण करुं-
 जाड़ी हाथोरे ॥ कर्म काटण बीर विख्यातो ॥ प्रभु
 नमिनाथजी मुजप्यारारे ॥ १ ॥ प्रभु ध्यान सुधारस
 ध्यायारे पद केवल जोड़ीपाया रे ॥ गुण उत्तम उत्तम
 आया ॥ प्र० ॥ २ ॥ प्रभु वागरी वाण विशालोरे ॥ खीर
 समुद्रथी अधिक रसालोरे ॥ जगतारक दीन दयालो ॥
 प्र० ॥ ३ ॥ थाप्या तीर्थ चार जिणंदोरे ॥ मिथ्या तिमिर
 हरणनें मुणंदोरे ॥ त्यानें सेवे सुर नर वन्दो ॥ प्र०
 ॥ ४ ॥ सुर अनुत्तर विमाणना सेवेरे प्रश्न पूछ्यां उत्तर
 जिन देवेरे ॥ अवधिग्यांन करी जाणलेवे ॥ प्र० ॥
 तिहां बैठा ते तुम ध्यान ध्यावेरे ॥ तुम योग मुद्रा
 चित्त धावेरे ॥ ते पिण आपरी भावना भावे ॥ प्र० ॥ ६ ॥

उगणीसै आसोज उदारोरे कृष्ण चौथ गाया गुण
धारोरे ॥ हुओ आनंद हर्ष आपारो ॥ प्र० ॥ ७ ॥

श्री आदिष्टनेमि जिन स्तवन ।

छिणगईरे ।

प्रभु नेमिस्वामी ॥ तुं जगनाथ अंतरजामी ॥ तुं
तीरण स्युं फिखो जिनस्वाम ॥ अद्भुत बात करी ते
अमाम ॥ प्रभु० ॥१॥ राजिमती क्हांडौ जिनराय ॥ शिव
सुन्दर स्युं प्रीत लगाय ॥ प्रभु ॥२॥ केवल पाया ध्यान
वर ध्याय ॥ इन्द्र शची निरखै हर्षाय ॥ प्र० ॥३॥ नेरिया
पिण पामें मन मोद ॥ तुज कल्याण सुर करत विनोद
प्र० ॥४॥ राग रहित शिव सुखस्युं प्रीत कर्म हगै वलि
द्वेष रहित ॥ प्र० ॥५॥ अचरिजकारी प्रभु धारोचरित्र ॥
हुं प्रणमुं कर जोड़ी नित्य ॥ प्र० ॥६॥ उगणीसै वदि
चौथ कुमार ॥ नेमि जघ्यां पाथो सुखकार ॥ प्र० ॥७॥

श्री पार्श्व जिनस्तवन ।

पूज्य भीखणजी तुमारा दर्शन ।

लोह कांचन करे पारस काचो ॥ ते कहो कर
कुण लेवे हो ॥ पारस तुं प्रभु साचो पारस । आप
समो कर देवे हो ॥ पारसदेव तुमारा दर्शन । भाग भला
सोद पावै हो ॥१॥ तुज मुख कमल पासे चमरावलि ।

चंद्र क्रान्ति वत सोहै हो ॥ हंस श्रेणि जाणै पंकज सेवै ।
 देखत जन मन मोहै हो पारस० ॥ २ ॥ फटिक
 सिंहासण सिंह आकारे । बैठ देशना देवै हो ॥ वन
 मृग आवै बाणो मुणवा । जाणके सिंह नें सेवै हो ॥
 पारस० ॥ ३ ॥ चंद्र समो तुज मुख महा शीतल । नयन
 चकोर हर्षावे हो ॥ इन्द्र नरेंद्र सुरासुर रमणी । निर-
 खत हृपति न पावै हो ॥ पारस० ॥ ४ ॥ पाखंडी
 सरागी आप निरागी । आपसमें डमगैरी हो ॥ बैर भाव
 पाखंडी राखै । पिण आप त्यांरा नहीं बैरी हो ॥
 पारस० ॥ ५ ॥ जिम सूर्य खद्योत उपरें । बैरभाव नहीं
 आणै हो ॥ प्रभु पिण दुख विधि पाखंडिया नें । खद्योत
 सरीखा जाणै हो ॥ पा० ॥ ६ ॥ परम दयाल कृपाल
 पारस प्रभु । संवत उगणीसै गाया हो ॥ आसीज कृष्ण
 तिथि चोथ लाडनूं । आनंद अधिको पाया हो ॥
 पारस० ॥ ७ ॥

श्री महावीर जिनस्तवन ।

कपिरे प्रिया संदेशो कहै ।

चरम जिनेंद्र चोवीसमा जिन । अघहणवा महा-
 बीर ॥ विकट तपवर ध्यान कर प्रभु । पाया भव जल
 तीर ॥ नहीं इसो दूसरो जगबीर ॥ उपसर्ग सहिवा
 अडिग जिनवर । सुर गिर जैम सधीर ॥ नहीं ॥ १ ॥

संगम दुःखं दिया आकरारे । पिण सुप्रसन्न निजर
 दयाल ॥ जग उद्धार हुवै मो थकीरे । ७ डूबे इण
 काल ॥ नहीं ॥ २ ॥ लोक अनार्य बहु किया रे ।
 उपसर्ग विविध प्रकार ॥ ध्यान मुधा रस लीनता जिन ।
 मन में हर्ष अपार ॥ नहीं ॥ ३ ॥ इण पर कर्म खपाय
 नें प्रभु । पाया केवल नाश ॥ उपशम रसमय वागरी
 प्रभु । अधिक अनूपम वाण ॥ नहीं ॥ ४ ॥ पुद्गल मुख
 अरि शिव तणारे । नरक तणा दातार ॥ छांड़ि रमणी
 किंपाक वेलि । संवेग संयम धार ॥ नहीं ॥ ५ ॥ निंदा
 स्तुति सम पगैरे । मान अने अपमान ॥ हर्ष शोक
 मोह परिहस्यां रे । पामै पद निर्वाण ॥ नहीं ॥ ६ ॥ इम
 बहुजन प्रभु तारिया रे प्रणमुं चरम जिनेंद ॥ उग-
 णीसै आसोज चोथ वदि । हुवो अधिक आनंद ॥
 नहीं ॥ ७ ॥

इति श्रीभीखणजी स्वामी तस्य शिष्य भारीमालजी
 स्वामी, तस्य शिष्य रिषरायचंदजी स्वामी तस्य शिष्य
 जीतमलजी स्वामी कृत चतुर्विंशति जिनस्तुति समाप्तः

॥ दुहा ॥

नमुं देव अरिहंत नित्य जिनाधिपति जिणराय ॥
 द्वादश गुण सहितजे बंदु मन बच काय ॥ १ ॥
 नमुं सिद्ध गुण अष्टयुत आचार्य मुनिराज ॥
 गुण षट तीस संयुक्तजे प्रणमुं भव दधि पाज ॥ २ ॥
 प्रणमुं फुन उवभाय प्रति गुण प्रण बीस उदार ॥
 नमुं सर्व साधु निर्मल सप्त बीस गुण धार ॥ ३ ॥
 द्वादस अठ षट तीस फुन वली प्रण बीस प्रगट ॥
 सप्त बीस ए सर्वही गुण वर इकसय अठ ॥ ४ ॥
 नोकरवाली ना जिकी मिणियां जगत मभार ॥
 एक २ जे गुण तणों एक २ मिणियोंसार ॥ ५ ॥

॥ णमोअरिहंताणं ॥

नमस्कार धावो अरिहंत भगवंनने ।

ते अरिहंत भगवंत कीहवा छै १२ बारे गुणे करी
 सहित छै ते कहै छै अनन्तो ज्ञान १ अनन्तो दर्शण २
 अनन्तो बल ३ अनन्तो सुख ४ देव ध्वनि ५ भा
 मण्डल ६ फटिक सिंघासण ७ अशोकवृक्ष ८ पुष्प
 बिष्टी ९ देव दुंदवी १० चमरबीजै ११ कृत्र
 धारे १२

॥ णमोसिद्धाणं ॥

नमस्कार थावो सिद्ध भगवंतने ।

ते सिद्ध भगवंतकेहवा कै । आठ गुणे करी सहित
कै ते कहै कै । केवल ग्यान १ केवल दर्शण २ आत्मी
क सुख ३ क्षायक समकित ४ अटल अवगाहणा ५
अमूर्तिभाव ६ अग्रलघुभाव ७ अन्तराय रहित ८

॥ णमो आयरियाणं ॥

नमस्कार थावो आचार्य महाराजने ।

ते आचार्य महाराज केहवा कै । ३६ षट तीस
गुणे करी सहित कै ते कहै कै । आरजदेश ना उपनां
१ आरज कुल ना उपनां २ जातवंत ३ रूपवंत ४
धिर संघयैण ५ धीरजवंत ६ आलोचनां दूसरा
पासे कहै नहीं ७ पोतेरा गुण पोते वर्णन न करे
८ कपटी न होवे ९ शब्दादिक पांच इन्द्री जीते
१० राग द्वेष रहित होवे ११ देश ना जाण होवे
१२ काल ना जाण होवे १३ तीक्ष्ण बुद्धि होवे १४
घणां देशांरी भाषा जाने १५ पांच आचार सहित
१६ सूत्रांरा जाण होवे १७ अर्थरा जाण होवे १८
सूत्र अर्थ दोनों रा जाण होवे १९ कपटकरी पृष्ठै तो
छलावे नहीं २० हेतुनां जाण होवे २१ कारणरा

जाण होवे २२ दिष्टान्त नां जाण होवे २३ न्यायरा
जाण होवे २४ सौख्ये समर्थ २५ प्राश्चितनां जाण
होवे २६ थिर परिवार २७ आदेज वचन बोले २८
परीषह जीते २९ समय पर समय नां जाण ३० गंभीर
होवे ३१ तेजवंत होवे ३२ पण्डित विचक्षण होवे ३३
सोम चन्द्रमांजीसा ३४ शूरवीर होवे ३५ बहु गुणी
होवे ३६

पुनः

५ पांच इन्द्री जीते ४ चार कषायटाली नववाङ्
सहित ब्रह्मचर्य पाले ५ पंच महाव्रत पाले ५ पंच
आचार पाले ग्यांन १ दर्शण २ चारित ३ तप ४ बिर्य
५ ५ पंच समिति पाले इर्या १ भाषा २ अेषणा ३
आदान भंड निक्षेपण ४ उच्चार पासवण ५ ३ तीन
गुप्ती मन १ वचन २ कायगुप्ती ३

इति षट् तीस गुण संपूर्ण ।

॥ णमोउवज्झायाणं ॥

नमस्कार थावो उप्पाध्याय महाराजने ।

ते उप्पाध्याय महाराज कीहवा कै २५ पचवीस
गुणे करी सहित कै ते कहे छै । १४ चवदे पूरब ११
इग्यारे अंग भणे भणावे ।

पुनः

११ इग्यारे अंग १२ वारे उपांग भणे भणावे ।

॥ णमोलोएसव्वसाहुणं ॥

नमस्कार थावो लोकने विप्रै सर्वं साधु मु'निराजींने ।

ते साधु मुनिराज केहवा कै सप्तवीस गुणै करी सहित कै ते कहैकै । ५ पंच महाव्रत पाले ५ इंद्रि जीते ४ च्यार कषाय टाले भाव संचैय १५ करण संचैय १६ जोग संचैय १७ क्षम्यावंत १८ वैराग्यवंत १९ मनसमांधारणीया २० वचन समांधारणी या २१ कायसमांधारणीया २२ नांगसंपणा २३ दर्शन संपना २४ चारित्र संपना २५ वैदनी आयां समो अहियासे २६ मरणआयां समो अहियासे २७ ॥

इति संपूर्णम् ।

सामायक लेणेकी पाटी ।

करेमि भन्ते सामायियं सावज्जं जोगं ।

पच्चखामि जाव नियम (सुहर्त एक) पज्जवा-
सामी दुविहिं तिविहेणं नकरेमी नकारवेमी मनसा
वायसा कायसा तस्स भन्ते पडिक्कमामि निंदामि
गरिहामि अप्पाणं वोसरामि ॥

सामायिक पारणेकी पाटी ।

नवमा सामायिक व्रतनें विधिं ज्यो कोई
अतिचार दोष लागोहुवे ते आलोउं १ सामायिक
में सुमता नकिधी बिकथाकिधी हुवे अणपूरी
पारी होय पारवो बिसाखो होय मन बचन कायाका
जोग माठा परिवरताया होय सामायिकमें राज कथा
देशकथा स्त्रीकथा भक्तकथा करी होय तस्स मिच्छामि
दुक्कडं ।

अथ तिख्खुताको पाटी ।

तिक्खुतो अयाहिणं पयाहिणं वंदामि नमसामि
सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देइयं चेइयं पज्झु
वासामि मत्थएण वंदामी ।

॥ अथ पंच पद बंदणा ॥

पहिले पदे श्री सीमंधर स्वामी आदि देई जघन्य
२० (बीस) तीर्थंकर देवाधिदेवजो उत्कृष्टो १६०
(एकसो साठ) तीर्थंकर देवाधिदेवजो पंचमाहाविदेह
क्षेत्रांकी विधि बिचरेछै अनन्त ज्ञानका धणी अनंत
दर्शनका धणी अनन्त चारित्रिका धणी अनन्त बल
का धणी एक हजार आठ लक्षणाका धारणहार

चौसठ इन्द्राका पूजनीक चौतीस अतिशय प तीस बाणी द्वादश गुण सहित विराजमान है ज्यां अरि-हन्ता से मांहरौ वंदना तिखुताका पाठसे मालुम होज्यो ।

दूजे पदे अनन्ता सिद्ध पंनरा भेदे अनन्ती चोवीसी आठ कर्म खपायनें सिद्ध भगवान मोक्ष पहुँता तिहां जनम नहीं जरा नहीं रोग नहीं सोग नहीं मरण नहीं भय नहीं संयोग नहीं वियोग नहीं दुःख नहीं दारिद्र नहीं फिर पाछा गर्भावासमें आवे नहीं सदा काल शाश्वता सुखामें विराजमान है इसा उत्तम सिद्ध भगवंतासें मांहरौ वंदना तिखुताका पाठसें मालुम होज्यो ।

तीजे पदे जघन्य दीय कोड़ केवली उत्कृष्टा नव कोड़ केवली पञ्चमाहविदेह जेतामें विचरे है केवल ज्ञान केवल दर्शनका धारक लोकालोक प्रकाशक सर्व द्रव्य जेत काल भाव जागें देखे है ज्यां केवलीजी से मांहरौ वन्दना तिखुताका पाठसें मालुम होज्यो ॥

चौथे पदे गणधरजी आचार्यजी उपाध्यायजी स्थवि रजी तेगणधरजी महाराज केहवा है अनेक गुणे करी विराजमान है आचार्यजी महाराज केहवा है षट तीस गुणे करी विराजमान है उपाध्यायजी महाराज केहवा-

कै पचवीसगुणे करी बिराजमान कै स्थविरजी महाराज
 कहवा कै धर्मसें डिगता हुवा प्राणीनें थिरकरी राखे
 शुद्ध आचार पाले पलावे ज्यां उत्तम पुरुषां से मांहरी
 बन्दना तिखुताका पाठसें मालुम होज्यो ।

पञ्चमें पदे मांहारा धर्म आचारज गुरु पूज्य श्री
 श्रीश्री १००८ श्रीश्रीकालूरामजी स्वामी (वर्तमान
 आचारजकी नांव लेणो) आदि जघन्य दोय हजार
 कोड़ साधु साध्वी जाभेरा उत्कृष्टा नवहजार कोड़
 साधु साध्वी अढ़ाई द्वीप पन्दरे खेचांमें बिचरे कै ते
 महा उत्तम पुरुष कहवा कै पञ्च महाव्रतका पालण-
 हार कव कायानां पीयर पञ्च समिति सुमता तीन
 गुप्ती गुप्ता नवबाड़सहित ब्रह्मचर्य्यका पालक-दशवि-
 धि यतिधर्मका धारक बारे भेदे तपस्याका करणहार
 सतरे भेदे संजमका पालणहार बावीस परीसहका
 जीतणहार सताबोस गुणे करी संयुक्त बयालीस दोष
 टाल आहार पांणीका लेवणहार बावन अणाचारका
 टालणहार निरलोभी निरलालचौ संसार नां त्यागी
 मोक्षनां अभिलाषी संसारसें पूठा मोक्षसे सहामा
 सचित्तका त्यागी अचित्तका भोगी अस्वादी त्यागी
 बैरागी तेड़ीया आवै नहीं नोंतीया जीमें नहीं मोलकी
 वस्तु लेवे नहीं कनककामणीसें न्यारा बायरानी

परं अप्रतिबन्ध विहारी इसा माहापुरुषांसं मांहरी
बन्दना तिख्खुताका पाठसें मालूम होज्यो

॥ अथ पच्चीस बोले ॥

१ पहिले बोले गति चार ४

नर्कगति १ तिर्यंचगति २ मनुष्यगति ३ देवगति ४

२ दूजे बोले जातिपांच ५

एकेन्द्री १ वेइन्द्री २ तेइन्द्री ३ चोइन्द्री ४ पंचेद्री ५

३ तीजे बोले काया छव

पृथ्वीकाय १ अप्पकाय २ तेउकाय ३ वाउकाय

४ वनस्पतिकाय ५ तसकाय ६

४ चौथे बोले इन्द्री पांच

श्रोतइन्द्री १ चक्षू इन्द्री २ घ्राणइन्द्री ३ रस-

इन्द्री ४ स्पर्शइन्द्री ५

५ पांचमें बोले पर्याय छव ६

आहारपर्याय १ शरीरपर्याय २ इन्द्रीय पर्याय

३ शासोऽवासपर्याय ४ भाषापर्याय ५ मनपर्याय ६

६ छठे बोले प्राण १०

श्रोतेद्री वलप्राण १ चक्षू इन्द्री वलप्राण २ घ्राण

इन्द्री वलप्राण ३ रसेन्द्री वलप्राण ४ स्पर्शइन्द्री

वलप्राण ५ मनवलप्राण ६ वचनवलप्राण ७ काया

बलप्राण ८ शासोष्वासबलप्राण ९ आउषोबलप्राण १०

७ सातमें बोले शरीर पांच ५

औदारिक शरीर १ बैक्रियशरीर २ आहारिक शरीर ३ तैजसशरीर ४ कार्मणशरीर ५

८ आठवें बोले जोग पंद्राह १५

४ चारमनका

सत्यमनजोग १ असत्यमनजोग २ मिश्रमनजोग ३ व्यवहारमनजोग ४

४ चारवचनका

सत्यभाषा १ असत्यभाषा २ मिश्रभाषा ३ व्यवहार भाषा ४

७ सातकायाका

औदारिक १ औदारिक मिश्र २ बैक्रिय ३ बैक्रिय मिश्र ४ आहारिक ५ आहारिक मिश्र ६ कार्मण जोग ७

९ नवमें बोले उपयोग बारह १२

५ पांच ज्ञान

मतिज्ञान १ श्रुतिज्ञान २ अवधिज्ञान ३ मन पर्यवज्ञान ४ केवलज्ञान ५

३ तीन अज्ञान

मतिअज्ञान १ श्रुतिअज्ञान २ विभंगअज्ञान ३

४ चारदर्शण

चक्षुदर्शण १ अचक्षुदर्शण २ अवधिदर्शण ३
केवल दर्शण ४

१० दशमें बोले कर्म आठ ८

ज्ञानावर्णी कर्म १ दर्शणावर्णी कर्म २ वेदनी
कर्म ३ मोहणी कर्म ४ आयुष्य कर्म ५ नामकर्म ६
गोत्रकर्म ७ अंतरायकर्म ८

११ इग्यारमें बोले गुण स्थान चौदाह १४

१ पहिलो मिथ्याती गुणस्थान ।

२ दूजो सादस्वादान समदृष्टि गुणस्थान ।

३ तीजो मिश्र गुणस्थान ।

४ चौथो अव्रती समदृष्टि गुणस्थान ।

५ पांचमो देशविरती श्रावक गुणस्थान ।

६ छटो प्रमादी साधु गुणस्थान ।

७ सातवों अप्रमादी साधु गुणस्थान ।

८ आठवों नियट वादर गुणस्थान ।

९ नवमो अनियट वादर गुणस्थान ।

१० दसमो सुक्षम संप्राय गुणस्थान ।

११ इग्यारमूं उपशान्ति मोह गुणस्थान ।

१२ बारमूं क्षीण मोहनी गुणस्थान ।

१३ तेरमूं संयोगी केवली गुणस्थान ।

१४ चौदमं अयोगी केवली गुणस्थान ।

१२ बारमें बोले पांच इन्द्रियांकी तेबीस विषय
श्रोतइन्द्रीकी तीन विषय

जीव शब्द १ अजीव शब्द २ मिश्र शब्द ३
चक्षू इन्द्रीकी पांच विषय

कालो १ पौलो २ धोलो ३ रातो ४ लीलो ५
घ्राण इन्द्रीकी दोय विषय

सुगंध १ दुर्गन्ध २
रस इन्द्रीकी पांच विषय

खटो १ मीठो २ कड़वो ३ कसायलो ४ तीखो ५
स्पर्श इन्द्रीकी आठ विषय

हलको १ भारी २ खरदरो ३ सुहालो ४ लूखो ५
चोपड्यो ६ ठंडो ७ उन्ही ८

१३ तेरमें बोले दश प्रकारका मिथ्याती ।

१ जीवनें अजीव सरदह ते मिथ्याती

२ अजीवनें जीव सरदह ते मिथ्याती

३ धर्मनें अधर्म सरदह ते मिथ्याती

४ अधर्मनें धर्म सरदह ते मिथ्याती

५ साधुनें असाधु सरदह ते मिथ्याती

६ असाधुनें साधु सरदह ते मिथ्याती

७ मार्गनें कुमार्ग सरदह ते मिथ्याती

८ कुमार्गनें मार्ग सरदह ते मिथ्याती

९ मोक्षगयांनें अमोक्षगया सरदह ते मिथ्याती

१० अमोक्षगयांनें मोक्षगया सरदह ते मिथ्याती

१४ चौदमें बोले नवतत्वको जाण पणों तीका

११५ एकसो पन्दराह बोल

१४ चौदाह जीवका—

सुक्ष्म एकेन्द्रीका दोय भेदः—

१ पहिलो अपर्याप्तो २ दूसरो पर्याप्तो

वाटर एकेन्द्रीका दोय भेदः—

३ तीजो अपर्याप्तो ४ चौथो पर्याप्तो

वेद्वन्द्री का दोय भेदः—

५ पांचमूं अपर्याप्तो ६ छट्टो पर्याप्तो

तेद्वन्द्रीका दोय भेदः—

७ सातमूं अपर्याप्तो ८ आठमूं पर्याप्तो

चोद्वन्द्रीका दोय भेदः—

९ नवमूं अपर्याप्तो १० दशमूं पर्याप्तो

असन्नी पंचेन्द्रीका दोय भेदः—

११ द्वादशमूं अपर्याप्तो १२ बारमूं पर्याप्तो

सन्नी पंचेन्द्रीका दोय भेदः—

१३ तेरमूं अपर्याप्तो १४ चौदमूं पर्याप्तो

१४ चौदे अजीवका भेदः—

धर्मास्ति कायका ३ तीन भेदः—

खंध, देश, प्रदेश,

अधर्मास्ति कायका ३ तीन भेदः—

खंध, देश, प्रदेश,

आकाशास्ति कायका ३ तीन भेदः—

खंध, देश, प्रदेश,

कालको दशमूं भेद (ए दश भेद अरूपीछै)

पुद्गलोस्ति कायका ४ च्यार भेदः—

खंध, देश, प्रदेश, परमाणु

६ पुन्य नव प्रकारे

अन्नपुन्य १ पाणपुन्य २ लैणपुन्य ३ सयणपुन्य ४
बत्थपुन्य ५ मनपुन्य ६ वचनपुन्य ७ कायोपुन्य ८
नमस्कारपुन्य ९

१८ पाप अठारे प्रकार :—

प्राणातिपात १ मृषावाद २ अदत्तान ३
मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ८ लोभ ९
राग १० द्वेष ११ कलह १२ अभ्याख्यान १३ पैशुन्य १४
परपरिवाद १५ रतिअरति १६ मायामृषा १७
मिथ्यादर्शन शल्य १८

* लैण=जागां जमीनादिक

* सयन=पाट वाजोटा दिक

* वाद=बोलना

* पैशुन्य=चुगली

२० बीस आस्रवकाः—

मिथ्यात्व आस्रव १ अव्रत आस्रव २ प्रमाद
आस्रव ३ कषाय आस्रव ४ जोग आस्रव ५
प्राणातिपात जीवकी हिंसा करते आस्रव ६
मृषावाद झूठ बोलते आस्रव ७ अदत्तादान चोरी
करते आस्रव ८ मैथुन सेवे ते आस्रव ९ परिग्रह
राखे ते आस्रव १० श्रुत इन्द्रो मोकली मेलते
आस्रव ११ चक्षु इन्द्रो मोकली मेलते आस्रव १२
घ्राण इन्द्रो मोकली मेलते आस्रव १३ रस इन्द्रो
मोकली मेलते आस्रव १४ स्पर्श इन्द्रो मोकली
मेलते आस्रव १५ मनप्रवर्तावे ते आस्रव १६
वचनप्रवर्ताविते आस्रव १७ कायाप्रवर्तावे ते
आस्रव १८ भण्डोपगरणमेलताञ्जयणाकरै ॐ ते
आस्रव १९ सुई कुसाग्रमात्र सेवे ते आस्रव २०

२० बीस संवरकाः—

सम्यक् ते संवर १ व्रत ते संवर २ अप्रमाद ते
संवर ३ अकषाय संवर ४ अजाग संवर ५
प्राणातिपात न करे ते संवर ६ मृषावाद न बोले
ते संवर ७ चोरी न करे ते संवर ८ मैथुन न
सेवे ते संवर ९ परिग्रह न राखे ते संवर १०

श्रुत इन्द्री बशकरे ते संवर ११ चक्षु इन्द्री बशकरे
 ते संवर १२ घ्राण इन्द्री बशकरे ते संवर १३
 रसेन्द्री बशकरे ते संवर १४ स्पर्श इन्द्री बशकरे
 ते संवर १५ मन बशकरे ते संवर १६ वचन
 बशकरे ते संवर १७ काया बशकरे ते संवर १८
 भण्ड उपकरणमेलतां अजयणानकरे ते संवर १९
 सुई कुसाग्र न सेवे ते संवर २०

१२ निरजरा बारै प्रकारे:—

अणसण* १ उणोदरी* २ भिक्षाचरी ३ रसपरि-
 त्याग ४ कायाक्लेश ५ प्रतिसंलेषना ६ प्रायश्चित्त
 ७ विनय ८ वैयावच्च ९ सिज्झाय १० ध्यान
 ११ बिउसग* १२

४ बंध चार प्रकारे:—

प्रकृतिबंध १ स्थितिबंध २ अनुभागबन्ध ३
 प्रदेशबन्ध ४

४ मोक्ष चार प्रकारे:—

ज्ञान १ दर्शण २ चारित्र्य ३ तप ४

१५ पंदरमें बोले आत्मा आठ:—

* अससण=उपवासादिक ।

* उणोदरी=कमखानां ।

* बिउसग=निवर्तवो ।

द्रव्य आत्मा १ कषाय आत्मा २ योग आत्मा ३
उपयोग आत्मा ४ ज्ञान आत्मा ५ दर्शण
आत्मा ६ चारित्र्य आत्मा ७ वीर्य आत्मा ८

१६ सोलमें बोले दंडक चोबीस २४ :—

१ सातमारकीयांको एक दंडक

१० दशदंडक भवनपतिका :—

अमुर कुमार १ नाग कुमार २ सोवन कुमार २
विद्युत कुमार ४ अग्नि कुमार ५ दीपकुमार ६
उदधि कुमार ७ दिसा कुमार ८ वायु कुमार ९
स्तनित कुमार १०

५ पांचधावरका पंच दंडक :—

पृथ्वीकाय १ अप्पकाय २ तेउकाय ३ वायुकाय
४ वनस्पतिकाय ५

१ वेङ्गुद्री को सतरमों

१ तेङ्गुद्री को अठारमों

१ चौङ्गुद्रीको उगणीसमो

१ तिर्यञ्च पंचेंद्री को बीसमों

१ मनुष्य पंचेंद्री को इकवीसमों

१ वानव्यंतर देवतांको बावीसमों

१ ज्योतषी देवतांको तेवीसमों

१ वैमानिक देवतांको चौबीसमो

१७ सतरवें बोले लेख्या छः ६ :—

कृष्ण लेख्या १ नील लेख्या २ कापोत लेख्या ३
तेजुलेख्या ४ पद्म लेख्या ५ शुक्ल लेख्या ६

१८ अठारमें बोले दृष्टि ३ तीन :—

सम्यक् दृष्टि १ मित्या दृष्टि २ सममिथ्या
दृष्टि ३

१९ उगणीसमें बोले ध्यान ४ चार :—

पार्तध्यान १ रौद्रध्यान २ धर्मध्यान ३ शुक्लध्यान ४

२० बीसमें बोले षट् द्रव्यको जांण पबो

धर्मास्तिकायने पांचा बोलां बोलखीजे :—

द्रव्ययकी एक द्रव्य खेवयी लोक प्रमाचे काल
यकी आदि अन्त रहित भावयी अरूपी गुणय-
की जीव पुद्गलने हालवा चालवाको साक्ष,

अधर्मास्तिकायने पांचा बोलां बोलखीजे :—

द्रव्ययी एक द्रव्य खेवयी लोकप्रमाचे काल
यकी आदि अन्त रहित भावयी अरूपी गुणयी
धिररहवानों साक्ष, आकाशास्तिकायने पांच

बोलकरी बोलखीजे :—द्रव्ययी एक द्रव्य

खेवयी लोक अलोक प्रमाचे कालयी आदि

अन्त रहित भावयी अरूपी गुणयी भाजन गुण

कालने पांचा बोलां करी बोलखीजे :—द्रव्ययी

अनन्ता द्रव्य खेचथी अढ़ाई द्वीप प्रमाणे
 कालथी आदि अन्त रहित भावथी अरूपी
 गुणथी वर्त्तमानगुण पुद्गलास्तिकायनें पांच
 बोलकरी ओलखीजे:—द्रव्यथी अनन्ता द्रव्य
 खेचथी लोक प्रमाणे कालथी आदि अन्त
 रहित भावथी रूपी गुणथी गले मले, जीवा-
 स्तिकायनें पांच बोल करी ओलखीजे:—द्रव्यथी
 अनन्ता द्रव्य खेचथी लोक प्रमाणे कालथी
 आदि अन्त रहित भावथी अरूपी गुणथी
 चैतन्य गुण ।

२१ इकवीसमें बोले राशि २ दोय:—

जीवराशि १ अजीवराशि २

२२ बावीसमें बोले श्रावक का १२ वारे व्रत:—

१ पहिला व्रतमें श्रावक स्थावर जीव हणवाको
 प्रमाण करे और चस जीव हलंतो चालतो
 हणवाका सउपयोग त्याग करे ।

२ दूसरा व्रतमें मोटकी भूठ बोलवाका सउप-
 योग त्याग करे ।

३ तीजा व्रतमें श्रावक राजडण्डे लोकभण्डे
 इसी मोटकी चोरी करवाका त्याग करे ।

४ चौथा ब्रतमें श्रावक मर्यादा उपरांत मैथुन सेवा त्याग करे ।

५ पांचमां ब्रतमें श्रावक मर्यादा उपरांत परिग्रह राखवाका त्याग करे ।

६ छठ्ठा ब्रतकी विषै श्रावक दशों दिशिमें मर्यादा उपरान्त जावाका त्याग करे ।

७ सातवां ब्रतकी विषै श्रावक उपभोग, परिभोग का बोल २६ छाबीस छै जिणारी मर्यादा उपरांत त्याग करे तथा पन्द्रह कर्मादानकी मर्यादा उपरांत त्याग करे ।

८ आठमा ब्रतकी विषै श्रावक मर्यादा उपरांत अनर्थ दण्डका त्याग करे ।

९ नवमां ब्रतकी विषै श्रावक सामायककी मर्यादा करे ।

१० दशमां ब्रतकी विषै श्रावक देसावगासी संब-
रकी मर्यादा करे ।

११ इगारमूं ब्रत श्रावक पोसह करे ।

१२ बारमूं ब्रत श्रावक सुध साधु निर्गन्धनें निर्दोष आहार पाणी आदि चउदे प्रकार दान देवे ।

२३ तेबीसमें बोले साधुजीका मंच महाव्रतः—

१ पहिला महाव्रतमें साधुजी सर्वथा प्रकारे जीव हिंसा करे नहीं करावे नहीं करतामें भलो जाणे नहीं मनसे वचनसे कायासे ।

२ दूसरा महाव्रतमें साधुजी सर्वथा प्रकार भूठ बोले नहीं बोलावे नहीं बोलतां प्रति भलो जाणे नहीं मनसे वचनसे कायासे ।

३ तीजा महा व्रतमें साधुजी सर्वथा प्रकारे चोरी करे नहीं करावे नहीं करतां प्रति भलो जाणे नहीं मनसे वचनसे कायासे ।

४ चौथा महा व्रतमें साधुजी सर्वथा प्रकारे मैथुन सेव नहीं सेवावे नहीं सेवतां प्रति भलो जाणे नहीं मनसे वचनसे कायासे ।

५ पंचमां महा व्रतमें साधुजी सर्वथा प्रकारे परियह राखे नहीं रखावे नहीं राखतां प्रति भलो जाणे नहीं मनसे वचनसे कायासे ।

२४ चौदावसेमें बोले भांगा ४६ गुणवासः—

करण ३ तीन जोग ३ तीनसें हुवे ।

करण ३ तीनका नाम—करुं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं, नहीं जोग ३ तीनका नाम—मनसा, वायसा कायसा ।

आंक ११ इग्यारेको भांगा ६ :—

एक करण एक जोगसें कहणां, कहुं नहीं मनसा, कहुं नहीं बायसा, कहुं नहीं कायसा, कराजं नहीं मनसा, कराजं नहीं बायसा, कराजं नहीं कायसा, अनुमोटू नहीं मनसा, अनुमोटू नहीं बायसा, अनुमोटू नहीं कायसा ।

आंक १२ बाराको भांगा ६ :—

एक करण दोय जोगसें, कहुं नहीं मनसा बायसा, कहुं नहीं मनसा कायसा, कहुं नहीं बायसा कायसा, कराजं नहीं मनसा बायसा, कराजं नहीं मनसा कायसा, कराजं नहीं बायसा कायसा, अनुमोटू नहीं मनसा बायसा, अनुमोटू नहीं मनसा कायसा, अनुमोटू नहीं बायसा कायसा ।

आंक १३ तेराको भांगा ३ तीन :—

एक करण तीन जोगसें, कहुं नहीं मनसा बायसा कायसा, कराजं नहीं मनसा बायसा कायसा, अनुमोटू नहीं मनसा बायसा कायसा ।

आंक २१ को भांगा ६ :—

दोय करण एक जोगसें, कहुं नहीं कराजं नहीं मनसा, कहुं नहीं कराजं नहीं बायसा कहुं नहीं

कराजं नहीं कायसा, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा,
 करूं नहीं अनुमोदूं नहीं वायसा, करूं नहीं अनुमोदूं
 नहीं कायसा, कराजं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा
 कराजं नहीं अनुमोदूं नहीं वायसा, कराजं नहीं
 अनुमोदूं नहीं कायसा ।

आंक २२ बावीसको भांगा ६ नव :—

दोय करण दोय जोगमें, करूं नहीं कराजं नहीं
 मनसा वायसा, करूं नहीं कराजं नहीं मनसा काय-
 सा, करूं नहीं कराजं नहीं वायसा कायसा, करूं
 नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा करूं नहीं अनु-
 मोदूं नहीं मनसा कायसा, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं
 वायसा कायसा, कराजं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा
 वायसा, कराजं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा,
 कराजं नहीं अनुमोदूं नहीं वायसा कायसा ।

आंक २३ तीसको भांगा ३ तीन :—

दोय करण तीन जोगमें करूं नहीं कराजं
 नहीं मनसा वायसा कायसा, करूं नहीं अनुमोदूं
 नहीं मनसा वायसा कायसा, कराजं नहीं अनुमोदूं
 नहीं मनसा वायसा कायसा ।

आंक ३१ इकतीसको भांगा ३ तीन :—

तीन कर्णएक जोगमें, करूं नहीं कराजं नहीं

अनुमोदूँ नहीं मनसा, करूँ नहीं कराज्जं नहीं अनु-
मोदूँ नहीं बायसा, कायसा ।

आंक ३२ बत्तीसको भांगा ३ तीन :—

तीन करण दोय जोगसें, करूँ नहीं कराज्जं नहीं
अनुमोदूँ नहीं मनसा बायसा, करूँ नहीं कराज्जं
नहीं अनुमोदूँ नहीं मनसा कायसा, करूँ नहीं
कराज्जं नहीं अनुमोदूँ नहीं बायसा कायसा ।

आंक ३३ तैतीसको भांगो १ एक :—

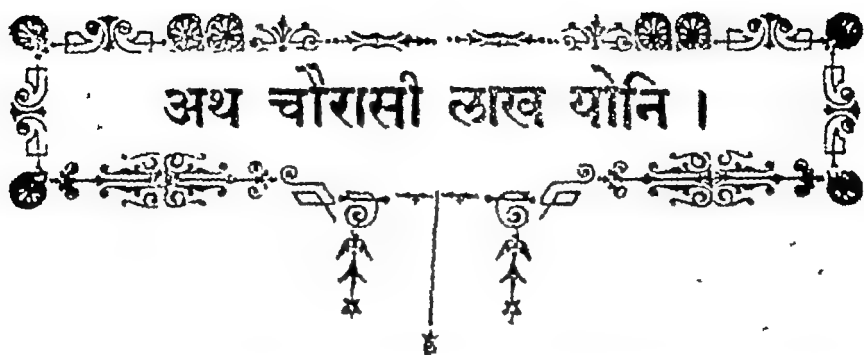
तीन करण तीन जोगसें, करूँ नहीं कराज्जं नहीं
अनुमोदूँ नहीं मनसा बायसा कायसा ।

२५ पचीसमें बोले चारित्र पांच :—

सामायक चारित्र १ छेदोपस्थापनीय चारित्र २
पडिहार विशुद्ध चारित्र ३ सूक्ष्म सांपराय चारित्र
४ यथाज्ञात चारित्र ५

॥ इति पच्चीस बोल सम्पूर्णम् ॥





७ सात लाख पृथ्वीकाय ७ सात लाख अप्पकाय
 ७ सात लाख वायुकाय ७ सात लाख तेउकाय १०
 दसलाख प्रत्येक वनस्पतिकाय १४ चौदे लाख साधा
 रण वनस्पतिकाय २ दोय लाख वेंद्री २ दोय लाख
 तेंद्री २ दोय लाख चौद'द्री ४ च्यार लाख नारकी ४
 च्यार लाख देवता ४ च्यार लाख तिर्य'च पंचेंद्री १४
 चौदे लाख मनुषकी जाति एवं च्यार गति चौरासी
 लाख जीवा योनि सें बारम्बार खमत खामना ।

॥ अथ श्रद्धा उपर सद्भाय ॥

देशो चारसी की ।

देव गुरु धर्म शुद्ध चाराध्यां । समंकित होवे
 तंत सारसी ॥ यथा तथ्य दिल मांहि दरसावे । जिम
 मुख देखे चारसी ॥ श्रद्धा विन प्राणी खेलो लजम

यँही हारसी ॥ श्रद्धा ॥ १ ॥ बरस कवमासी तप
 बहु कौधा । जघन्य पद नवकारसी ॥ सुर सुख
 भोग रुख्यो चिहुं गतमें । नहीं आयो धर्म विचारसी
 ॥ श्रद्धा ॥ २ ॥ संका कांक्षा दुरगति लेज्यावे ।
 ते नर दूर निवारसी ॥ साची श्रद्धा जे नर धारे ।
 ते नर आतम तारसी ॥ श्रद्धा ॥ ४ ॥ कुगुरु संगत
 नर भव हारौ । दुरगत मांय पधारसी ॥ भव भव
 मांहि रुले चिहुं गतमे । नहीं हुवे कुटकारसी ।
 श्रद्धा ॥ ५ ॥ पढ़ पढ़ पोथा रह गया थोथा । संस्कृतने
 फारसी । बिना विचारी खोटी भाषा बोले ।
 ते किम पार उतारसी ॥ श्रद्धा ॥ ६ ॥ शुद्ध साधाने
 आल देइने । डूब गया काली धारसी ॥ कोई शुद्ध
 साधारौ कीर्ति बोले । ते नर जन्म सुधारसी ॥ श्रद्धा
 ॥ ७ ॥ शुद्ध साधारी निन्दा कर कर आतम केम
 उबारसी ॥ नरकां जावे महा दुःख पावे । परमा
 धामी .मारसो ॥ श्रद्धा ॥ ८ ॥ इस सांभल उत्तम
 नरनारी । सीख सतगुरु की धारसी ॥ शुद्ध साधारी
 कर कर सेवा । आतम कारज सारसी ॥ श्रद्धा ॥ ९ ॥
 शुद्ध साधारी सुधी श्रद्धा तसला नन्दण सारसी ॥
 सुधी श्रद्धास्युं शिवगत जायां । आवागमन निवा-
 रसी ॥ श्रद्धा ॥ १० ॥ शुद्ध श्रावकरा व्रतज पालो ।

गत दुःख विडारसौ ॥ जन्म मरण जोख मिट
 पावे । पावे सुख अपारसौ ॥ श्रद्धा ॥ ११ ॥ मत्सर
 भाव साधांसुं राखे । वेगोद पुन्य परवारसौ ॥ दूण
 भव सांहि निजरा देखो । बिटला हुवे विकारसौ ॥
 श्रद्धा ॥ १२ ॥ गुण विना सेवा करे साधारौ । नहां
 सरे गरज लिगारसौ ॥ कोद होंग आचारी आपही
 डूवे । तिहां तुज केस निस्तारसौ ॥ श्रद्धा ॥ १३ ॥
 सुर सुख सेवै जे नर पावै । तप कर देही गारसौ ॥
 पंच आश्रव परहरो प्राणी । ममता मनरो मारसौ ॥
 श्रद्धा ॥ १४ ॥ तिछा तिरे ने तिरसी वाला । नही
 करे पाप लिगारसौ ॥ उत्तम वयण धर शिर ऊपर ।
 ते उतरे भव पारसौ ॥ श्रद्धा ॥ १५ ॥ उगणीसे
 बीस विद चवदस । मास कातिक सुख कारसौ ॥
 शहर राजगढ़ द्विपमालका जोड़ करौ तंत सारसौ ॥
 श्रद्धा ॥ १६ ॥

✽ तेरापंथ ओलखणां की ढाल ✽

आप हणें नहीं प्राणकूं, नहीं कहिनें हणावें हो,
 हणतानें भलो न चिन्तवै, ऐसी दया पलावै हो
 सोही तेरापंथ पावै हो ॥ १ ॥ के तो मूंन ग्रहीर

है, के निर्वंद्य गावैहो, सावभ काम संसरका, तैतो
 चित्तमें न चावै हो ॥ सो ॥ २ ॥ जाच्यां बिन
 एक लङ्कलो, करसूं नांहि उठावै हो, भोगतज्या
 भामण तणां, मांठी नजर न ल्यावै हो ॥ सो ॥ ३ ॥
 रत्न अने कवडौ भणौं, जहीं राखें रखावै हो, जे जे
 उपग्रण जिण कछ्हा, तिणसूं अधिक न ल्यावै हो ॥
 सो ॥ ४ ॥ - पंच महाव्रत पालता, नव विध शौल
 मलावै हो, सुमति गुप्त बारह भेदसूं, पूरव, कामं
 खपावै हो, ॥ सो ॥ ५ ॥ संजम सतरह भेद सूं, रु-
 डीगीत निर्भावि हो, परिशह आयां संयाममें, सूरा
 जिस साहमा ध्यावै हो ॥ सो ॥ ६ ॥ अनाचार
 बावन तजे, गुण सत्ताबौस पावै हो, दोष बयां-
 लिस टालके, असणादिक ल्यावै हो ॥ सो ॥ ७ ॥
 काज कनामत कार्ये, तिणदिशि नहीं ध्यावै हो,
 ताक २ तैगपंथी, ताजा घर नहीं जावै हो ॥ सो
 ॥ ८ ॥ निन्दत क्कदत ज्यो कोर्डे, तिणसूं नांही
 रिसावै हो, कोर्डेकेदातादानको, तिणसूं राग न
 ल्यावै हो ॥ सो ॥ ९ ॥ कमल कादासें दूर रहै,
 जिस जगमें नांहि लिपावै हो, यापी धानक छांड
 नें, बासा दूर दिरावै हो ॥ सो ॥ १० ॥ हिन्सा
 धर्म उडायन, दया धर्म दिपावै हो, जिहां २ कै

जिननौ आग्न्या, तिणमें धर्म बतावै हो ॥ सो
 ॥ ११ ॥ सूत्तरमें जिन भाषियो, तेहियो दान दि-
 रावै हो, दान कुपातरनें दीयां, देता आडा न आवै
 हो ॥ सो ॥ १२ ॥ वरजणों तो जिहां हो रह्यो
 मुनि बहिरण जावै हो, देखत सुगत फकीर कों,
 तो पाछाफिर आवै हो, ॥ सो ॥ १३ ॥ नव तत्व
 निर्णय नित करै, समकित नें सरधावै हो, मुक्ति
 नगर मुसकिल घणों, तिणरो मार्ग बतावै हो
 ॥ सो ॥ १४ ॥ तेरा वचन विमासनें सूत्तर सौख
 सौखावै हो, तिण वयणांसूं भर्तमे, भवियण को
 चलावै हो ॥ सो ॥ १५ ॥ आपै समकित औषधी,
 वेदे भोजन पचावै हो, तेरापंथी वैद ज्यों, धर्म भोजन
 रुचावै हो ॥ सो ॥ १६ ॥ मैल खोट प्रते काढ़वा,
 सोनो सोनो तावै हो, ज्यूं तेरापंथी परखीया, हृदय
 न्याय ल्यावै हो ॥ सो ॥ १७ ॥ तेरापंथ ओलख्यां
 पाछे टूजो दाय न आवै हो, अमृत भोजन जीसियां
 कृकस कुणखावे हो ॥ सो ॥ १८ ॥ कहै कथादि-
 वारता, सूत्तर सें मिलावै हो, तुज वचनांसि नहीं
 मिले ताकूं तुरत उडावै हो ॥ सो ॥ १९ ॥ सूत्र
 न्याये पाखंडभणों, भीखनजी ओलखावै हो, तेरापंथ
 ते धारियो, दया धर्म बतावै हो ॥ सो ॥ २० ॥

મીઁનજી તેરાપંથી, તિણમેં યે ગુણપાવે હો, પ્રભૂ તેરા-
પંથરા, શોભો ગુણ ગાવે હો ॥ સો ॥ ૨૧ ॥

અથ શ્રી સોલહ સતીનો સ્તવન

આદિનાથ આદિ જિનવર બંદી, સફલ મનોરથ
કોઝિયે પ્રભાતે ઉઠિ મંગલિક કામે, સોલહ સતીના
નામ લોઝિયે ॥ ૧ ॥ બાલકુમારી જગ હિતકારી,
બ્રાહ્મી મંરતની બહેનડી ॥ ઘટ ઘટ વ્યાપક અક્ષર
રૂપે, સોલહ સતી માંહિ જે બહી ॥ ૨ ॥ બાહુ બલ
મગિની સતિય શિરોમણિ, સુંદરિ નામે ઋષભ સુતા ॥
અંક સ્વરૂપી ત્રિમવન માંહિ જેહ અનોપમ ગુણ જુતા ॥
૩ ॥ ચન્દનવાલા બાલપણેથી, શીયલવંતી શુદ્ધ શ્રાવિ-
કા ॥ ઉડ્ડના બાકુલા બીર પ્રતિલામ્યા, કીવલ લહી
વ્રત ભાવિકા ॥ ૪ ॥ ઉગસેન ધુઆ ધારિણી નન્દની,
રાજેસતી નેમ બલ્લભા ॥ જીવન વેશે કામ નં જાલ્યો
સંયમ લેઢ દેવ દુલ્લભા ॥ ૫ ॥ પંચ મરતારી પ્રાંડવ
નારાં, દ્રુપદ તનયા વચ્ચાણિયે ॥ એકસો આઠે ચીર

पूरणा श्रीयल सहसा तस जाणिए ॥ ६ ॥ - दशम्य
 वृपनी नारी निरुपम, कौशल्या कुल चन्द्रिका ॥
 श्रीयल मल्गौ राम जनेता, पुन्य तणी प्रनालिका ॥
 ॥ ७ ॥ कोशंघिक ठामे संतानिक नामे, राज्य करे रंग
 राजीयो ॥ तम घर घरणी मृगावती सती, सुर भुवने
 यश राजीया ॥ ८ ॥ सुलसां साची श्रीयल न काची,
 राची नहां विषया रसे ॥ सुखडुं जोतां पाप पलाये,
 नाम-लितां मन उल्लसे ॥ ९ ॥ राम रघुवंशी तेहनी
 कामिनी, जनक सुता सीता सती ॥ जग सह जाणे
 धौज करतां, अनल शीतल थयो श्रीयलधी ॥ १० ॥
 काचे तांतणे चालणी वांधा, कूवा थकी जल काढीयुं
 ॥ कलंक उतारवा सतीय सुभद्रा, चंपा वार उघा-
 डीयुं ॥ ११ ॥ सुर नर वंदित श्रीयल अखंडित शिवा
 शिव पद गामनोर ॥ जेहने नामे निर्मल थडए, वलि-
 हारी तस नामनी ॥ १२ ॥ हस्तीनागपुरे पांडु
 रायनी, कुन्ता नामे कामिनी ॥ पांडव साता दसे
 दमार नी, वहेन पतिव्रता पद्मिनी ॥ १३ ॥ श्रीयल-
 वती नामे शीलव्रत धारिणी, त्रिविधे तेहने वंदीये ॥
 नास जपंता पातक जाए, दर्शण दुरित निकंदीय ॥
 ॥ १४ ॥ निषधानगरी नलह नरिंदनी, दमयंती तस
 नेहिनी ॥ मंकट पडतां शीलव्रत राख्युं, त्रिभुवन

कीर्ति जेहनो ए ॥ १५ ॥ अनंग अजिता जग जन-
 पूजिता, पुष्पचुलीने प्रभावती ए ॥ बिश्व बिख्याता
 कामित दाता, सोलमी सती पद्मावती ए ॥ १६ ॥ वीरे
 भाखी शास्त्रे साखी, उदय रतन भाखे मुदाए ॥ बहाणु
 वाहतां जे नर भणशे, ते लेशे सुखसंपदाए ॥ १७ ॥ इति ॥

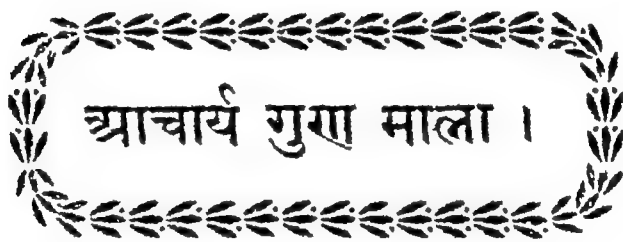
जयाचाय कृत—

श्रीभिखणजो स्वामीके गुणाकी ढाल ।

नन्दण बन भिन्नू गणमे बसोरी । हेजो प्राण
 जावे तोइ पग म खीसोरी ॥ नन्दण ॥ १ ॥ गण मांहि
 ज्ञान ध्यान शोभेरी । हेजो दीपक मंदिर मांहि
 जिसोरी ॥ नन्दण ॥ २ ॥ अवनीतकी देशना न दी-
 पेरी । हेजो गणिका तणे शिणगार जिसोरी ॥ नन्दण
 ॥ ३ ॥ टालोकड़ो भणवो न शोभेरी । हेजो
 नाक बिना ओतो मुखड़ो जिसोरी ॥ नन्दण ॥ ४ ॥
 दुःखदाइ खुद्र जोवा सरीषोरी । हेजो नंदक टालो
 कड़ बमण जिसोरी ॥ नन्दण ॥ ५ ॥ शासण में रह
 रत्ता रहोरी । हेजो सुर शिव पद मांहि बास बसा-
 री ॥ नन्दण ॥ ६ ॥ भागबले भिखु गण पायोरी ।
 हेजो रत्तन चिंतामण पिण न इसोरी ॥ नन्दण ॥ ७ ॥

गणपति कोप्यां गाढ़ा रह्यारी । हेजी समवित
 ग्रामण सांहे हुलसारी ॥ नन्दण ॥ ८ ॥ आड डोड
 चित से स आणोरी । हेजी मोह कर्म रो तज दो न
 मीरा ॥ नन्दण ॥ ९ ॥ खेल खीलास्यांरा याद करो
 री । हेजो अचल रहो पिण मतिरे सुसारी ॥ नन्दण
 ॥ १० ॥ बार बार सुं कहिय तुनेरी । हेजी अडिग
 पणे धेती गणमे वसारी ॥ नन्दण ॥ ११ ॥ उगणीसे
 गुणतीस फागुणरी । हेजी जयजश आणामें सुख
 विलसारी ॥ नन्दण ॥ १२ ॥

—:०:—



ॐ कवित ॐ

हंस ज्युं प्रकाश कर मिथ्याध्वांत भेट गणि,
 पापंड कुं छांड जिन आणा सिरधारी है ।
 आज्ञा अणआज्ञा दया दान सहु ओलखाय,
 वतावत सुद्ध नव तत्व सुविचारी है ।
 सम्यक्ता ममाय जिन शासनको दृढ़ कर,
 बांधी मर्याद चिहुं तीर्थ हितकारी है ।

पंचम आरंभ मांय भव्य जन तारनको,
 प्रशस्त उज्जगर श्री भिक्षुगणी सारी है ॥ १ ॥
 ऋषि वय मांय निज मात पितां छांड कर,
 भिक्षु गणी पास लियो चरण सुख धामी है ।
 न्याय नीत निष्ठुण विलोक गणीराज पद,
 दियो हृद कियो जिन शासनमें नामी है ।
 मुक्ति वधू लेवा चित्त हंस दिन रात लगी,
 प्रवल प्रतापी दक्ष नाथ शिवगामी है ।
 गुणको समंद ताय पार गुरु पावै नांय,
 ऐसी मुख साज गणी दीर्घमाल खामी है ॥ २ ॥

॥ सवैया ॥

शासन बोर जिनन्द तणै,
 कर्म फंद मिटावण सारंग धारी ।
 ज्ञान क्रिया उज्जवाल गणाधिप,
 पाषण्ड पुंजकुं पेलणहारी ।
 वाण सुधा वरषाय भविजन,
 बोध प्रमाय किया ब्रतधारी ।
 लोक उद्धार कियो अधिको,
 एहको गणी राय शशि ब्रह्मचारी ॥ ३ ॥

श्री जिनराज तयो पट छाजत,

राजत स्वाम उजागर सारौ ।

उज्ज्वल कीर्त फवे जगमें,

वर प्राज्ञ महा पुन्यवंत उदारौ ।

अर्क जिसी अवतार भयो,

जन पंकज कुं विकशावनहारौ ।

प्रात समय उर नाम रटूं,

नित माहण जीत सदा जयकारौ ॥४॥

॥ कवित ॥

विनय विवेक वर विमल विनीत वारु,

परिणत प्रवीण जाण युगपद दियोजी ।

विड्ढ महेश ज्यूं सुरेश ज्यूं प्रत्यक्ष दीपै,

चर्म जिन आणारूप वच्च कर लियोजी ।

क्रान्ति अजल लपन रतीश ज्यूं अधिक सोहै,

अविचल चंचु मन हर्षे अति दियोजी ।

गुणको गम्भीर जाण जीत गणी कृपा कर,

मघवा सुनिने वेद तीर्थ नाथ कियोजी ॥५॥

सर्व गुण योग्य गणी आखंडल देख करी,

सरल भट्टीक पुन्यवंत मन भायोजी ।

गिरा घन वर्षी जिस प्रीष्ट झड़ मण्डी घास,
 भवी मन सांभल आनन्द अति पायोजी ।
 सभामें जिनन्द ज्यूं सुरिन्द ज्यूं गणिन्द दीपै,
 मानुं उडुगलमें ज्यूं चंद मुख दायोजी ।
 कहै मुनि अष्टापद कैसे मैं बनाय कहूं,
 साणक ना गुणाकीरो पार नहीं पायोजी ।

॥ सर्वैया ॥

बाल पणें तज ओक भये,
 वर साधु महाव्रत पांडवधारी ।
 योग्य भणै दुनियां मुखसे,
 कहै नाथ रहो तुम आनन्दकारी ।
 तूर्य गती भ्रम रूप अपाट व,
 मेठ दियो चित्तमें हुंसियारी ।
 तेज प्रताप दिप्यो अधिको,
 एहवो गली डाल महा सुखकारी ॥७॥
 परबत पाट मुनेश जिनेश,
 दिनेश सुरेश तरेण ज्यूं सोहै ।
 जेम चकोर निशापति पेखत,
 तेस भवी गली आनन खोवै ।

उत्पतिया बुद्धि लायक सायक,

पेख भवौ मन हर्षित होवै ।

शासन शोभ चढ़ाय करी,

वर कालू गणेश भवौ मन मोवै ॥८॥

श्रीकालूगणीके गुणाकी ढाल ।

❁ कवित ❁

कीड़ मारवाड़हुके कीड़ मेदपाटहुके, कीड़ देश
मालव के सुकृत विभागी है । कीड़ हरियानके
ढूँढारके थलोके कीड़, वाच्छ गुजरातहुके धर्म अनुरागी
है । आविक वो आविका लुंभाये पद पंकजमे, हर्ष
हर्ष आये चित्त स्वाम लिव लागी है । सोहन कहत
सबै सुगति निहारै तेरी, कालू गणधारी तू तो सखर
सौभागी है ।

॥ ढाल १ ली ॥

अपने मोलाकी में योगन बनूंगी योगन बनूंगी

वैरागन बनूंगी अ० (भैरवी)

स्वाम चरन मेरो शीश धरूंगा, शीश धरूंगा
में सुक्ति धरूंगा स्वाम० ॥ ए आंकाड़ी ॥ आदनाथ जिम

आद करैया, भ्रम हरैया भारी । पाखंड दमन रमन
 जिन मतमें, भिक्षु भये अवतारी ॥ मैं शीश धरूंगा ॥१॥
 जिन आज्ञा सिर धार गङ्गाधिप, सीमा बहु बिध बांधी ।
 जन प्रतिबोधी स्वर्ग मिधाया, साठे अनसन साधौ ॥२॥
 सिद्ध पाठ गह घाट याट कर, गुण भणि माट दयालू ।
 छोगां नन्द चन्द जिम शीतल, भवि पंकज बिकसालू ॥
 मैं पाय प्रहूंगा मूल नन्दकी मैं पाय प्रहूंगा ॥ पाय
 प्रहूंगा मैं शीश धरूंगा स्वाम चरण ॥३॥ गिरा अपू-
 रब धाराधर सम, वरषावत गेनधारी । उन्मूलत बबूल
 कुमिथ्या, सिंचत गनबन क्यारी ॥ मैं पाय ॥ ४ ॥
 काप रोप कर कीर्ति तिहारी, फेली जक्त मभारी ।
 जैसे जल बिच तेल बिंदुवो, दुग्ध मध्य जिम वारी ॥
 ५ ॥ ग्रहण सूर शशि बेग तेग धर, गमन करत गग-
 नारी । बश नहिं आवी तब ते दोनूं बैठे हाथ पसारी
 ॥६॥ इन्द्र कहै ए जगकौ लखी, लोक कहै इन्द्रानी ।
 संशय हरन कहै ज्ञानौ ए, कालू कौरति जानौ ॥७॥
 जश नामो ए तेरी कौरति, अखी रहो भ्रुवतारी ।
 चिरंजीवो प्रभु कोटि दिवारी, अरजी एह हसारी ॥८॥
 शुभ बत्सर शर अश्व तपासित, सप्तमी उत्सव मेरा ।
 चतुर गढ़में चतुर चंग चित, सोवन हर्ष घणोरा ॥ मैं
 पाय प्रहूंगा ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ ढाल ॥

वाह २ खुब खुली है गोरे तनपर कालो चुन्दड़ी वाह २ सीताके
खोलेमें हनुमन्त न्हाखी मुन्दड़ी (पदेशी)

सनड़ो लाग्याहो अन्नदाता आपरे नाम में जी ।
तपा कर मुज ने ले चालो शिवपुर धाममे जी ॥ मैतो
अरज करुं शिर नासी । अवतो अवण करो तुम स्वामी ।
ढील न किजे अंतरयासी ॥ ए आंकड़ी ॥ श्रीभिन्नु बसु
पाटे ओपताशी । ए तो गणिवर गुणनिधि कालू ।
निशदिन रस काया प्रतिपालु, दिन उद्धारण परम
दयालु ॥ मन १ ॥ जननौ छोगां कुचे जनमियाजी ।
वप्ता खूल गशी सुत निको, वारु कोठारी कुल टीको,
गहर सखर कापुरगढ़ तीखा ॥ २ ॥ लघुवय माता
साथे संजम लियोजी । उद्यम ज्ञान ध्यान वर कीधो,
वारु समय वांच रस लीधो, डालगणि लख गणपद
दीधो ॥ म० ३ ॥ वरपत वाणी सचन सुहामणीजी ।
बहु विध मनवंछित मुखकरणी, आतो पाप पंक पर-
हरणी, चित धर मुनत तास दुःख टरणी ॥ ४ ॥ कौर्ति
बेली फेली दशों दिशार्जी, ग्रहण पुरिन्दर निज बधु
रहेली, ते छहे सस मति मे चाल सहेली, तिहां आपां
रमखां दिहुं भेली ॥ ५ ॥ कौर्ति बोली तूतो थोली
पूरंदरीह, मैं तो तुम साथे नहीं पावुं, अहो निश

सुमति संग सुख पावुं, गणपति छांड किहां नहीं जावुं
 ॥६॥ सुण इन्दराणौ बदन कुमलावलीजी, आवी पतिने
 एम प्रकाश तेतो नहीं आवे तुम पासे, इम सुण हरि
 यगो अधिक उदासे ॥७॥ प्रभुता इन्द्र तणी पर आप-
 रीजी, शीतलता शशिहर सम जानौ, कंठ रजत सारद
 सुखदानी, पाणी विष कमला लहराणी ॥८॥ निशदिन
 बंछा तुम दरशण तणीजी, लाग रही मुझ तनमन
 मांयो, दिवस गिणत हिवे दरशन पायो, आजतो हूं
 ब्रह्म बखत कहायो ॥ ९ ॥ तुम गुण सिंधु मुझ मति
 बिंदुवोजी । मैं तो पार कदे नहीं पाऊं, पिण निज
 मननो हूंस पूराऊं, किंचित गुणकरी तोय रिझाऊं
 ॥ १० ॥ युग मुनि वत्सर मुचि कृष्ण अष्टमीजी । आयो
 सोहन शरण तिहारी, सस्तक कर धर दो रिझवारी,
 प्रभु अपनो विरुद विचारी ॥ ११ ॥



अथ जिन कल्पी साधुकी हाल लिख्यते ।

जिन कल्पौ कष्ट उदैरिने लेवै । परिसाहा सहै
सम परिणामोरे ॥ आक्रोश विविध प्रकारना उपजै ।
तोइ उदैरि न जावे तिण ठामोरे ॥ शूरां वीरांरो
घोशुद्ध मारण ॥ १ ॥ मास मास खमण कोइ करै
निरन्तर । इतरा कर्म कटे एक छिनमेंरे ॥ वचन
कुवचन सहै सस भावे । राग द्वेष न आणे मुनि
मनमेंरे ॥ शू० ॥ २ ॥ मास सवा नव जीव रह्यो
गर्भमेंरे । तो ए दुःख कितरा दिनकारे ॥ एम विचार
सहै ससभावे । शूर मुनि द्रढ मनकारे ॥ शू० ॥ ३ ॥
लाभ अलाभ सहै समभावे । बली जीतव मरण समा-
नोरे ॥ निन्दा स्तुति सुख दुःख समचित । सम-
गिणे मान अपमानोरे ॥ शू० ॥ ४ ॥ बाइस तैतीस
सागर तांड । जीव बसियो नरक मभारोरे ॥ तो
किंचित दुःखस्यूं सुंदलगिरी । एम विमासे अण

गारोरे ॥ शू० ॥ ५ ॥ मेघ सरिषा मोटा मुनि-
 श्वर । कियो पादुप गमण संथारोरे ॥ खोलीमें जीव
 छतां तन त्याग्यो । एक मास पहली गुण धारोरे ॥
 शू० ॥ ६ ॥ सालिभद्र नें धनें सरीषा । ज्यांरो सुख
 माल तन श्रोकारोरे ॥ त्यांणिण मास मास खमण
 तप कौधा । बले पादुप गमण संथारोरे ॥ शू० ॥ ७ ॥
 रोग रहित तीर्थंकरनो तन । ते पिण लेवै वाष्ट
 उदिरोरे ॥ तो सहजांही रोगादिक उपना आइ ।
 तो समा परिणामां सहै शूर बीरोरे शू० ॥ ८ ॥
 इत्यादिक मुनि रहामों देखी । ते कष्ट पड्यां नही
 काचारे ॥ अल्पकालमें शिव सुख पामें । शूर
 शिरोमणी साचारे ॥ शू० ॥ ९ ॥ नरकादिक दुःख
 तिब्र बेदना । जीव सहि अनन्ती बारोरे ॥ तो किंचित
 बेदना उपना महामुनि । सहै आणी मन हर्ष
 अपारोरे ॥ शू० ॥ १० ॥ ए बेदनाथी हुवै कर्म निर्जरा
 ए बेदनाथी कटै कमेरि ॥ पुन्यरा थाट बंधे शुभ
 जागे । बले हुवै निर्जरा धमेरि ॥ शू० ॥ ११ ॥
 समचित बेदन सुखरो कारण । ए बेदनथी कटै
 कमेरि ॥ सुर शिवना सुख लहै अनापम । बले हुवै
 निर्जरा धमेरि ॥ शू० ॥ १२ ॥ सम भावे सद्धां होवै
 निर्जरा एकांत । असम भावे सद्धां होवै पाप

एकंतोरि ॥ ठाणा अंग चौथे ठाणे श्रीजिन भाष्यो ।
 दूम जाणो समचित सहै संतोरि ॥ शू० ॥ १३ ॥

इति सम्पूर्णम् ।

॥ अथ अनाथी मुनिको स्तवन ॥

राय श्रेणिक वाडो गया । दौठो मुनि एकंत ॥
 रूप देखो अचरज थयो । राय पृच्छेरे कुण ब्रतान्त ॥
 श्रेणिक राय छ' रे अनाथी निग्रंथ । मेतो लीधोरे
 साधुजी रो पत्थ ॥ श्रेणिक ॥ १ ॥ कोसम्बी नगरी
 हुंती । पितामुज प्रवल धन ॥ पुत्र परवार भर
 पूरखूं तिणरो हूं कुंवर रत्तन ॥ श्रेणिक ॥ २ ॥ एक
 दिवस मुज वेदना उपनी । मो खूं खमियन जाय ।
 मात पिता भूखा घणा । न सक्यारे मुज वेदना
 बंटाथ ॥ श्रेणिक ॥ ३ ॥ पिताजी म्हारे कारणे ।
 खरच्या बहोला दाम ॥ तो पिण वेदना गर्ड नहीं ।
 एहवोरे अथिर संसार ॥ श्रेणिक ॥ ४ ॥ माता पिण
 म्हारे कारणे । धरती दुःख अघाय । उपावतो किया
 घणा । पिण म्हारेरे मुख नहीं थाय ॥ श्रेणिक ॥ ५ ॥

वस्तु पिण म्हारेहुंता । एक उदरना भाय ॥ औषध
 तो बहु विध किया । पिण कारी न लागी काय ॥
 श्रेणिक ॥ ६ ॥ बहिनां पिण म्हारे हुंती । बड़ी
 छोटी ताय । बहुविध लूण उवारतौ पिण म्हारेरे मुख
 नहीं थाय ॥ श्रेणिक ॥ ७ ॥ गोरड़ी मन मोरड़ी ।
 गारड़ी अबला बाल । देख बेदना म्हायरी न सकीरे
 मुक्त बेदना बंटाय ॥ श्रेणिक ॥ ८ ॥ आंख्यां बहु
 आंसु पड़े । सिंच रही मुक्तकाय ॥ खाण पाण विभूषा
 तजो । पिण म्हारेरे समाधी न थाय ॥ श्रेणिक ॥ ९ ॥
 प्रेम विलुधो पदमणो । मुक्तस्य अलगी न थाय ॥
 बहुविध बेदना मैं सही । बनिता रहीरे बिललाय ॥
 श्रेणिक ॥ १० ॥ बहु राजबैद्य बुलाविया । किया
 अनेक उपाय ॥ चन्दन लेप लगाविया । पिण म्हारेरे
 समाधी न थाय ॥ श्रेणिक ॥ ११ ॥ जगमें कोइ
 कियारो नहीं । तब मे थयोरे अनाथ ॥ वितरागजीरे
 धर्म बिना । नहीं कोइरे मुगतिरो साथ ॥ श्रेणिक
 ॥ १२ ॥ बेदना जावे मांहरौ । तो लेज संजम भार ॥
 इम चिन्तवतां बेदना गइ प्रभातेरे थयो अणगार ॥
 श्रेणिक ॥ १३ ॥ गुण सुण राजा चिन्तवे । धन र
 एह अणगार ॥ राय श्रेणिक समकित लीवौ । वान्दी
 आयोरे नगर मभार ॥ श्रेणिक ॥ १४ ॥ अनाथी-

जीरा गुणगांवतां ॥ कटे कर्मांगी कोड़ । गुण सुण
सुन्दर इस भणे । ज्याने वन्दुरे बेकरजोड़ ॥
अं गिका ॥ १५ ॥

—०—

श्रावक शोभजी कृत— श्रीभिक्षूगणिके गुणाकी ढाल ।

मोटो फंद इण जीवरेरे । कनक कामणी दीय ॥
उलझ रह्यो निकल सकूं नहीरे । दर्शणरो पड्योरे
बिछोय ॥ स्वामीजीरा दर्शण किण विध होय ॥ १ ॥
कुटम्ब ऋद्धिस्यूं राचियोरे । अन्तराय सुजोय ॥
मंगलीक दर्शण श्रीपूज्यनारे । सुगत पहुंचावे सोय
॥ स्वा० ॥ २ ॥ संसाररो सुख दुःख भोगव्यारि ।
कर्म तगो बंध होय ॥ दर्शण नन्दण वन जिसोरे ।
कर्म चिन्ता देवे खोय ॥ स्वा० ॥ ३ ॥ दान दया
बोध बीजनरे । हिरदै मे दीज्यो पोय । परदेशां
गुण विस्तरेरे । ज्यूं सोनेयें रत्तन जड़ोय ॥ स्वा० ॥
४ ॥ चोरी लारी आद योगग तजोरे । इण भव
परभव दीय ॥ खरची पुरव भव तगोरे । श्रीपूज
विना कुण पगोय ॥ स्वा० ॥ ५ ॥ साचे मोतीज्यूं

धायक श्रौपूज्यनारे । हिरदैँ में लौज्यो पोय । ज्ञान
 सागर आयां बिनारे । जीव मैल किम धोय ॥
 स्वा० ॥ ६ ॥ सोम दर्शण श्रौपूज्यनारे । हिरदैँमे
 लौज्यो पोय ॥ सागर ज्युं गुण पूजनारे । गागर
 ज्युं केस टालोय ॥ स्वा० ॥ ७ ॥ गुण बिना दर्शण
 भेषनारे । कर २ डूबे सोय ॥ पूज बिना दर्शण
 किंरा करारे । आप समा नहीं काय ॥ स्वा० ॥ ८ ॥
 पाषण्ड जाडो दूण भरतमें रे । भिक्षणजी दियो
 रे बिगोय ॥ भिनो चीरज्युं जुवान मरोड़नेरे
 ज्युं चरचा में लियारे निचोय ॥ स्वा० ॥ ९ ॥ धुर्वो
 अमर घासनोरे । कस्तुरी संग लिपटोय ॥ उयूंचित
 दर्शण मांहेरो । आप इसो लियोजी मनमोय ॥
 स्वा० ॥ १० ॥ मीन कादे में तड़ फेड़ेरे । कद
 मिलसौ मुझ तोय ॥ उयूं तड़ फड़े तुज श्राविकारे ।
 कमल जेम कमलोय ॥ स्वा० ॥ ११ ॥ कृष्णीरो
 मन मेहथीरे । बादल बरसे सोय । पपईया मोर
 पुकारता । उयूं गड़े बाट रछा सब जोय ॥ स्वा० ॥ १२ ॥
 दर्शण श्रौजी दुवारमेरे । सेवक दीपक जोय ॥ भाण
 भलो जेद जगसी । शोभो चरणा स्युं कमल लगेय
 ॥ स्वा० ॥ १३ ॥

आयुष टूटोको सान्धोको नहि रे को ढाल ।

आयुष टूटी को सान्धो को नहि रे, तिण कारण
 मति करो प्रमाद रे । जरा आयानै शरणो को नहिरे,
 हिंसा टाली ने धर्म सम्भालरे ॥ आ० ॥ १ ॥ कुटुम्ब कबीलो
 नारी कारणेरे, मत करो कोई जाड़ा पापरे । वीरतणी
 परै सन्ध्या श्रुतसी रे, पूर्वभव घणो सहसी सन्ताप
 रे ॥ आ० ॥ २ ॥ धनगडियो लहिनो रह्यो लोक में रे,
 जाणे पोता लग टूँ वताय रे । जीभयो नथी आवै उतो
 बोलनो रे, रह्यो हूँस मनसारी मन मांयरे ॥ आ० ॥ ३ ॥
 जंचा चिणाया मन्दिर मालिया रे, दे दे जमौमें जंडी
 नीब रे । दूकदिन जभा छोड़ी चालसी रे, मुखदुःख
 सहसी अपनो जीव रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ चक्रवर्ती हलधर
 राणा केशवा रे, इमि बली इन्द्र सुरांगो नाथ रे ।
 उगमिने २ सगला आयस्यां रे, जीयजो कांछुँ अचरज
 वाली बात रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ जुगलियारे तीन पत्यो-
 पमनो आयुषोरे, लाम्बीज्यांरौ तीनकोसरौ कायरे ।
 कल्पवृक्ष परै ज्यानि दशजातनारे, बादल जिम गया
 विलाय र ॥ आ० ॥ ६ ॥ भगवन्त चौबीसवां श्रीवर्द्ध-
 मानजी रे, शक्तेन्द्र बोन्यो इसड़ी बात रे । स्वामी
 दीयवर्द्ध आयुने बधारजोरे, जिमि अह भस्मयह टल

जायरे ॥ आ० ॥ ७ ॥ बलता श्रीवीर जिनेन्द्र इसड़ी
 कहै रे, सुनरे शक्तेन्द्र माहरी बाय रे । तीन काल
 में बात हुई नहीरे, आयुषो बधायियो नहि जायरे
 ॥ आ० ॥ ८ ॥ अस्थिर संसार जाणी मुनि तज नीस-
 खारे, करता मुनि नवकल्पी विहाररे । भारंडपक्षीनी
 दी ज्यांने उपमारे, नधरैमुनि ममता नेह लिगाररे ॥
 आ० ॥ ९ ॥ चारित्र पाले रूडी रीति सूं रे, देवे बली
 अपनी छन्दा रोक रे । तुरत विराजि मुनि मुक्तिमे रे,
 यश लहै द्रव्हलोकने परलाकरे ॥ आ० ॥ १० ॥ शब्द
 रूप देखिने समता करी रे, मत करो कोढ़ भणियांरो
 अभिमानरे । चोथ ऋषिजी कहै शहर जालोर में
 रे, सूत्र थी मुक्त होज्यो निस्तार रे ॥ ११ ॥

अथ मुक्ति जानेकी डिग्री ।

● दोहा ●

तीर्थङ्कर महावीरने, कौशल गणधर साज ।

कानून प्रख्या है दया, सब जीवन-हित काज ॥ १ ॥

दान शील तप भावना, असल खुलासा सार ।

जिन पुरुषां धारण किया, पहुंचा मुक्ति संभार ॥ २ ॥

चौदह मन्त्र साधु हुए. आर्या कत्तीस हजार ।

लाखां श्रावक श्राविका, पाया भव जल पार ॥ ३ ॥

चाल होर रांझेके ख्याल को ।

सेरी अदालत प्रभुजी काजिये, जिन शासन नायक
मुक्ति जागेकी डिग्री दीजिये । (जि० टेक) खुद
चेतन मुद्दई बना है, आठों कर्म मुद्दाइला । दावा
रास्ता मुक्ति मार्गका, धोखा दे जाय टालाजी । जि०
॥ १ ॥ तप लागद स्टाम्प लिखाया, तलवाना क्षमा
विचारौ । सिंभाय ध्यान मजसून बनाकर, अर्जी आन
गुजारीजी । जि० ॥ २ ॥ मैं जाता था मुक्ति मार्गमे,
कर्मोंने आय घेरा । धोखा देकर राह मुलाया,
लूट लिया सब डेराजी । जि० ॥ ३ ॥ बहुत खराब
किया कर्मोंने, चौरासीके मांही । दुःख अनन्ता
पाया मैंने, अन्त पार कछु माहींजी । जि० ॥ ४ ॥
सच्चे मिले वकील कानूनी, पंच महाव्रत धारी । सूत्र
देख ससौदा कौन्हा, तब मैं अर्जी डारीजी । जि०
॥ ५ ॥ पांच सुमति तीन गुप्ति ये, आठों गवाह
बुलाओ । शौल असल है बड़ा चौधरी, उसको पूछ
संगाओ जी । जि० ॥ ६ ॥ अर्जी गुजरी चेतन तेरी,
हुआ सफांना जारी । हाजिर आओ जबाब लिखाओ,

लाभो सबूती सारोजी । जि० ॥ ७ ॥ आठों मुहाइ-
 लह हाजिर आये, मोह मुखतार बुलाये । चार कषाय
 अरु आठ मदोंको, साथ गवाहीमें लाये जी । जिन
 शासन नाथक झूठा दावा है चेतन जीवका ॥ ८ ॥
 हमने नहीं बहकाया इसको, यह मेरे घर आया ।
 कर्जा लेकर हमसे खाया, ऐसा फरेब मचायाजी ।
 जि० ॥ ९ ॥ विषय भोगमें रमिया चेतन, घाटा
 नफा नहीं जाना । कर्जदार जब लारै लाग्या, तब
 लाग्या पछताना जी । जि० ॥ १० ॥ हाजिर खड़े
 गवाह हमारे, पूछिये हाल जु सारा । विना लियां
 कर्जा चेतनसे, कैसे करे किनाराजी । जि० ॥ ११ ॥
 चेतन कहे सताबी मांहीं, मुन शासन सरदार ।
 ईमानदार हैं गवाह हमारे, जाणे सब संसारजी । जि०
 ॥ १२ ॥ मैं चेतन अनाथ प्रभुजी, कर्म फरेबी भारी ।
 जीव अनन्ते राह चलतको, लूट चौरासीमें डाराजी ।
 जि० ॥ १३ ॥ बड़े बड़े पण्डित इन लूटे, ऐसा दम
 बतलाया । धर्म कहा अरु पाप कराया, ऐसा कर्ज
 चढ़ाया जी । जि० ॥ १४ ॥ हिंसा मांहीं धर्म बताया,
 तपस्या सेती डिगाया । इन्द्रिय सुखमें मग्न करीने,
 झूठा जाल फैलाया जी । जि० ॥ १५ ॥ ऐसा करो
 इन्साफ प्रभुजी, अपील हीने न पावे । हकरसी चेतन

कौ होवे, जन्म मरण मिट जावे जी । जि० ॥ १६ ॥
 ज्ञान दर्शन करी मुंसफ़ी, दोनोंको समझाया । चेतन-
 की डिग्री करदीनी, कर्मोंका कर्ज बतायाजी । जि०
 ॥ १७ ॥ असल कर्ज जो था कर्मोंका, चेतन सेती
 दिलाया । शुद्ध संयम जब करी जमानत, आगेका
 मूढ़ मिटायाजी । जि० ॥ १८ ॥ आश्रव छोड़ संबर-
 को धारो, तपस्या से चित्त लाओ । जल्दी कर्ज अदाकर
 चेतन, सीधा मुक्तिको जाओजी । जि० ॥ १९ ॥ शुद्ध
 संयम जद करी जमानत, चेतन डिग्री पाई । फाल्गुन
 सुदि दशमी दिनमंगल, संवत् उगणौसै अठार्वीजी ।
 जि० ॥ २० ॥

करणी हो कीज्यो चित्त निर्मले की ढाल ।

भव्य जीवा आदि जिनेश्वर विनर्ज, सतगुरु लागूं
 पाय । भव्य जीवा मन वचन काया वश करो, छाण्डो
 चार कषाय । भव्य जीवा करणी हो कीज्यो चित्त
 निर्मले ॥ १ ॥ (आंकड़ी) भव्य जीवा मनुष्य जमारो
 दोहिलो, सूत मुणवो सार । भव्य जीवा साची श्रद्धा
 दोहिली, उत्तम कुल अवतार । भ० ॥ २ ॥ भव्य

जीवा मोह मिथ्यास्वरी नौदमें सूतो काल अनन्त ।
 भव्य जीवा जन्म मरण युग पूरियो, ज्ञान बिना नवि
 अन्त । भ० ॥ ३ ॥ भव्य जीवा सिकियो इण संसार-
 में, ज्यों भड़भूजारो भाड़ । भव्य जीवा निग्रन्थ गुंरु
 हिला दिये, अवतो आंख उघाड़ । भ० ॥ ४ ॥ भव्य
 जीवा नरक तणो दुःख दोहिलो, सुणतां थड़हड़
 थाय । भव्य जीवा पापकर्म एकठा किया, मार अनन्ती
 खाय भ० ॥ ५ ॥ भव्य जीवा चन्द्र सूर्यरो दर्शन नहीं,
 दीसे चार अन्धार । भव्य जीवा न्हासणने सैरी नहीं,
 जहां देखे जहां मार । भ० ॥ ६ ॥ भव्य जीवा अन्धो
 जीमण रातरो, करतां जीव मराय । भव्य जीवा भोभर
 विष्टा जेहने, चांपे मूँठा मांय । भ० ॥ ७ ॥ भव्य
 जीवा परमाधामी देवता, ज्यांरी पन्द्रह जात । भव्य
 जीवा मार देवे एकण जीवने, करै अनन्ती घात । भ०
 ॥ ८ ॥ भव्य जीवा अर्थ अनर्थ धर्म कारणे, जल
 टाल्यो बिन ज्ञान । भव्य जीवा बाहिर शुचि बहुला
 किया, माहें मैल अज्ञान । भ० ॥ ९ ॥ भव्य जीवा
 वैतरणी लोही राधनी, तिणरो तीखो नीर । भव्य
 जीवा तिणने डुबीवे तेहमें, छिन छिन होय शरीर ।
 भ० ॥ १० ॥ भव्य जीवा टांठा ज्यों चरतो सदा,
 नहीं जाणो जिलि काह । भव्य जीवा मारो मारो

छेदतो, दया न आणौ लिगार । भ० ॥ ११ ॥ भवा
 जीवा वृक्ष तहां कूड़ सांभली, तिणारे वैसाणे छाय ।
 भवा जीवा पान पडे तरवारसा टूक टूक होय जाय ।
 भ० ॥ १२ ॥ भवा जीवा धन्वामे खूंतो रहे, जूती
 घररे भार । भवा जीवा लोह तणे रथ जोतरे, धरती
 धूप अंगार । भ० ॥ १३ ॥ भवा जीवा परनी छाती
 दाहदे, चोखा वित्त बहुवार । भवा जीवा धन खाधो
 कुटुम्बिया, सहे एकलो भार । भ० ॥ १४ ॥ भवा
 जीवा हाथ पांव छेदन करै, नाखे अंग मरोर । भवा
 जीवा पुकार करे किण आगले, वहां नही किणरो
 जोर । भ० ॥ १५ ॥ भवा जीवा रङ्गरातो मातो
 फिरे परनारी प्रसङ्ग । भवा जीवा अग्निवर्णी लांह
 पुत्तली, चैटे तिणारे अङ्ग । भ० ॥ १६ ॥ भवा जीवा
 पाप कर्म वोहला किया, कर कर मनरो जोश । भवा
 जीवा बोले परमाधामी देवता, किमो हमारो दोष ।
 भ० ॥ १७ ॥ भवा जीवा क्षण जीतवा सुख वंछवा,
 सागर पल है मार । भवा जीवा विन भुगत्यां कूटे
 नहीं, अर्ज करै वारम्बार । भ० ॥ १८ ॥ भवा जीवा
 क्रोध मान माया लोभमे, छकियो वह्यो अन्याय ।
 भवा जीवा सोध श्रावक बल्यो, देतो धर्म अन्तराय ।
 भ० ॥ १९ ॥ भवा जीवा जीव हणौ धर्म जाणियो,

सेवा कुगुरु कुदेव । भवा जीवा नियन्त्र मार्ग नवि
 ओलख्यो, ताणी कुलरीटव । भ० ॥ २० ॥ भवा जीवा
 कपट करी धन मेलियो, चाड़ी चुगली खाय । भवा
 जीवा अभक्ष्य भक्ष्या जीवने हणौ, न पाली छः काय ।
 भव्य० ॥ २१ ॥

* अन्तर ढाल *

—:०:—

(समझू नर विरला देशी)

कीर्द्ध लोग मिथ्यात्वी त्यांने नहीं ज्ञान, वले पूरो
 नहीं विज्ञानरे । समझू नर विरला । (आंकड़ी) ॥
 आज देय तीर्थङ्कररे भगड़ो लागी, तेतो आवस्ती
 नगरीरे वागेरे ॥ स० ॥ १ ॥ ये देनों माझामांहीं
 बादमें बोलै, एक एकरा पड़दा खालैरे । स० ॥ वीर
 कहै गहारो चेलो गोशालो, मोसूं मतकर भूठी भका-
 लोरे । स० ॥ २ ॥ गोशालो कहै हूं थारो चेलो नाहीं,
 तैं कूड़ी कथी लोकां मांहीरे । स० ॥ मैं तो साधपणो
 थां आगे नहीं लीधा, मैंतो गुरु ताने कदेय न कीधा-
 रे । स० ॥ ३ ॥ वीर कहै गोशालो तीर्थङ्कर नाहीं,

तीर्थङ्करना गुणछै मो मांहीरे । स० ॥ गोशालो कहे
 हूं तीर्थङ्कर शूरो, ओतो काश्यप प्रत्यक्ष कूरोरे । स०
 ॥ ४ ॥ वीरने सम्मुख कह्यो गोशालो, तूतो मो
 पहिलो करसी कालोरे । स० ॥ जब वीर कहे सुणारे
 गोशालो, करसी तूं मो पहिली कालोरे । स० ॥ ५ ॥
 आप आपतणा मत दीनों थापै, एक एकने माहोमांहीं
 उत्थापैरे । स० ॥ यांमे कुण साचो कुण मृषावार्ड,
 कीर्त कहे म्हाने तो खबर न कांईरे । स० ॥ ६ ॥ यांमें
 कीर्त कहे गोशालोजी साचो, यांने किण बिध जाणां
 काचोरे । स० ॥ यांमे उघाडी दीसै करामातो, तुरत
 कीधी वे साधारी घातोरे । स० ॥ ७ ॥ इण देखतां
 वे इणरा वाल्या दीय चेलां, इणसूं पाछा न हुआ
 हेलारे । स० ॥ इणने खाटो कहतो जब बोलतो
 सेंठो, पळे अणवोल्यो कांई वैठारे । स० ॥ ८ ॥
 गोशालोजी बोलै गुंजार करतो, वीर पाछो बोलै सोई
 डरतोरे । स० ॥ गोशालोजी सिंहतणीवर गुंज्या,
 वीरना साधु मगला धूज्यारे । स० ॥ ९ ॥ वीररी
 तो लोकां देखलीधी सिद्धार्ड, इणमें कला न दीखै
 कांईरे । स० ॥ जो सिद्धार्ड होवे तो देखावता यांने,
 जब ये पण ऊभा रहता क्यांनैरे । स० ॥ १० ॥
 ओ तो इण ऊपर चलायने आयो, इण फाठग वागरे

मांयारे । स० ॥ ओ शूर पणोतो दोसै द्रण मांडे,
 द्रणमें कमी न दीखे कांडरे । स० ॥ ११ ॥ जब
 पिण लोकांमें हूंतो इसडी अन्धारी, ते बिकलांने नहीं
 बिचारोरे । स० ॥ ओ गोशालो पाखण्डी प्रत्यक्ष
 पापौ, तिणने दियो तीर्थङ्कर थापीरे । स० ॥ १२ ॥
 केई चतुर विचक्षण था तिणकालो, त्यां खाटो जाण्यो
 गोशालारे । स० ॥ ओ गोशालो कुपाव मूढ मिथ्या-
 तो, तिण कीधी साधारी घातीरे । स० ॥ १३ ॥ क्षमा
 शूरा अरिहन्त भगवन्त, त्यांरै ज्ञानतणो नहीं अन्तरे ।
 स० ॥ ज्यांरा कौड जिह्वा कर नित्य गुण गावै, त्यांरो
 पार कदे नहीं आवैरे । स० ॥ १४ ॥ यां लक्षणांकर
 तीर्थङ्कर पिछाणा, तेतो भगवन्त महावीर जाणोरे ।
 स० ॥ ये तो अतिशय गुणेकरी पूरा, यांने कदेय म
 जाणो कूडारे । स० ॥ १५ ॥ केई तो भगवंतने
 जिन जाणे, ते तो एकान्त त्यांने बखाणैरे । स० ॥
 केई अज्ञानी गोशालैरी ताणै, ते तो जिनगुण मूल
 न जाणैरे । स० ॥ १६ ॥ केई कहे दोनोंही साचा,
 आपांथी दोनों ही आछारे । स० ॥ आपांने तो यांरै
 भगडै में न पडणो, सगलांने नमस्कार करणोरे ।
 स० ॥ १७ ॥ केई कहे दोनों ही कूडा, ते कर रच्या
 फेल फितूरारे । स० ॥ आप आप तणो मत बांधन

काजि, तिणसूँ भगडा करता नहीं लाजैरे । स०
 ॥ १८ ॥ ओ तो पेट भरणारो करैकै उपाय, लाकाँनै
 घालैकै फन्द मांयरे । स० ॥ इण विध कीई बालै
 अज्ञानी, ते तो भाषा काढे मनमानीरे । स० ॥ १९ ॥
 इसडो अम्बारो हूँतो तिणकाले, अशुभ उदय आयो न
 सम्भालेरे । स० ॥ तीर्थङ्कर धकां हुआ इसडा बेहदा,
 ते तो अनादि कालरा सेंहदारे । स० ॥ २० ॥ इमि
 सांभल उत्तम नरनारी, अन्तरङ्ग मांहीं करज्यो विचारी
 रे । स० ॥ पक्षपात किणरी मूल नहीं कीजै, साचो
 मार्ग ओलख लीजैरे । स० ॥ २१ ॥

* अथ दश दानोंको ढाल *

ॐ दोहा ॐ

दशदान भगवन्त भाषिया, सूत्र ठाणांग मांय ।
 गुण निपन्न नामकै तेहो, भोलां ने खबर न काय ॥१॥
 धर्म अधर्म दो मूलका, प्रसिद्ध लोकमें एह ।
 आठां की अध्रुं ऊंधो करै, मिश्र धर्म कहे तेह ॥२॥
 मिश्र धर्म परूपता, कूड़ी वाद करन्त ।
 आठांमें अधर्म कह्यो, सांभलज्यो दृष्टन्त ॥३॥

भाम नीमके रुखना, जुदे जुदे विस्तार ।
 नीम निमेली तेल खल, नीमतणो परिवार ॥ ४ ॥
 इमि हिज आठों दानना, अधर्म तणो परिवार ।
 धर्म दानमें मिले नहीं, श्रीजिन आज्ञा बाहर ॥ ५ ॥
 इतरामें समझी नहीं, तो कहूं भिन्न भिन्न भेद ।
 विवरा सहित बताइयां, मत कीद करज्यो खेद ॥ ६ ॥

✽ ढाल ✽

कृपण दीन अनाथ ए, म्लेच्छादिक त्यांरी जाति
 ए । रोग शोक ने आर्त ध्यान ए, त्यांने देव अनु-
 कम्पा दान ए ॥ १ ॥ त्यांने देव मूलादिक जमी कन्द
 ए, त्यांमें अनन्त जीवांरा वृन्द ए । तिण दिया कहै
 मिश्र धर्म ए, तिणरै उदय आया मोह कर्म ए ॥ २ ॥
 लवण आदिक पृथ्वी काय ए, आपै अग्नि ढाले पानी
 बाय ए । शस्त्रादिक विविध प्रकार ए, इन दानसूं
 रुले संसार ए ॥ ३ ॥ बन्धीवानादिकने काज ए, त्यांने
 कष्ट पड्यां देव साज ए । थोरी बावरी भील कसाइने
 ए, सचितादिक द्रव्य खवाइने ए ॥ ४ ॥ कीड़ावा
 देवें ग्रन्थ ताम ए, संग्रह दान कै तिणरो नाम ए ।
 यह तो संसारना उपकार ए, अरिहन्तनी आज्ञा बाहर
 ए ॥ ५ ॥ ग्रह करड़ा लग्या जाण ए, सुणी लागी
 पनोती आण ए । फिकर घणी मरवातणी ए, फिर

कुटुम्ब तणी जतनां भणी ए ॥ ६ ॥ भयनो घाल्यो
 देवे आस ए, भय दान छै तिणरो नाम ए । लेवै
 कुपात आय ए, तिणमें मिश्र किहांथी थाय ए ॥ ७ ॥
 खर्च करै मुवारै केड़ ए, जीमाड़ै न्यातनै तेड़ ए ।
 तीन वारा दिन अनुमान ए, चौथो कालुणी दान ए
 ॥ ८ ॥ वर्ष छः मासौ श्राद्ध ए, जिम तिम करै कुल
 मर्याद ए । सूवां पहिलौ खर्च करै कौय ए, घणां नै
 तप्त करै सोय ए ॥ ९ ॥ आरम्भ कियां नहौं धर्म
 ए, जीमायां बन्धसी कर्म ए । बुद्धिवन्त करज्यो विचार
 ए, यांमें संवर निर्जरा नही लिंगार ए ॥ १० ॥ घणां
 री लज्जावश थाय ए, सांकड़े पद्यां देवें ताय ए ।
 देवै सचित्तादिक धन धान्य ए, यह तो पांचमो लज्जा
 दान ए ॥ ११ ॥ यह तो सावद्य दान साक्षात ए,
 बली दियो कुपात हाथ ए । तिणमें कहै मिश्र धर्म
 ए, तिणथी निश्चय बंधसी कर्म ए ॥ १२ ॥ मुकलीवा
 पहरावणी मोसाल ए, सगाने जोड़ जोड़ सम्भाल ए ।
 त्यांने द्रव्य देवे यश काम ए, गर्व दान छै तिणरो नाम
 ए ॥ १३ ॥ कौर्तिया वादी मल्ल ए, रावलिया रामत
 चल्ल ए । नट भौपा आदि विशेष ए, दान देवे त्यांने
 अनेक ए ॥ १४ ॥ इण दानथी बन्धे कर्म ए, मूर्ख
 कहै मिश्र धर्म ए । जेहनौ प्रत्यक्ष खोटी बात ए,

खोटी श्रद्धाने मूल मिथ्यात ए ॥ १५ ॥ गणिकादिक
 सेवे कुशील ए, दान देवे करावे कील ए । यह तो
 प्रत्यक्ष खोटी काम ए, अधर्म दान के तिणरो नाम ए
 ॥ १६ ॥ सूत्र अर्थ सिखाय ए, शुद्ध मार्ग आणे ठाय
 ए । आपे सम्यक्त्व चारित्र एह ए, धर्म दान के
 आठमो तेह ए ॥ १७ ॥ बले मिले सुपात्र आण ए,
 देवे निर्दूषण द्रव्य जाण ए । यह तो दान मुक्तिनो
 माग ए, तिण दिया दारिद्र्य जावे भाग ए ॥ १८ ॥
 कः काय मारणरा त्याग ए, कोई पचखे आण विराग
 ए । अभय दान कछो जिनराय ए, धर्म दानमें
 मिलियो धाय ए ॥ १९ ॥ सचित्तादिक द्रव्य अनेक
 ए, उधारा जिमि देवे विशेष ए । पाछो लेवारी मनमें
 ध्यान ए, नवमो काचन्ति दान ए ॥ २० ॥ लेणायतने
 देवे एह ए, हांती नेतादिक तेह ए । पाछो लेवणरो
 एकान्त काम ए, कन्ति दान के तिणरो नाम ए
 ॥ २१ ॥ नवमे दशमे दानरी चाल ए, धुरिया बोरै-
 वालो ख्याल ए । ज्ञानी माने सावद्य मांय ए, तिणमें
 मिश्र किहांथी थाय ए ॥ २२ ॥ दश दानरी यह
 विचार ए, संक्षेप कछो विस्तार ए । वीरनी आज्ञामें
 दान एक ए, आज्ञा बाहिर दान अनेक ए ॥ २३ ॥
 असंयति घर आवियो ए, निर्दूषण आहार वैरावियो

ए । तिणने दियां एकल पाप ए, भगवतीमें कष्टो
 जिन पाप ए ॥ २४ ॥ धर्म अधर्म दान दोय ए, पिण
 मिश्र म जाणो कोय ए । किमि जाणे मिथ्यात्वी जीव
 ए, मूलमें नहीं सम्वत्त्व नींव ए ॥ २५ ॥ इमि
 जाणीने करो विचार ए, पाठ अधर्म तणो परिहार ए ।
 घणा सूत्रांनी साख ए, श्रीवीर गया कै भाख ए ॥ २६ ॥

॥ चेतावनी ॥

चेत चतुर नर कहै तनै सत्गुरु, किस विधि तू
 ललवाना है । तन धन यौवन सर्व कुटुम्बी, एक
 दिवस तज जाना है । चेत० ॥ १ ॥ मोह मायाकी
 बड़ी भालमें, जिसमें तू लोभाना है । काल अहेरी
 चोट आकरी, ताक रह्यो नीशाना है । चेत० ॥ २ ॥
 काल अनादिरो तूही रे भटक्यो, तो पण अन्त न
 पाना है । चार दिनांकी देख चान्दनी, जिसमें तू
 लोभाना है । चेत० ॥ ३ ॥ पूर्व भवरा पुण्य योग
 धी, नरकी देही पाना है । मास सवा नौ रहा गर्भमें,
 जम्भै मुख झूलाना है । चेत० ॥ ४ ॥ मल मूत्रकी
 पशुचि कोथली, मांहे सांकड़ दीना है । रुधिर शुक्र-

नो आहार अपवित्र, प्रथम पणे तैं लीना है । चेत०
 ॥ ५ ॥ जंठ क्रोड़री मुई सारकी, ताती कर चीभाना
 है । तिणसूं अष्ट गुणी वेदना गर्भमें, देख्या दुःख
 असमाना है । चेत० ॥ ६ ॥ बालपणो ये खेल
 गंवायो, यौवनमें गर्वाना है । अष्ट प्रहर कीधी मद
 मस्ती, खोटी लाग लगाना है । चेत० ॥ ७ ॥ रङ्गी
 चङ्गी राखत देही, टेढ़ी चाल चलाना है । आठ पहर
 कीधी घर धम्बो, लग रच्चा आर्त्तध्याना है । चेत०
 ॥ ८ ॥ मात पिता सुत बहिन भाणजी, तिरिया सूं
 दिल चीना है । वे नहीं तेरे तूं नहीं उनका, स्वार्य
 लगी संगीना है । चेत० ॥ ९ ॥ अर्थ अनर्थ करी
 धन मेव्यो, घणांसूं बेर बंधाना है । लक्ष्मी तो तेरे
 लारै न चलसी, यहांकी थहां रह जाना है । चेत०
 ॥ १० ॥ ऊंचा ऊंचा महल चिणाया, करै घना
 कारखाना है । घड़ी एक राखत नहि घरमें, जालत
 जाय मशाना है । चेत० ॥ ११ ॥ धर्म सेती द्वेष न
 धरना, परभव सेती डरना है । चित्त आपनो देख
 मुसाफिर, करनी सेती तरना है । चेत० ॥ १२ ॥
 छिन छिनमें तेरी आयु घटत है, अञ्जली जैसे भरना
 है । क्रोड़ों यत्न करे बहु तेरा, तो पण इक दिन
 मरना है । चेत० ॥ १३ ॥ साधु सन्तकी सुनी न

दाणी, दान पात्र न दीना है । तप जप क्रिया कछू
 न कीधी, नरभव लाभ न लीना है । चे० ॥ १४ ॥
 चक्री केशव राजा राणा, इन्द्र सुरों का इन्दा है ।
 सेठ सेनापति सबही सानव, पड्या कालक्षे फन्दा है ।
 चेत० ॥ १५ ॥ यौवन गंवाय वूढा होय बैठा, तो
 पिण समय न आना है । धर्म रत्न तुम्ह हाथ न
 आयो, परभवमें पछताना है । चेत० ॥ १६ ॥

॥ कर्मनी सिञ्जाय ॥

देव दानव तीर्थङ्कर गणधर, हरि हर नरवर
 सबला । कर्म प्रमाणे सुख दुख पास्यां, सबल हुआ
 महा निवला रे । प्राणी कर्म समो नहीं कोई ॥ १ ॥
 (आंकड़ी) आदीश्वरजीने कर्म अटास्या, वर्ष दिवस
 रहा भूखा । वीरने वारह वर्ष दुख दीधा, उपना
 ब्राह्मणी कूखा रे । प्राणी० ॥ २ ॥ वत्तीस सहस्र देशोंरो
 साहिव, चक्री सनत्कुमार । सोलह रोग शरीरमें
 उपना, कर्म किया तनुछार रे । प्राणी० ॥ ३ ॥ साठ
 सहस्र सुत मास्या एकण दिन, जोधा जवान नर
 जैसा । सगर हुवो महापुत्र नो दुखियो, कर्मतणा फल
 ऐमारै । प्राणी० ॥ ४ ॥ कर्म हवाल किया हरि-

चन्दने, बेची सु तारा राणी । बारह वर्ष लग माथे
आण्यो, नीच तणे घर पाणी रे । प्राणी० ॥ ५ ॥ दधि-
वाहन राजानी बेटी, चावी चन्दन बाला । चौपद
ज्यों चौहटामें बेचौ, कर्म तणा ये चाला रे । प्राणी०
॥ ६ ॥ सम्भूम नाम आठवां चक्री, कर्मां सायर
नाख्यो । सोलह सहस्र यत्न ऊभा देखें, पिण किण
ही नवि राख्यो रे । प्राणी० ॥ ७ ॥ ब्रह्मदत्त नाम
बारहवां चक्री, कर्मांकीधो आन्धो । इमि जाणी प्राणी
ये कांडूं, कर्म कोई मति बान्धो रे । प्राणी० ॥ ८ ॥
कृष्ण करोड़ यादव नो साहिब, कृष्ण महावली
जाणी । अटवी मांहीं मुवो एकलडो, बिल बिल करतो
पाणी रे । प्राणी० ॥ ९ ॥ पाण्डव पांच महा जूभारा,
हारी द्रौपदी नारी । बारह वर्ष लग वन रड़वड़िया,
भमिया जेम भिखारी रे । प्राणी० ॥ १० ॥ बीस
भुजा दश मस्तक हुंता, लक्ष्मण रावण माख्यो । एक-
लड़े जग सह नर जीत्यो, ते पिण कर्मां सूं हाख्यो रे ।
प्राणी० ॥ ११ ॥ लक्ष्मण राम महा बलवन्ता, अरु
सतवन्ती सीता । कर्म प्रमाणे सुख दुःख पाम्यां, बीतक
बहुतसा बीता रे । प्राणी० ॥ १२ ॥ सम्यक्त्व धारी
श्रेणिक राजा, बेटे बान्धो मुसका । धर्मी नरने कर्मां
धकायो, कर्मां सूं जोर न किसका रे । प्राणी० ॥ १३ ॥

सती शिरोमणि द्रौपदी कहिये, जिन सम अवर न
 कोई । पांच पुरुषनी हुई ते नारी, पूर्व कर्म कमाई
 रे । प्राणी० ॥ १४ ॥ आभा नगरी नो जे स्वामी,
 साचो राजा चन्द । माई कीधो पत्नी कूकड़ो, कर्मा
 नाख्यो ते फन्द रे । प्राणी० ॥ १५ ॥ ईश्वर देव पार्वती
 नारी, कर्मा पुरुष कहावे । अहनिशि महल श्मशानमें
 बासो, भिक्षा भोजन खावे रे । प्राणी० ॥ १६ ॥ सहस्र
 क्षरण सूर्य परितापी, रात दिवसरहे अटतो । सोलह
 कला शशिधर जगचावो, दिन २ जाय घटतो रे ।
 प्राणी० ॥ १७ ॥ इमि अनेक खंडा नर कर्मे, भांज्या
 ते पिण साजा । ऋषिहर्ष कर जोड़िने विनवे, नमो
 नमो कर्मे महाराजा रे ॥ प्राणी० ॥ १८ ॥

— ० —

॥ जीवा तू तो भोलो रे की ढाल ॥

मोह मिथ्यात्वकी नौदमे, जीवा सोयो काल
 अनन्त । भव भव मांहे तू भटकियो, जीवा ते सारभल
 वृत्तन्त । जीवा तू तो भोलो रे, प्राणी इमि रुलियो
 संसार । जीवा० ॥ १ ॥ ऐसा कई अनन्त जिन हुषा,
 जीवा उत्कृष्ट ज्ञान अगाध । इण भवधी लेखो लियो,
 जीवा कौन बतावे घारी याद । जीवा० ॥ २ ॥ पृथ्वी

पानी अग्निमें, जीवा चौथी वायु काय । एक एक काया मध्ये, जीवा काल असंख्याता जाय । जीवा०
 ॥ ३ ॥ पांचवीं काया वनस्पती, जीवा साधारण प्रत्येक । साधारणमें तू ब्रह्मा, जीवा ते सांभली सु-
 विवेक । जीवा० ॥ ४ ॥ सूई अग्न निगोदमें, जीवा श्रेणी असंख्याती जाण । असङ्गता प्रतर एक श्रेणीमें, जीवा
 इमि गोला असंख्य प्रमाण । जीवा० ॥ ५ ॥ एक एक गोला मध्ये, जीवा शरीर असंख्याता जाण । एक
 एक शरीरमें, जीवा जीव अनन्ता प्रमाण । जीवा०
 ॥ ६ ॥ तेमांथी अनादि जीवड़ा, जीवा मोक्ष जाव दृगचल । एक शरीर खाली न हुवे, जीवा न हुवे
 अनन्ते काल । जीवा० ॥ ७ ॥ एक एक संभवी सङ्गे, जीवा भव अनन्ता हीय । बली विशेषे जाणिये, जीवा
 जन्म मरण तू जोय । जीवा० ॥ ८ ॥ दीय घड़ी काची मध्ये, जीवा पैसठ सहस्र सौ पांच । बत्तीस
 अधिका जाणज्यो, जीवा यह कर्मांनी खांच । जीवा०
 ॥ ९ ॥ छेदन भेदन वेदन वेदना, जीवा नरकी सही बारम्बार । तिणसिती निगोदमें, जीवा अनन्त गुणी
 विचार । जीवा० ॥ १० ॥ एकीन्दी मांय थी निकल्यो, जीवा इन्द्रिय मांयो दीय । तब पुण्याई ताहरी, जीवा
 ते बी अचन्ती होय । जीवा० ॥ ११ ॥ इमि ते इन्द्रिय

क्षौद्रन्द्रिय जीवमां, जीवा बबे लाख ये जात । दुःख
 दोठा संसारमें, जीवा सुगता अचरिज वात । जीवा०
 ॥ १२ ॥ जलचर थलचर खेचरु, जीवा उरपुर भुजपुर
 जात । शीत ताप तृषा सहौ, जीवा दुःख सच्चा दिन
 रात । जीवा० ॥ १३ ॥ इमि भ्रमन्ता जीवड़ो, जीवा
 पास्या नर भव सार । गर्भावासमें दुःख सच्चा, जीवा ते
 जाणे करतार । जीवा० ॥ १४ ॥ मस्तक तो हिंठो हुवे,
 जीवा ऊपर रहे बेहू पाय । आंख्यां आड़ो मुष्टि बेहू,
 जीवा इमि रच्चा विछा घर मांय । जीवा० ॥ १५ ॥
 वाप वौर्य माता रुधिर, जीवा इसड़ो लिया थे आहार ।
 भूल गयो जन्म्या पछे, जीवा सेवी करे अविचार ।
 जीवा० ॥ १६ ॥ ऊठ करोड़ सुई लाल करे, जीवा
 चांपे रुंरुं माय । अष्ट गुणी हुवे वेदना, जीवा गर्भा-
 वासा रे माय । जीवा० ॥ १७ ॥ जन्मता हुवे करोड़
 गुणी, जीवा मरता करोड़ां करोड़ । जन्म मरणनी
 जीवने, जीवा जाणज्यो माटो खोड़ । जीवा० ॥ १८ ॥
 देश अनाय उपनो, जीवा इन्द्रिय हीणी होय । आयुषो
 छोछा हुवे, जीवा धर्म किसी विधि होय । जीवा०
 ॥ १९ ॥ कदाचित् नरभव पामियो, जीवा उत्तम कुल
 अवतार । देही निरोगी पायने, जीवा यों ही खोयो
 अन्नवार । जीवा० ॥ २० ॥ ठग फांसीगर चोरटा, जीवा

भीवर कमाई री न्यात । उपजीने न मूओ जिसी,
 जीवा ऐसी न रही कोई जात । जीवा० ॥ २१ ॥ चौदह
 ही राजलोकमें, जीवा जन्म मरण री जोड़ । खाली
 बालाग्रमात्र यह, जीवा ऐसी न रही कोई ठोड़ ।
 जीवा० ॥ २२ ॥ यही जीव राजा हुवो, जीवा हस्ती
 बान्ध्या बार । कबहिक कर्मा वशे, जीवा न मिले अन्न
 उधार । जीवा० ॥ २३ ॥ इमि संसार भमतो थको,
 जीवा पाव्यो सम्यक्त्वसार । आदरी ने छिटकाय दिवि,
 जीवा जाय जमारी हार । जीवा० ॥ २४ ॥ खोटा देवज
 अद्विशा, जीवा लागो कुगुरु कीड़ । खोटा धर्मज आदरी,
 जीवा कीध चउगत फेर । जीवा० ॥ २५ ॥ कबहिक
 नरके गयो, जीवा कब हौ हुवो तू देव । पुण्य पापना
 फल थकी, जीवा लागी मिथ्यात्वना ठेव । जीवा०
 ॥ २६ ॥ ओगाने बले मूमती, जीवा मेरु जितरी लीध ।
 एक हौ सम्यक्त्व बिना, जीवा कार्य नहीं हुओ सिद्ध ।
 जीवा० ॥ २७ ॥ चार ज्ञान तणा धणी, जीवा नरक
 सातवीं जाय । चौदह पूर्वना भण्यो, जीवा पड़े
 निगोदने मांय । जीवा० ॥ २८ ॥ भगवन्त ना धर्म
 पाल्यां पछे, जीवा करणी ने जावे फोक । कदाचित्
 पड़वाई हुवे, जीवा अर्ध पुद्गल मांहे मोक्ष । जीवा०
 ॥ २९ ॥ सूक्ष्मने वादर पणे, जीवा मेली वर्मणा सत ।

एक पुङ्गव प्रावर्तनौ, जीवा भीणी घणी छे दात । जीवा०
 ॥ ३० ॥ अनन्त जीव मुक्ते गया, जीवा टालौ आत्म
 दास । नहीं गया नहीं जावसौ, जीवा एक निगोदना
 मोख । जीवा० ॥ ३१ ॥ पाप आलोई आपणा, जीवा
 अवत नाला रोक । तेथी देवलोक जावसी, जीवा पन्द्रह
 भव सांहे मोक्ष । जीवा ॥ ३२ ॥ एहवा भाव मुणी करी,
 जीवा श्रद्धा आणी नाय । ज्यू आयो तिमिहिज गयो,
 जीवा लख चौगसी मांय । जीवा० ॥ ३३ ॥ कई
 उत्तम नर चिन्तवे, जीवा जाणे अस्थिर संसार । साचो
 मार्ग श्रद्धिने, जीवा जाये मुक्ति मंभार । जीवा० ॥ ३४ ॥
 दान शील तप भावना, जीवा दूगसूं राखो प्रेम ।
 क्रीड़ कल्याण के तेहने, जीवा कृपि जयमलजी कहे
 ऐस । जीवा० ॥ ३५ ॥

॥ यौवन धन पावणाको ढाल ॥

हाड़ चामका बना रे पृतला, भीतर भस्त्रा रे
 भगडारा, ऊपर रत्न सुवङ्ग लगाया, कारीगर कर्तारा ।
 यौवन धन पावणा दिन चारा । ओजी याकी गर्व करै
 सो गंवारा ॥ १ ॥ पशुकी चामका बनत पन्हैया,

जीवत और नगारा । नरकी तो चाम ककु काम नहीं
 आवे, जल बल हा जायगा छारा । यौ० ॥ २ ॥ यह
 संसार सकल विधि झूठो, झूठो सब परिवारा । कहत
 कबोर सुनो भाई जीवो, प्रभु भजि निस्तारा । यौ०
 ॥ ३ ॥

॥ उपदेश पच्चीसो ॥

(जुहारा जाटका गढ़ जैपुर बांकारे एदेशी) ---
 चौरासीमे चाक ज्योरे, करो करी कर्म कठार ।
 घरटो ज्यों फिरियो घणोरे, पाम्यो दुःख अघोर ।
 सुजानी जीवड़ा करणी भले कीजैरे ॥ १ ॥ काज सरे
 करणी कियारे, भाष गया भगवन्त । अल्प दुखाने
 आदखारे, आगे मुख अनन्त । सु० ॥ २ ॥ सतगुरु
 सीख माने नहीरे, राखे खोटो रुठ । पुण्य हीनाते
 बापड़ारे, महा मिथ्यात्वी मूठ । सु० ॥ ३ ॥ पाप
 करीने प्राणियारे, नरकां करे निवास । भूंडा फल
 तहां भोगवेरे, नाखे हिये निःश्वास । सु० ॥ ४ ॥ पाप
 चितारे पाछलारे, अधर्मी सुर आय । जिमि कीधा
 कर्म जीवड़ेरे, तिमि भुगतावे ताय । सु० ॥ ५ ॥
 रोवे भूरे रांकज्योरे, अधिका दुःख अनन्त । यम गाढ़ा

बैरी जिसारे, पौड़ा बहुत करन्त । सु० ॥ ६ ॥ वर्ष
 दशहजारनारे, जवन्य आयुषा जाण । उत्कृष्टी सागर
 तैतासनारे, भाष गया जगभाण । सु० ॥ ७ ॥ नीठ
 नरकांसु नीसखार, तिर्यञ्च मांहीं तास । भांति भांति
 दुःख भोगवे रे, सूत्र मांही समास । सु० ॥ ८ ॥
 हलका कर्म पड्या हुवे रे, पुण्य तणे प्रभाव । माणस
 हुवे सोढकारे, मखरा सरल स्वभाव । सु० ॥ ९ ॥
 जाडा नहीं कर्म जेहने रे, आय मिले अणगार । पांच
 महाव्रत पालता रे, धीरा महा गुणधार । सु० ॥ १० ॥
 दयावन्त ऋषि देखने रे, लुल लुल लागे पाय । प्रद-
 क्षिणा देई प्रेमसूंरे, नीची शीश नमाय । सु० ॥ ११ ॥
 साधुजी सूत्र साखथी रे, दे रुडा उपदेश । काया
 माया कारमी रे, राखो धर्मरी रेश । सु० ॥ १२ ॥
 साधु वचन सुणी हुलसेरे, घटमें आवे ज्ञान । सुख
 सगला संसारनारे, जाण्या जहर समान । सु० ॥ १३ ॥
 बैराग्ये मन बालने रे, साधपणो ले सार । उत्तम कीर्त
 आदरे रे, विधि सेतौ व्रतवार । सु० ॥ १४ ॥ करणी
 कर कर्म काटने रे, पूरा संच्या पुण्य घाट । दया
 पाली हुवे देवता रे, गहगा सुख गह गाट । सु०
 ॥ १५ ॥ देवाहनाघनी दीपती रे, जपे जय जयकार ।
 पल आगर लागि प्रेमसूं रे, सुख विलसे संसार । सु०

॥ १६ ॥ पुण्यवन्त पामे बलौ रे, उत्तम कुल अव-
 तार । घर सम्पत्ति हुवे घणी रे, बहुत बचावे बहार ।
 सु० ॥ १७ ॥ चारित्र लेइ चंपसूं रे, आठ कर्म करि
 अन्त । पामे परम गति पांचवीं रे, अविचल सुख
 अनन्त । सु० ॥ १८ ॥ साधुजी चन्दन सारखा रे,
 टाले तन मन ताप । निर्भागी वन्दे नही रे, पोते भारी
 पाप । सु० ॥ १९ ॥ साधुजी नावां सारखा रे, पहुं-
 चावे भव पार । नेछा पिण ठूँकी नहीं रे, निर्भागी
 नर नार । सु० ॥ २० ॥ भिन्न २ भेद भाषि भलाजी,
 उपकारी अणगार । निर्वुद्धि समझे नहीं रे, घटमें
 घोर अन्धार । सु० ॥ २१ ॥ वैश्या सङ्गति बेसतारि,
 ब्रतरी होय विनाश । शुद्ध समकित विनशि सही रे,
 पांषण्डियां रे पास । सु० ॥ २२ ॥ एक घड़ी आधी
 घड़ी रे, साधुजी संगति पाय । चलायती नामे चोर
 ज्यों रे, जाव भलौ गति जाय । सु० ॥ २३ ॥ संवत्
 अठारहसै साठमै रे, वदी आश्विन सोमवार । वारस
 तिथि बीदासरे रे, आखी ढाल उदार । सु० ॥ २४ ॥
 उपदेश पच्चीसौ ओपती रे, जोड़ी जुगते जाण । ऋषि
 चन्द्रभान रुडे मने रे, चितो चतुर सुजाण । सु०
 ॥ २५ ॥

॥ सुगुरु पच्चीसी ॥

सुगुरु पिछाणो दूण आचारे, सम्यक्त्व जेहने
 ज्ञाना । कहणी करणी एकज सरखी, अहनिशि धर्म
 बलुअजी । सु० ॥ १ ॥ निरतिचार मंहाव्रत पाले,
 टाले सगला दाषजी । चारित्रसं लयलीन रहे नित्य,
 चित्तमे सदा सन्तोषजी । सु० ॥ २ ॥ जोष सहूना
 जे छे पौहर, पौड़े नहों षट काय जी । आप वेदन
 पर वेदन सरीखी, न हगे न करे घाय जी । सु० ॥ ३ ॥
 सोह कर्मने जे वश न पड़े, नीरागी निर्माय जी ।
 जयणा करतो हलवें चाले, पूंजी सूखे पायजी । सु०
 ॥ ४ ॥ अरहो परहो दृष्टि न देखि, न करे चालतां
 वातजी । दूषण रहितं मूक्तो देखि, तो लिये पाणी
 मातजी । सु० ॥ ५ ॥ भूख तषा पीडां दुख पीड़े,
 छूटे जो निज प्राणजी । तो पिण अशुद्ध आहार न लेवे,
 जिनवर आप प्रमाणजी । सु० ॥ ६ ॥ अरस नीरस
 आहार गवेये, सरस तणी नहिं चाहजी । इमि करतां
 जो सरस मिले तो हर्ष नहों मन मांहजी । सु० ॥ ७ ॥
 शीत काले शीते तनु सूखे, ऊनाले रवि तापजी ।
 विषट परिसह घट अहियासे, नाणे मन सन्तोषजी ।
 सु० ॥ ८ ॥ मारे कूटे करे उपद्रव, कीर्ड कलङ्क दे

शीशजी । कर्म तथा फल जाणो उद्दी रे, पिण नाणे
 मन रीस जी । सु० ॥ ९ ॥ मन वच काया जी नवि
 डण्डे, काण्डे पांच प्रमाद जी । पांच प्रमाद संसार
 बधारे, जाणे ते निःस्वाद जी । सु० ॥ १० ॥ सरल
 स्वभाव भावे मन रूढ़े, न करे वाद विवाद जी । चार
 कषाय कर्मना कारण, वर्जे मद उन्माद जी । सु०
 ॥ ११ ॥ पाप स्थान अठारह वर्जे, न करे तासु प्रसङ्ग
 जी । विकथा मुख थो चार निवारे, सुमति गुप्ति सुरङ्ग
 जी । सु० ॥ १२ ॥ अङ्ग उपाङ्ग सिद्धान्त बखाणे, दे
 सूधो उपदेश जी । सूधे मार्गे चाले चलावे, पंचाचार
 विशेष जी । सु० ॥ १३ ॥ दश विध यति धर्म जिन
 भाष्यो, तेहना धारणहारजी । धर्म थकीजे किमि ही
 न चूथो, जो हुए क्रीड़ प्रकार जी । सु० ॥ १४ ॥ जीव-
 तणी हिंसा जी न करे, न वदे मृषावाद जी । तृणमात्र
 अण द्वीधो न लेवे, सेवे नहीं अब्रह्मजी । सु० ॥ १५ ॥
 नव विधि परिग्रह मूल न राखे, निशि भोजन परिहार
 जी । क्रोध मान मायाने समता, न करे लोभ लिगार
 जी । सु० ॥ १६ ॥ ज्योतिष आगम निमित्त न भाषे,
 न करावे आरम्भ जी । औषध न करे नाड़ी न जीवे,
 सदा रहे निरारम्भजी । सु० ॥ १७ ॥ डाकिनी शाकिनी
 भूतणी न काढे, न करे हलवो हाथ जी । मन्त्र यन्त्रनी

राखड़ी करी ते, नवि आपे परमार्थ जौ । सु० ॥ १८ ॥
 विचरे ग्राम नगर पुर सगले, न रहे एकण ठाम जौ ।
 चौसासोऊपर चौसासो, न करे एकण ग्राम जौ । सु०
 ॥ १९ ॥ चाकर नौकर पास नवि राखे, न करावे
 कोई काज जौ । न्हावण धोवण वेश वणावण, नहीं
 करे शरीर नो साज जौ । सु० ॥ २० ॥ व्याज बट्टानो
 नास न जाणे, न करे वणिज व्यापार जौ । धर्म हाट
 सागड़ी ने बैठा, वणिजे पर उपकार जौ । सु० ॥ २१ ॥
 ते गुरु तरें औरांने तारें, सागर मां जिमि जहाज
 जौ । काष्ठ प्रसङ्गे लाह तरे जिमि, तिमि सुगुरु सङ्गति
 पाज जौ । सु० ॥ २२ ॥ सुगुरु प्रकाशक लोचन
 सरिखा, ज्ञान तणा दातार जौ । सुगुरु दीपक घट
 अन्तर किरा, दूर करे अन्धकार जौ । सु० ॥ २३ ॥
 सुगुरु अमृत सरीखा शीतल, देय असर गति वासजी ।
 सुगुरु तणौ सेवा नित्य करतां, कूटे कर्मनो पाशजी ।
 सु० ॥ २४ ॥ सुगुरु पचासो श्रवणे सुणींने, करज्यो
 सुगुरु प्रसङ्ग जा । कहै जिन हर्ष सुगुरु सुपशाये,
 ज्ञान हर्ष उकरइजौ । सु० ॥ २५ ॥

॥ कुगुरु पच्चीसी ॥

श्रीजिनवाणी हिये धरो, कुगुरु तणी संगति परि-
हरो । लोह खीलारां साथी जेह, कुगुरु तणा छै लच्छन
एह ॥ १ ॥ कालो सांप कुगुरु स्यं भलो, एक बार करै
मामलो । कुगुरु भवोभव दुःख देह । कुगुरु ॥ २ ॥
पृथ्वी पाणी अग्नि ने वाय, वनस्पती छठी तस काय ।
एह तणी रक्षा न करेह । कुगुरु० ॥ ३ ॥ पापतणा
थानक अठार, तेतो सेवै बारम्बार । संयमलार उड़ावे
खेह । कुगुरु० ॥ ४ ॥ धुरसूं पञ्च महाव्रत धारे, सर्व
सावद्य त्याग उच्चारें । चारित्र भांजि रंजि देह । कु-
गुरु० ॥ ५ ॥ परिग्रह सेती राखे मोह, धनने काजि
करे पर द्रोह । प्रभु वचसूं बीहै नवि जेह । कुगुरु०
॥ ६ ॥ अशनादिक चारों आहार, राते पिण न करे
परिहार । दोष दुर्गतिनी विधारी देह । कुगुरु० ॥ ७ ॥
पाणी काचो ने बावरे, आपतणी दूषण छावरे ।
चारित्र भंज्या रंजन देह । कुगुरु० ॥ ८ ॥ मोटी
पदवी बाजै घणी, लोकां मांहे प्रसुतां घणी । तैपण
करणी खोटी करेह । कुगुरु० ॥ ९ ॥ पावा दिवगवै
बीटणा, गुण हीना ने अवगुण घणा । गृहवासीनी परे

वसेह । कुगुरु० ॥ १० ॥ खीर शक्कर थरमाग वड़ी,
 गर्व हिये विभूषा करी । खाद्य मिलन वा सांसो
 धरेह । कुगुरु० ॥ ११ ॥ गृहस्थ जिसि करे व्यापार,
 वेचे वस्त्र पुस्तक मार । व्याज बटे धन उपजावेह ।
 कुगुरु० ॥ १२ ॥ आठ पहरजे साठ घड़ी, पांच प्रमाद
 सं प्रीतड़ी । क्रिया पड़िकमगो न करेह । कुगुरु०
 ॥ १३ ॥ बैठिया पोठिया चलावे भार, गाड़ी बैठी
 करे विहार । ईर्या सुसति किसी पालेह । कुगुरु०
 ॥ १४ ॥ हमै गुरुसै बोले फारसौ, न्हाय धोय जोवै
 आरसी । रङ्गा चङ्गा रहे निःस्मन्देह । कुगुरु० ॥ १५ ॥
 अभक्ष्य आहार ने आड़ा पड़े, सीख दिया तो उलटा
 लड़े । आपानन्द न पचखाणेह । कुगुरु० ॥ १६ ॥
 सेवे देवी दुर्गा मात, वरणी करे बैसे नय बात । दुष्ट
 जाप दिल सांह करेह । कुगुरु० ॥ १७ ॥ रात दिवस
 औषध आरम्भ, गोली चूर्ण करे मन रङ्ग । नाड़ी
 तिगंछा वैद्यक करेह । कुगुरु० ॥ १८ ॥ विषय कितोल
 कथा दाहे चरित्र, वांचे कान करे अपवित्र । शुद्ध कथा
 न सम्भलावेह । कुगुरु० ॥ १९ ॥ पीले न चाले सूधे
 राप्ता, औरां शह चलावे काहा । कामग चोराहा
 देणेह । कुगुरु० ॥ २० ॥ गश्त पान कर पैसा लीए,
 कामग सोह वश करदीए । पाप दुष्ट कर पेट भरेह ।

कुगुरु० ॥२१॥ मुखसे कहें अमेकां यती, पिण आचार
 न जाने एक रती । अणाचारी चाल चालेह । कुगुरु०
 ॥ २२ ॥ पापी श्रमण पीड़ पाप भरेह, शुद्ध साधारी
 निन्दा करेह । नरक दुःखांसूं नहौ डरेह । कुगुरु०
 ॥ २३ ॥ कुगुरु पचीसी जाणी खरी, कहे जिन हर्ष
 कुमति परिहरी । सुगुरु सेवे भव जल तिरेह । कुगुरु०
 ॥ २४ ॥

* स्त्री चरित्र की ढाल *

ढाल ६ ठो नणदल हे नणदल एदेशी ।

सतीयां तो सौता सारणी ज्यांरा जिनवर किया
 बखाण भवियण कुसती कपिला सारणी त्यांरि कर
 लीज्यो पिछाण भवियण चरित्र सुणों नारी तणां ॥१॥
 छोड़ी संसार नों फंद । भ० । सौलवंता नर सांभलै
 ते पांमैं परम आणंद । भ० च० ॥ २ ॥ कुसती मैं
 ओगण घणां । भाष्या श्री जिनराय । भ० । थोड़ासा
 परगट करूं ते सुणज्यो चितलाय । भ० च० ॥ ३ ॥
 नारि कुड़ कपट निं कोथली ओगण नों भंडार । भ० ।
 कल्ह करवा नैं सांतरि भेद पड़ावणहार । भ० च०

॥ ४ ॥ देहली चढ़ती डिगपडै चढ़ ज्यावे डुंगर अस-
मान । भ० । घरमें बैठौ छर करै राते जाय मसांग ।
भ० च० ॥ ५ ॥ देख विलाड ओदकै सिंघनै रुमुख
जाय । भ० । साप उसीसै दे सोवै जंदर स्युं भौड-
काय । भ० च० ॥ ६ ॥ कोयल मोर तणौ परै बोलै
सीठा बोल । भ० । भीतर कडवि कुटकसि बाहिर
करै किलोल । भ० च० ॥ ७ ॥ खोण रोवै खिण मै
हमै खिण मुख पाडै बूँव । भ० । खिण राचे विरचै
खिणौ खिण दाता खिण सूंम । भ० च० ॥ ८ ॥ धर्म
करतां धुंकल करै औसौ नार अलाम । भ० । बन्दर
ज्युं नचावे निज कांघ नैं जागैक असल गुलाम । भ०
च० ॥ ९ ॥ नारि नैं काजल कोटडी ए वेहुं एकज
रङ्ग । भ० । काजल नर कालो करै नारि करै सिल
भंग । भ० च० ॥ १० ॥ नारी नैं वन बेलडी दीनूं एक
स्वभाव । भ० । कंटक रुंख कुसौल नर तिण स्युं वेहुं
लग ज्यात । भ० च० ॥ ११ ॥ नाम छै अवला नार
नों पण सर्वालि छै ईण संसार । भ० । सवला सुर नर
तेहनें नीमला कर दीया नार । भ० च० ॥ १२ ॥ सुर
नर किनर देवता त्यानैं पिण वस कीया नार । भ० ।
नाग्या नरक निगोदमें त्यांरि तो वस्व नैं वार । भ०
च० ॥ १३ ॥ नैण वेंग नारी तणां वचनज तोखा मैल ।

भ० । अंग तीखो तरवार ज्युं ईग माखो सकल
 संकेल । भ० च० ॥१४॥ बिरचौ तो बाघण ख्युं बुरी
 खो अनरथ लूल । भ० । पाप करी पोतै भरै अंग
 उपजावै शूल । भ० च० ॥१५॥ मोर तणीं पर नेहनां
 बोलै मौठा बोल । भ० । साप सैं पूछा ईगलै पाडलैवै
 नर भोल । भ० च० ॥ १६ ॥ पुरुष पोतै कपडा जौसो
 नरगुण नंविं भांत । भ० । नारौ कातर बस पड्यां
 काटै है दिन रात । भ० च० ॥१७॥ बाघण बुरी बन
 मांयली बिलगी पकडि खाय । भ० । नारौ बाघण बस
 पड्यां नर न्हासो किहां जाय । भ० च० ॥१८॥ फाटां
 कांनारौ जोगणीं तिन लोकनैं खाय । भ० । जीवन्ती
 चुगटै कालजो मुवां नर्क ले जाय । भ० च० ॥ १९ ॥
 नारौ लखणां नाहेरि करै बचनरी चोट । भ० । कीडक
 सन्त जिन उबख्या लिधी दया नीं ओट । भ० च०
 ॥ २० ॥ तीया मदन तलावडी डुब्यो बहु संसार ।
 भ० । कीडक उत्तम नर उबख्या सत गुर बचन
 सम्भाल । भ० च० ॥२१॥ जिम जलोक जल मांयेलि
 तीम नारौ पिण जाण । भ० । वालागी लोही पियै ।
 नारौ पियै निज प्रान । भ० च० ॥२२॥ राता कपडा
 पह्रै नैं काठा बांध्या साधारा कीस । भ० । हांतां
 सैन्धी लगाय नैं ईग ठगोरि ठगौयो सारो देस । भ०

च० ॥ २३ ॥ लोक कहै यहै बारसों लागीं हगैं प्राण ।
 भ० । नाखै नरक निगोदसैं नारी नव ग्रैह जांणा ।
 भ० च० ॥ २४ ॥ दुग संसार असार सैं तिण सैं माटि
 गाल । भ० । सांगस खोडै मारी जै गावै टोडर
 माल । भ० च० ॥ २५ ॥ नगर उजीणीं नों राजौयो
 हरचंद नामैं राय । भ० । सोमला उपर मोहियो
 नाख्यो नंदियै बुहाय । भ० च० ॥ २६ ॥ जहर दियो
 निज कंथ नैं नाम जसौदा नार । भ० । कंथ मार
 काष्टे चढ़ी गई नरक संभार । भ० च० ॥ २७ ॥ ब्रह्म-
 दत्त चक्रवर्त बारसों तेहनों चुलणीं मात । भ० ।
 विपैरी वाहि थकी करवा मांडि पुत्र नों घात । भ०
 च० ॥ २८ ॥ परदेसी राजा तणीं मुरीकंधा नार ।
 भ० । स्वार्थ न पुगो जांण नैं माख्यो निज भरतार ।
 भ० च० ॥ २९ ॥ वरस वारै वन सेविया लिछमण
 नैं श्रीराम । भ० । दसरथ दुख सच्या घणां तेतो कैकै-
 बुरा काम । भ० च० ॥ ३० ॥ कुणंक बहल कुमारकै
 साख्यो साहा संग्राम । भ० । हार हाथी नैं कारैगैं
 तेतो पद्मावति रा काम । भ० च० ॥ ३१ ॥ धारणीं
 नाथ धुजावियो असीनारि अजोग । भ० । मुंज राजा
 तणो जय कियो ते पिण नारी तणीं संजोग । भ०
 च० ॥ ३२ ॥ माहासतक ग्रावक वरे हुई रेवती नार ।

भ० । भीष्ट करवा भरतार नैं आर्द्र पोसा संभार ।
 भ० च० ॥ ३३ ॥ देवदत्त सुनार नां पुत्रनी हुई कुपा-
 तर नार । भ० । देव कुली नैं धीज उतरी मुसरा नैं
 झुठो पाड । भ० च० ॥ ३४ ॥ कपिला पटराणीं राजा-
 तणीं तिण कीधी माह्वतस्युं प्रीत । भ० । तिण आलदे
 नाहक मरावीयो हुई बहुत फंजीत । भ० च०
 ॥ ३५ ॥ अभिया राणीं नैं कपिला ब्राह्मणी सेठनैं दीया
 उपसर्ग अनेक । भ० । सेठ सुदर्शन चली योंहीं मन
 मै आंण बिबेक । भ० च० ॥ ३६ ॥ ओगुण कछ्वा
 कुसत्यां तणां कहतानैं आवै पार । भ० । सतीयां रा
 गुण छै अति घणां त्यांरो तो बहुत विस्तार । भ० च०
 ॥ ३७ ॥ अठै कपिलारै ओगणा तणीं चाल्यो छै दूध-
 कार । भ० । सेठनैं अंगस्युं भीडीयो पिण सेठन चलीयो
 लिगार । भ० च० ॥ ३८ ॥

॥ दुहा ॥

नर नारी दोनुं सरिखा मित्यां अधिको बधै सनेह ।
 सुगणानैं नीगुणो मीलै तो तटकै तुटै नेह ॥ १ ॥ सेठ
 डरपै सर्व नारभ्युं तिणनैं उपसर्ग उपज्यो जाण । एक
 मासमैं च्यार पोसा करै राते जाय मसांण ॥ २ ॥ कर्म
 धर्म संभालतां मुखे गमावै काल । किण विध उपसर्ग
 उपजै किण विध आवै आल ॥ ३ ॥ धात्री बाइन

राजातणीं पटरांणी अभिया नार । रूपे रंभा सारणी
 मुख भोगवै संसार ॥ ४ ॥ तिण चंपा नगरी बाहिरै
 ईसांण कुंणरै मांय । वाग एक छै रलियां मणीं छै
 उत्तम सुखदाय ॥ ५ ॥ ते फल्यो फुल्यो रहै सदा पिण
 वसंतरुत विशेष । तिहां नरनारी अनेक क्रिड़ा करै
 मुख पामैं नीजरां देख ॥ ६ ॥ अभिया रांणीं तिणसमैं
 आई वसंतरुत जांण । वाग सुंख्यो फुल्यो फल्यो जब
 बोलै एहवी वांण ॥ ७ ॥

सुदर्शण सेठ के बखान की ॥ ढाल ३२ वीं ॥

(आज आणंद मन उपैनों सुण प्राणीरे एदेशी)

मनरो मनोरथ पूरो थयो । सुंणप्रांणीरे । मम-
 चिंताविया सरीया काज आज सुंण प्रांणीरे । जगमें
 जस फ़ैल्यो घणीं । सु० । म्हांरी रही सीलस्युं लाज ।
 आ० ॥ १ ॥ संजम पाखै तूं जीवड़ा । सु० । पामैं
 नहीं भव पार । आ० । जनम मरण करतो थको ।
 सु० । भमीयों ईण संसार । आ० ॥ २ ॥ कवु एक
 नरक निगोद में । सु० । कवु एक तिर्यंच मंभार ।
 आ० । कवु एक सुर नर देवता । सु० । ईण रीतै
 भमीयों संसार । आ० ॥ ३ ॥ कवु एक ईष्ट संजोगीयो ।

सु० । कबु एक ईष्ट वियोग । आ० । कबु एक भोग
 न भोगव्या । सु० । कबु एक अति घणों सोग । आ०
 ॥ ४ ॥ ईण रीतै भमतो थकी । सु० । मिथ्यो नहीं
 भ्रम जाल । आ० । अबै अपूरव पांमीयों । सु० । श्री
 जिनधर्म संभाल । आ० ॥ ५ ॥ धर्म तणां जैतन करो ।
 सु० । अब ईसो अवसर पाय । आ० । धर्म बिहुंषां
 मानवीं । सु० । गया जमारो गमाय । आ० ॥ ६ ॥
 अब पंच महाव्रत आदरुं । सु० । छोड़ीनैं परिग्रह-
 वास । आ० । बारै भेदे तपतपुं । सु० । ज्युं पामुं
 सिवपुर बास । आ० ॥ ७ ॥ इम भावतां भावनां ।
 सु० । आण्यो अतिही बैराग । आ० । जो इहां साध
 पधारसी । सु० । तो करस्युं संसार नां त्याग । आ०
 ॥ ८ ॥ इम भावनां भावतां । सु० । साधु बाट जोवै
 तांह । आ० । तो संजम लेस्युं निश्चै करी । सु० ।
 इणमें शंका नहीं तिलकाय । आ० ॥ ९ ॥ सुध पर-
 णांमां भावै भावनां । सु० । दुबध्या दुरेटाल । आ० ।
 साचै मन भावै भावनां । सु० । सफल बीतै ते काल ।
 आ० ॥ १० ॥

❀ दोहा ❀

तिण कालैनैं तिण समैं चोनांणीं अणगार । धर्म-
 घोष थिवर समोसखा । साथे साधारो बहु परिवार

नहीं वंदिया दान देवानै' सुंजरे । ते भिक्षा मांगत
 घर र फिरै भटकै भांड जिम डुंमजरे ॥ अ० ॥ १३ ॥
 साधुनै' बांढा भल भावस्युं दोधो अढलक दांनजरे ।
 तेतो भरथे सर जाणज्यो ज्यांरो पर सिधलोकमें नांमव
 रे ॥ अ० ॥ १४ ॥ साधानै' बांढां थकां कटे करमारा
 फंदजरे । नीच गोत्ररो जय करै उंच गोत्ररो वंदजरे
 ॥ अ० ॥ १५ ॥ चोथी गत देवता तणीं भाषी श्रीमुनि-
 रायजरे । सुख तिहां नित भोगवै कुंण कर्म उपवै
 जायजरे ॥ अ० ॥ १६ ॥ वैराग संजम पालै सदा ए
 आवकरो धर्मजरे ते स्वर्ग लोकमें उपजै बांधिनै' सुध
 कर्मजरे ॥ अ० ॥ १७ ॥ उर अक्राम निरजरा करी
 अत्यांन तप करै जाणजरे । ते सौल पालै लज्या करी
 ते उपजै वैमाणिकजरे ॥ अ० ॥ १८ ॥ पांचमी गत
 सिधां तणीं अनंत सुखारौ खांणजरे । कीण करसौ
 कर उपजै सिद्ध गत मांहे आंणजरे ॥ अ० ॥ १९ ॥
 पंच महाव्रत आदरै' सहै परिसाबोस दोयजरे । वारै
 भेदे तप तपै तेहनै' सिद्धगत होयजरे ॥ अ० ॥ २० ॥
 देव अरिहंत नै' ओलख्या ओलख्या गुरु निग्रंथजरे ।
 धर्म दयामय आदरै एहीज मुक्तरो पंथजरे ॥ अ०
 ॥ २१ ॥ तोन कालनां सुखदेव तांतणां भेला कीर्त
 कुलजरे । तेहनै' अनंति वर्ग वधारियै नहीं मि

सुखारै तुलजरे ॥ अ० ॥ २२ ॥ ते पिण सुख कै
 सासता नहीं आवै तेहनों पारजरे । संसारनां सुख कै
 कारमां जातां न लगै बारजरे ॥ अ० ॥ २३ ॥ ए
 संसारनां सुख थिर नहीं जैसी आभा रिबायजरे ।
 बीण संतां बार लागै नहीं जैसौ कायर बांहजरे ॥
 अ० ॥ २४ ॥ तन धन जोवन कारमों जैसो कसुंबल
 रंगजरे । दीन सात पांचका पेखणां पकै होय जाय
 विरङ्गजरे ॥ अ० ॥ २५ ॥ गर्भ जनम मरण तणां
 भाष्या श्रीजिनरायजरे । ते धर्म कीया थी कुटौयै धर्म
 दयामय थायजरे ॥ अ० ॥ २६ ॥ इम जांणी धर्म
 आदरो ठील न कीजै तामजरे । सो खीण जावै सो
 आवै नहीं ते सुण राखो चित ठामजरे ॥ अ० ॥ २७ ॥

॥ दुहा ॥

धर्म कथा सुण परखदा हिवडै हरषित थाय ।
 सगत सारु ब्रत आदरी आया जीण दिस जाय ॥१॥
 सेठ सुदर्शन तिण समै बोल्यो जाड़ी हाथ ।
 पाकलै भवहुं कुणहुंतीते कृपा कर कहो स्वामीनाथ ॥२॥
 धर्मघोष साधु तीण अवसरै सेठ सुदर्शन नै कहै आंम ।
 पाकल भव कहुं कुं थांहरो ते सुण राखे चित ठाम ॥३॥

सुदर्शन सेठ के बखान की ॥ ढाल ३६ वीं ॥

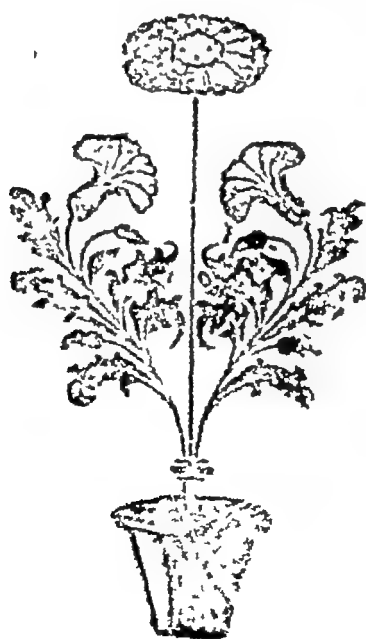
(आछेलाल एदेशी)

इस सुंणनै मनोरमा नार ॥ कुटी आंसुडारी
 धार ॥ आछेलाल ॥ मुर्छा गत आय धरणीं ठलीजी
 ॥ १ ॥ बले कुटंव सह परिवार ॥ रोवै बांगां पाड ॥
 आ० ॥ विलखाधई नै विल २ करैजी ॥२॥ ओ सेठ
 छो सगलारै आधार ॥ तिणस्युं रुदन करां वारंवार ॥
 आ० ॥ सुख मांहे दुःख उपनोजी ॥३॥ रुदन करतां
 देखि तिण वार ॥ सेठ बोल्यो तिणवार ॥ आ० ॥
 किसी भरोसो इण कालरोजी ॥४॥ थे सज्जन न्यातीला
 लोग ॥ नहीं कोई राखवा जोग ॥ आ० ॥ परभव
 जातां जीवनैजी ॥५॥ काची सग पण एह ॥ तिणस्युं
 किसोरे स्नेह ॥ आ० ॥ ओ मेलो मिल्यो छै सर्व
 कारमोजी ॥६॥ एवासी वसीयो आय ते नहीं नेठाउ
 घाय ॥ आ० ॥ निश्चो नहीं किण वातरोजी ॥ ७ ॥
 काल चटको देय ॥ आंधी गौगै न मेह ॥ आ० ॥
 काल आयां उठ जावगोजी ॥ ८ ॥ हुं परदेशी ज्युं
 तांम ॥ मोन कोइय नहीं विसराम ॥ आ० ॥ हुं
 किसै भरोसै रहुं घर मंभैजी ॥ ९ ॥ मैं मेल्या लाखां

उपर कोड ॥ ते पिण गया उभा छोड़ ॥ आ० ॥
 त्यानैं पिण मेल्या मसांगैं मैं जी ॥ १० ॥ जंचा महल
 कराया होडा होड ॥ ते पिण गया उभा छोड़ ॥
 आ० ॥ परभव जासी प्रांणीं एकलोजी ॥ ११ ॥ जीव
 भोगवै निज पुन्य पाप ॥ क्युं करो तुम सोग सन्ताप ॥
 आ० ॥ जगमें कोई कहनों नहीं जी ॥ १२ ॥ मात
 पिता सुत भाय ॥ कोई काहुको नाय ॥ आ० ॥
 एकलो आयो जासी एकलोजी ॥ १३ ॥ द्रुम जाणीं
 करो जिन धर्म ॥ ज्युं रहै सहुनों सर्म ॥ आ० ॥ धर्म
 सखाई द्रुण जीवरो जी ॥ १४ ॥ धर्म स्युं शीक्षै आत्म
 काज ॥ पामैं अविचल राज ॥ आ० ॥ शिव मुख
 पामैं जीव साशैताजी ॥ १५ ॥ इत्यादिक दियो उप-
 देश ॥ दया धर्मनों रैश ॥ आ० ॥ सेठ न्यातीला
 सन्तोषोयाजी ॥ १६ ॥ कहै म्हांन हुवैकै अंवार ॥ आग्यारो
 ठील मत करो लीगार ॥ आ० ॥ जोखिण जावैते आवै
 नहीं जी ॥ १७ ॥ इत्यादिक सहु परिवार ॥ बले बोली
 मनोरमां नार ॥ आ० ॥ आप कहौ ते सत्य बायकैजी
 ॥ १८ ॥ पिण म्हांनैं आधारया आप ॥ तिणस्युं करांछा
 विलाप ॥ आ० ॥ हिवै जिम मुख होवै तिम करोजी
 ॥ १९ ॥ आप सुखिलयो संजम भार ॥ म्हारो म्होमत राखो
 लीगार ॥ आ० ॥ म्है जास्यां कमाई आप आपरीजी ॥ २० ॥

॥ दुहा ॥

सेठ सुदर्शण तेहनै । आगन्यां दिधी रुडी गीत ॥
 हिवै करै महाकुव दिद्यातणां । ते सुगज्यो धर प्रीत
 ॥१॥ मर्दन स्नान करायनै । आभूषण विविध प्रकार ॥
 सिंगार वैसांण्यो सेवका उपरै । जव सेठ गुण्यो
 नवकार ॥ २ ॥ सहस्र उपाडी सेवका । चाला नगर
 संस्कार ॥ चरण भाट बालै विरदावली । साथे सह
 परिवार ॥ ३ ॥ धातौवाहन तिण अवसरै । सेठनो
 निखमण जाण ॥ हिवै करै म्होक्व दिद्यातणां । कर-
 माटे संडाण ॥४॥ वाजीव विविध प्रकारनां । आवाज
 करै गुंजार ॥ तेलगै कानानै मुहामणां । मननै हष
 अपार ॥ ५ ॥



॥ अथ पानाकी चरचा ॥

- १ जीव रूपीके अरूपी, अरूपी किणन्याय कालो पीलो नीलो रातो धोलो ए पांच वर्ण नही पावे इग न्याय ।
- २ अजीव रूपीके अरूपी, रूपी अरूपी दोनू ही कै किणन्याय धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशा-स्तिकाय काल ए च्यारु' तो अरूपी और पुद्गला-स्तिकाय रूपी ।
- ३ पुन्य रूपीके अरूपी, रूपी ते किणन्याय पुन्यते शुभ कर्म, कर्म ते पुद्गल पुद्गल ते रूपी ही कै ।
- ४ पाप रूपीके अरूपी, रूपी ते किणन्याय पापते अशुभ कर्म कर्मते पुद्गल पुद्गल ते रूपी ही कै ।
- ५ आस्रव रूपीके अरूपी, अरूपी ते किणन्याय आस्रव जीवका परिणाम कै, परिणामते जीव कै, जीव ते अरूपी कै, पांच वर्ण पावे नही इग न्याय ।
- ६ संवर रूपीके अरूपी, अरूपी किणन्याय पांच वर्ण पावे नही ।

- ७ निर्जरा रूपीके अरूपी अरूपी है ते किणन्याय निर्जरा जीवका परिणाम है पांच वर्ण पावे नहीं इण न्याय ।
- ८ बंध रूपीके अरूपी, रूपी किणन्याय बंध ते शुभ अशुभ कर्म है, कर्म ते पुद्गल है, पुद्गल ते रूपी है ।
- ९ मोक्ष रूपीके अरूपी अरूपी है ते किणन्याय समस्त कर्मासे मुकावे ते मोक्ष अरूपी ते जीव सिद्ध थया ते मां पांच वर्ण पावे नहीं इणन्याय ।

॥ लड़ी दूजी सावद्य निर्वद्यकी ॥

- १ जीव सावद्यके निर्वद्य दोनूं ही है ते किणन्याय चोग्वा परिणामां निर्वद्य खोटा परिणामा सावद्य है ।
- २ अजीव सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं अजीव है ।
- ३ पुन्य सावद्य निर्वद्य; दोनूं नहीं अजीव है ।
- ४ पाप सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं अजीव है ।
- ५ आस्रव सावद्यके निर्वद्य; दोनूं ही है किणन्याय मिथ्यात्व आस्रव अव्रत आस्रव प्रसाद आस्रव, कपाय आस्रव, ए चार तो एकान्त सावद्य है,

शुभ जोगां से निरजरा होय जिण आसरी निर्वद्य
है अशुभ जोग सावद्य है ।

६ संवर सावद्यकी निर्वद्य निर्वद्य छ ते किणन्याय
कर्मां नें रोके ते निर्वद्य है ।

७ निरजरा सावद्यकी निर्वद्य निर्वद्य है ते किण-
न्याय कर्म तोडवारा परिणाम निर्वद्य है ।

८ बंध सावद्यकी निर्वद्य दोनूं नहौं ते किणन्याय
अजीव है द्रुण न्याय ।

९ मोक्ष सावद्यकी निर्वद्य; निर्वद्य है, सकल कर्म
सूकाय सिद्ध भगवंत धया ते निर्वद्य है ।

॥ लड़ी तीजी आज्ञा मांहि बाहिरकी ॥

१ जीव आज्ञा मांहि की बारे; दोनूं है ते किण-
न्याय, जीवका चोखा परिणाम आज्ञा मांहि है,
खोटा परिणाम आज्ञा बाहिर है ।

२ अजीव आज्ञा मांहि बाहिर; दोनूं नहौं; अजीव
है ।

३ पुन्य आज्ञा मांहि की बाहिर दोनूं नहौं अजीव
है द्रुणन्याय ।

४ पाप आज्ञा मांहि बारे दोनूं नहौं अजीव है ।

- ५ आस्रव आज्ञा मांहिके बारे; दोनूँ है, ते विण-
न्याय, आस्रव नां पांच भेद है तिणामे मिथ्यात्व
अव्रत प्रसाद कषाय ए चार तो आज्ञा बाहिर
है अले जोग नां दोय भेद शुभ जोग तो आज्ञा
मांहि है अशुभ जोग आज्ञा बाहिर है ।
- ६ संवर आज्ञा मांहि के बाहिर, आज्ञा मांहि है
ते दिगन्याय कर्म रोकवारा परिणाम आज्ञा
मांहि है ।
- ७ निर्जरा आज्ञा मांहिके बाहिर, आज्ञा मांहि है
ते किगन्याय कर्म तोडवारा परिणाम आज्ञा
मांहि है ।
- ८ बंध आज्ञा मांहिके बाहिर, दोनूँ नहीं ते किग-
न्याय, आज्ञा मांहि बाहिर तो जीव हुवे ए बंध
तो अजीव है दूगन्याय ।
- ९ मोक्ष आज्ञा मांहिके बाहिर, आज्ञा मांहि है ते
किगन्याय, कर्म मूँकाय सिद्ध धया ते आज्ञा मे है ।

॥ लड़ी चौथो जीव अजीवकी ॥

- १ जीव ते जीव है के अजीव, जीव ते किगन्याय
सदाकाल जीवकी जीव रहसे अजीव कटे हुवे
नहीं ।

२ अजीव ते जीव है के अजीव है; अजीव है अजीव को जीव किण ही कालमें हुवे नहीं ।

३ पुन्य जीव है के अजीव है; अजीव है ते किण-
न्याय पुन्यते शुभकर्म शुभ कर्मते पुद्गल है पुद्गल
ते अजीव है ।

४ पाप जीव है के अजीव है; अजीव है किणन्याय
पाप ते अशुभ कर्म पुद्गल है पुद्गल ते अजीव है ।

५ आस्रव जीव है के अजीव है जीव है; ते किण-
न्याय शुभ अशुभ कर्म ग्रहे ते आस्रव है कर्म
ग्रहे ते जीव ही है ।

६ संवर जीवके अजीव, जीव है ते किणन्याय कर्म
रोके ते जीव ही है ।

७ निर्जरा जीवके अजीव, जीव है किणन्याय कर्म
ताड़ै ते जीव है ।

८ बंध जीवके अजीव है, अजीव है ते किणन्याय
शुभ अशुभ कर्मको बंध अजीव है ।

९ मोक्ष जीवके अजीव, जीव है, किणन्याय समस्त
कर्म भूकावे ते मोक्ष जीव है ।

॥ लड़ी पांचवीं जीव चोरके साहूकार ॥

१ जीव चोरके साहूकार, दोनूं है किणन्याय चोखा
परिणामां साहूकार है मांठा परिणामां चोर है ।

- २ अजीव चोरके साह्रकार, दोनूं नहीं किणन्याय
चोर साह्रकार तो जीव हुवे ये अजीव है ।
- ३ पुन्य चोरके साह्रकार, दोनूं नहीं अजीव है ।
- ४ पाप चोरके साह्रकार, दोनूं नहीं अजीव है ।
- ५ आस्रव चोरके साह्रकार, दोनूं है किणन्याय
च्यार आस्रव तो चोर है, अनें अशुभ जोग पण
चोर है शुभ जोग साह्रकार है ।
- ६ संवर चोरके साह्रकार, साह्रकार है किणन्याय
कर्म रोकवारा परिणाम साह्रकार है ।
- ७ निर्जरा चोरके साह्रकार, साह्रकार है किणन्याय
कर्म तोड़वारा परिणाम साह्रकार है ।
- ८ बंध चोरके साह्रकार, दोनूं नहीं अजीव है ।
- ९ मोक्ष चोरके साह्रकार साह्रकार किणन्याय
कर्म मूक्याकर सिद्ध थया ते साह्रकार है ।

॥ लडी छटी जीव छांडवा जोगके
आदरवा जोगकी ॥

- १ जीव छांडवा जोगके आदरवा जोग छांडवा जोग
है किणन्याय पोते जीवनूं भाजन करे अमेरा
जीव पर ममत्व भाव न करे ।

- २ अजीव छांडवा जोगके आदरवा जोग, छांडवा जोग है किणन्याय अजीव है ।
- ३ पुन्य छांडवा जोगके आदरवा जोग, छांडवा जोग है ते किणन्याय पुन्य ते शुभ कर्म पुद्गल है कर्म ते छांडवा ही जोग है ।
- ४ पाप छांडवा जोगके आदरवा जोग, छांडवा जोग है किणन्याय पाप ते अशुभ कर्म है जीवने दुखदार्ढ है ते छांडवा जोग है ।
- ५ आस्रव छांडवा जोगके आदरवा जोग, छांडवा जोग है किणन्याय आस्रव द्वारे जीवरे कर्म लागे है आस्रव कर्म आवानां वारणा है ते छांडवा जोग है ।
- ६ संवर छांडवा जोगके आदरवा जोग, आदरवा जोग है किणन्याय कर्म रोके ते संवर है ते आदरवा जोग है ।
- ७ निर्जरा छांडवा जोगके आदरवा जोग, आदरवा जोग है किणन्याय देशयी कर्म तोडे देशयी जीव उज्जल थाय ते निर्जरा है ते आदरवा जोग है ।
- ८ बन्ध छांडवा जोगके आदरवा जोग, छांडवा जोग है, ते किणन्याय शुभ अशुभ कर्म नो बन्ध छांडवा जोग ही है ।

६ सोक्ष छांडवा जोगके आदरवा जोग, आदरवा जोग ते किणन्याय सकल कर्म खपावे जीव निरमल थाय सिद्ध हुवे इणन्याय आदरवा जोग छै ।

॥ षट्द्रव्यपर लड़ी सातमी रूपी अरूपीकी ॥

- १ धर्मास्तिकाय रूपीके अरूपी, अरूपी किणन्याय पांच वर्ग नहों पावे इणन्याय ।
- २ अधर्मास्तिकाय रूपीके अरूपी, अरूपी किणन्याय पांच वर्ग नहों पावे इणन्याय ।
- ३ आकाशास्तिकाय रूपीके अरूपी, अरूपी किणन्याय पांच वर्ग नहों पावे इणन्याय ।
- ४ काल रूपीके अरूपी, अरूपी किणन्याय पांच वर्ग नहों पावे इणन्याय ।
- ५ पुद्गल रूपीके अरूपी, रूपी किणन्याय पांच वर्ग पावे इणन्याय ।
- ६ जीव रूपीके अरूपी अरूपी किणन्याय पांच वर्ग नहों पावे इणन्याय ।

॥ छवद्रव्यपर लड़ी आठमी सावद्य निर्वद्यकी ॥

- १ धर्मास्तिकाय सावद्यके निर्वद्य, दानूं नहों अजीव छै ।

२ अधर्मास्तिकाय सावद्यके निर्वद्य, दोनूं नहीं अजीव है ।

३ आकाशास्तिकाय सावद्यके निर्वद्य, दोनूं नहीं अजीव है ।

४ काल सावद्यके निर्वद्य, दोनूं नहीं अजीव है ।

५ पुद्गलास्तिकाय सावद्यके निर्वद्य, दोनूं नहीं अजीव है ।

६ जीवास्तिकाय सावद्यके निर्वद्य, दोनूं है खोटा परिणामा सावद्य है चोखा परिणामा निर्वद्य है ।

छवद्रव्यपर लड़ी नवमी आज्ञासांहिबाहेरकी ।

१ धर्मास्तिकाय आज्ञा सांहिके बाहिर दोनूं नहीं ते किणन्याय आज्ञा सांहि बाहिर तो जीव है । अने ए अजीव है ।

२ अधर्मास्तिकाय आज्ञा सांहिके बाहिर दोनूं नहीं किणन्याय अजीव है ।

३ आकाशास्तिकाय आज्ञा सांहिके बाहिर दोनूं नहीं किणन्याय अजीव है ।

४ काल आज्ञा सांहिके बाहिर दोनूं नहीं किणन्याय अजीव है ।

५ पुद्गल आज्ञा सांहीके बाहिर दोनूं नहीं किण-
न्याय अजीव है ।

६ जीव आज्ञा सांहीके बाहिर दोनूं है किणन्याय
निर्वद्य करणी आज्ञा सांही है सावद्य करणी
आज्ञा बाहिर है इणन्याय ।

॥ छव द्रव्यपर लड़ी दशमी चोर साहूकारकी ॥

१ धर्मास्तिकाय चोर की साहूकार दोनूं नहीं किण-
न्याय चोर साहूकारता जीव है ए धर्मास्तिकाय
अजीव है इणन्याय ।

२ अधर्मास्तिकाय चोरकी साहूकार दोनूं नहीं
अजीव है ।

३ आकाशास्तिकाय चोरकी साहूकार दोनूं नहीं
अजीव है ।

४ काल चोरकी साहूकार दोनूं नहीं अजीव है ।

५ पुद्गल चोरकी साहूकार दोनूं नहीं अजीव है ।

६ जीव चोरकी साहूकार, दोनूं है किणन्याय, साठा
परिणामा आसरी चोर है चोखा परिणामा
आसरी साहूकार है ।

॥ छव द्रव्यपर लड़ी इग्यारमी जीव अजीवकी ॥

१ धर्मास्तिकाय जीवकी अजीव, अजीव है ।

- २ अधर्मास्तिकाय जीवके अजीव, अजीव है ।
- ३ आकाशास्तिकाय जीवके अजीव, अजीव है ।
- ४ काल जीवके अजीव, अजीव है ।
- ५ पुद्गलास्तिकाय जीवके अजीव, अजीव है ।
- ६ जीवास्तिकाय जीव के अजीव, जीव हैं ।

॥ छव द्रव्यपर लड़ी बारमी एक अनेक की ॥

- १ धर्मास्तिकाय एक है के अनेक है, एका है, किण्व्याय, द्रव्ययकी एकही द्रव्य है ।
- २ अधर्मास्तिकाय एक है के अनेक है एका है, द्रव्ययकी एकही द्रव्य है ।
- ३ आकाशास्तिकाय एकके अनेक, एका है, लोक अलोक प्रमाणे एकही द्रव्य है ।
- ४ काल एक है के अनेक है, अनेक है द्रव्ययकी अनन्ता द्रव्य है इण्व्याय ।
- ५ पुद्गल एक है के अनेक है, अनेक है, द्रव्य यकी अनन्ता द्रव्य है इण्व्याय ।
- ६ जीव एक है के अनेक है, अनेक है अनन्ता द्रव्य है इण्व्याय ।

॥ लड़ी तेरमी ॥

छवमें नवमेंकी चरचा ।

- १ कर्माकीकर्ता छव द्रव्यमे कीण नव तत्वमे कीण

- उत्तर छवसे जीव नवसे जीव आसव ।
- २ कर्माको उपावता छवसे कोण नवसे कोण उ०
छवसे जीव नवसे जीव आसव ।
- ३ कर्माका खगावता छवसे कोण नवसे कोण उ०
छवसे जीव नवसे जीव आसव ।
- ४ कर्माको रोकता छवसे कोण नवसे कोण उत्तर
छवसे जीव नवसे जीव संवर ।
- ५ कर्माको तोड़ता छवसे कोण नवसे कोण छवसे
जीव नवसे जीव निर्जरा ।
- ६ कर्माको बान्धता छवसे कोण नवसे कोण छवसे
जीव नवसे जीव आसव ।
- ७ कर्माको मुकावता छवसे कोण नवसे कोण छवसे
जीव नवसे जीव मोक्ष ।

॥ लही चौदसी ॥

- १ अठारि पाप सेवे ते छवसे कोण नवसे कोण छवसे
जीव नवसे जीव आसव ।
- २ अठारि पाप सेवाका त्याग करे ते छवसे कोण
नवसे कोण छवसे जीव नवसे जीव निर्जरा ।
- ३ सायायक छवसे कोण नवसे कोण छवसे जीव
नवसे जीव संवर ।

- ४ व्रत छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव संबर ।
- ५ अव्रत छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव आस्रव ।
- ६ अठारे पापको बहरमण छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव संबर ।
- ७ पञ्च महाव्रत छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव संबर ।
- ८ पांच चारित्र छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव, संबर ।
- ९ पांच सुमती छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव, निर्जरा ।
- १० तीन गुप्ती छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव, संबर ।
- ११ बारि व्रत छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव, संबर ।
- १२ धर्म छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव, संबर, निर्जरा ।
- १३ अधर्म छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव, आस्रव ।
- १४ दया छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव,

नवमे जीव. संवर, निर्जरा ।

१५ द्वितीया छवमे कोण नवमे कोण छवमे जीव,
नवमे जीव, आस्रव ।

॥ लडो १५ पंदरमी ॥

१ जीव छवमे कोण नवमे कोण छवमे जीव, नवमे
जीव. आस्रव, संवर, निर्जरा मोक्ष ।

२ अजीव छवमे कोण नवमे कोण छवमे पांच,
नवमे अजीव, पुन्य, पाप, बंध ।

३ पुन्य छवमे कोण नवमे कोण छवमे पुद्गल, नवमे
अजीव, पुन्य, बंध ।

४ पात्र छवमे कोण ? नवमे कोण ? छवमे पुद्गल,
नवमे अजीव, पाप बंध ।

५ आस्रव छवमे कोण नवमे कोण छवमे जीव,
नवमे जीव. आस्रव ।

६ संवर छवमे कोण नवमे कोण छवमे जीव, नवमे
जीव संवर ।

७ निर्जरा छवमे कोण नवमे कोण छवमे जीव, नवमे
जीव, निर्जरा ।

८ बंध छवमे कोण नवमे कोण छवमे पुद्गल, नवमे
अजीव, पुन्य, पाप, बंध ।

६ मोक्ष कृवमे' कोण नवमे' कोण कृवमे' जीव,
नवमे' जीव, मोक्ष ।

॥ लडो १६ सोलहमी ॥

- १ धर्मास्ति कृवमे' कोण नवमे' कोण कृवमे' धर्मास्ति,
नवमे' अजीव ।
- २ अधर्मास्ति कृवमे' कोण नवमे' कोण कृवमे'
अधर्मास्ति, नवमे' अजीव ।
- ३ आकाशास्ति, कृवमे' कोण नवमे' कोण कृवमे'
आकाशास्ति, नवमे' अजीव ।
- ४ काल कृवमे' कोण नवमे' कोण कृवमे' काल,
नवमे' अजीव ।
- ५ पुद्गल कृवमे' कोण नवमे' कोण कृवमे' पुद्गल,
नवमे' अजीव, पुन्य, पाप बंध ।
- ६ जीव, कृवमे' कोण नवमे' कोण कृवमे' जीव,
नवमे' जीव, आस्रव संबन्ध, निर्जरा मोक्ष ।

॥ लडो १७ सतरमी ॥

- १ लेखण (कलम) पूठो, कागद को पानों,
लकड़ी की पाटी; कृवमे' कोण नवमे' कोण कृवमे'
पुद्गल, नवमे' अजीव ।

- २ साँची, रजोहरण, चादर चोलपट्टो आदि भंड
उपगणन; छवसें कोण नवसें कोण छवसें पुद्गल,
नवसें अजीव ।
- ३ धानको दाणों; छवसें कोण नवसें कोण छवसें
जीव, नवसें जीव ।
- ४ रुंख (वृक्ष) छवसें कोण नवसें कोण छवसें
जीव, नवसें जीव ।
- ५ तावड़ो छायां छवसें कोण नवसें कोण छवसें
पुद्गल, नवसें अजीव ।
- ६ दिन रात छवसें कोण नवसें कोण छवसें काल,
नवसें अजीव ।
- ७ श्रीसिद्ध भगवान छवसें कोण नवसें कोण छवसें
जीव, नवसें जीव मोक्ष ।

॥ लडो १८ अठारमी ॥

- १ पुन्य और धर्म एकके दोय, दोय किणन्याय,
पुन्य तो अजीव है, धर्म जीव है ।
- २ पुन्य और धर्मास्ति एक के दोय, दोय, किण-
न्याय, पुन्य तो रूपी है धर्मास्ति अरूपी है ।
- ३ धर्म और धर्मास्ति एक के दोय दाय, किण-
न्याय, धर्म तो जीव है, धर्मास्ति अजीव है ।

४ अधर्म और अधर्मास्ति एक के दोय दोय, किण-
न्याय, अधर्म तो जीव है, अधर्मास्ति अजीव है ।

॥ लड़ी १९ उन्नीसमी ॥

५ पुन्य अने पुन्यवान एक के दोय दोय, किण-
न्याय, पुन्य तो अजीव है पुन्यवान जीव है ।

६ पाप अने पापा एकके दोय दोय, किणन्याय,
पाप तो अजीव है, पापी जीव है ।

७ कर्म अने कर्मां को करता एकके दोय दोय,
किणन्याय, कर्म तो अजीव है; कर्मारी करता
जीव है ।

॥ लड़ी १६ सोलहमी ॥

१ कर्म जीव के अजीव अजीव ।

२ कर्म रूपीके अरूपी रूपी है ।

३ कर्म सावद्यके निरवद्य; दोनूं नहीं अजीव है ।

४ कर्म चोरके साह्वकार; दोनूं नहीं; अजीव है ।

५ कर्म आज्ञा मांहिके बाहिर; दोनूं नहीं अजीव है ।

६ कर्म छांडवा जोग के आदरवा जोग; छांडवा
जोग है ।

७ आठ कर्मां में पुन्य कितना पाप कितना ज्ञाना-
वर्णी, दर्शणावर्णी, मोहनीय, अंतराय, ए चार

कर्म तो एकान्त पाप है, वेदनी, नाम, गोत्र,
आयु ए चार कर्म पुन्य पाप दोनूँ ही है ।

॥ लड़ी २० बीसमी ॥

- १ धर्म जीव के अजीव जीव है ।
- २ धर्म सावद्य के निरवद्य निरवद्य है ।
- ३ धर्म आज्ञा मांहि के बाहिर श्री बितराग देवकी
आज्ञा मांहि है ।
- ४ धर्म चोर के साह्वकार साह्वकार है ।
- ५ धर्म रूपी के अरूपी अरूपी है ।
- ६ धर्म छांडवा जोग के आदरवा जोग आदरवा
जोग है ।
- ७ धर्म पुन्य के पाप दोनूँ नहीं किणन्याय धर्म ता
जीव है पुन्य पाप अजीव है ।

॥ लड़ी २१ इक्कीसमी ॥

- १ अधर्म जीव के अजीव जीव है ।
- २ अधर्म सावद्य के निरवद्य सावद्य है ।
- ३ अधर्म चोर के साह्वकार चोर है ।
- ४ अधर्म आज्ञा मांहि के बाहिर; बाहिर है ।
- ५ अधर्म रूपी के अरूपी रूपी है ।

६ अधर्म छांडवा जोग के आदरवा जोग छांडवा जोग है ।

॥ लड़ी २२ बाइसमी ॥

- १ सामायक जीव के अजीव जीव है ।
- २ सामायक सावद्य के निरवद्य निरवद्य है ।
- ३ सामायक चोर के साह्जकार साह्जकार है ।
- ४ सामायक आज्ञा मांहि के बाहिर आज्ञा मांहि है ।
- ५ सामायक रूपी के अरूपी अरूपी है ।
- ६ सामायक छांडवा जोग के आदरवा जोग आदरवा जोग है ।
- ७ सामायक पुन्यके पाप दोनूँ नहीं, किणन्याय पुन्य पाप अजीव है, सामायक जीव है ।

॥ लड़ी २३ तेवीसमी ॥

- १ सावद्य जीव के अजीव जीव है ।
- २ सावद्य सावद्य है के निरवद्य सावद्य है ।
- ३ सावद्य आज्ञा मांहि के बाहिर बाहिर है ।
- ४ सावद्य चोर के साह्जकार चोर है ।
- ५ सावद्य रूपी के अरूपी अरूपी है ।

६ सावद्य छांडवा जोग के आदरवा जोग छांडवा जोग है ।

७ सावद्य पुन्य, के पाप दोनूं नहीं; पुन्य पाप तो अजीव है; सावद्य जीव है ।

॥ लडी २४ चौबीसमी ॥

१ निरवद्य जीव के अजीव जीव है ।

२ निरवद्य सावद्य के निरवद्य निरवद्य है ।

३ निरवद्य चीर के साहकार साहूकार है ।

४ निरवद्य आज्ञा मांहि के बाहिर सांहि है ।

५ निरवद्य रूपी के अरूपी अरूपी है ।

६ निरवद्य छांडवा जोग के आदरवा जोग आदरवा जोग है ।

७ निरवद्य धर्म के अधर्म धर्म है ।

८ निरवद्य पुन्य के पाप पुन्य पाप दोनूं नहीं, किणन्याय पुन्य पाप तो अजीव है, निरवद्य जीव है ।

॥ लडी २५ पचीसमी ॥

१ नव पदार्थ में जीव कितना पदार्थ अने अजीव कितना पदार्थ जीव, आस्रव, संवर निर्जरा,

मोक्ष, ए पांच तो जीव है; अने' अजीव, पुन्य, पाप, बंध, ए चार पदार्थ' अजीव है ।

२ नव पदार्थ' में सावद्य कितना निरवद्य कितना जीव अने' आस्रव ए दोय तो सावद्य निरवद्य दोनूं है, अजीव, पुन्य पाप, बंध, ए सावद्य निरवद्य दोनूं नहीं । संबर, निर्जरा, मोक्ष, ए तीन पदार्थ' निरवद्य है ।

३ नव पदार्थ' में आज्ञा मांहि कितना आज्ञा बाहिर कितना जीव, आस्रव, ए दोय तो आज्ञा मांहि पण है, अने आज्ञा बाहिर पण है । अजीव, पुन्य, पाप, बंध, ए चार आज्ञा मांहि बाहिर दोनूं ही नहीं । संबर, निर्जरा मोक्ष, ए आज्ञा मांहि है ।

४ नव पदार्थ' में चोर कितना साहूकार कितना जीव, आस्रव, तो चोर साहूकार दोनूं ही है । अजीव, पुन्य, पाप, बंध ए चोर साहूकार दोनूं नहीं; संबर, निर्जरा, मोक्ष, ए तीन साहूकार है ।

५ नव पदार्थ' में छांडवा जीग कितना आदरवा जीग कितना जीव, अजीव, पुन्य, पाप, आस्रव, बंध, ए छव तो छांडवा जीग है; संबर, निर्जरा,

मोक्ष ए तीन आदरवा जोग है अने जाणवा जोग नवही पदार्थ है ।

६ नव पदार्थ में रूपी कितना अरूपी कितना जीव, आस्रव, संवर, निर्जरा, मोक्ष ए, पांच तो अरूपी है; अजीव रूपी अरूपी दोनों है पुन्य, पाप, बंध रूपी है ।

७ नव पदार्थ में एक कितना अनेक कितना उ० अजीव टाली आठ पदार्थ तो अनेक है, अने अजीव एक अनेक दोनों है, किण्व्याय धर्मास्ति अधर्मास्ति आकाशास्ति ये तीनूं द्रव्य थकी एक एक ही द्रव्य है ।

॥ लडो २६ छवीसमी ॥

१ छव द्रव्य में जीव कितना अजीव कितना एक जीव पांच अजीव है ।

२ छव द्रव्य में रूपी कितना अरूपी कितना जीव; धर्मास्ति; अधर्मास्ति आकाशास्ति; काल; ए पांच तो अरूपी है. पुद्गल रूपी है ।

३ छव द्रव्य में आज्ञा मांहि कितना आज्ञा बाहिर कितना जीव तो आज्ञा मांहि बाहिर दोनों है; बाकी पांच आज्ञा मांहि बाहिर दोनों नहीं ।

- ४ क्व द्रव्य में चोर कितना साह्रकार कितना जीव तो चोर साह्रकार दोनूं हैं; बाकी पांच द्रव्य चोर साह्रकार दोनूं नहीं; अजीव है ।
- ५ क्व द्रव्य में सावद्य कितना निरवद्य कितना एक जीव द्रव्य तो सावद्य निरवद्य दोनूं हैं; बाकी पांच द्रव्य सावद्य निरवद्य दोनूं नहीं ।
- ६ क्व द्रव्य में एक कितना अनेक कितना धर्मास्ति; अधर्मास्ति; आकाशास्ति; ए तीनों तो एक ही द्रव्य है; काल; जीव; पुद्गलास्ति ए तीन अनेक है; द्रुणांका अनन्ता द्रव्य है ।
- ७ क्व द्रव्य में सप्रदेशी कितना अप्रदेशी कितना एक काल तो अप्रदेशी है; बाकी पांच सप्रदेशी है ।

॥ लड़ी २७ सत्ताइसमी ॥

- १ पुन्य धर्म के अधर्म दोनूं नहीं; किणन्याय धर्म अधर्म जीव है; पुन्य अजीव है ।
- २ पाप धर्म के अधर्म दोनूं नहीं; किणन्याय धर्म अधर्म तो जीव है पाप अजीव है ।
- ३ बंध धर्म के अधर्म दोनूं नहीं; किणन्याय धर्म अधर्म तो जीव है बंध अजीव है ।

- ८ धर्म अने धर्म एक के दोय दोय है; किणन्याय
 धर्म तो अजीव है; धर्म जीव है ।
- ५ पाप अने धर्म एक के दोय दोय है; किणन्याय
 पाप तो अजीव है; धर्म जीव है ।
- ६ अधर्म अने अधर्मास्ति एक के दोय दोय; किण-
 न्याय अधर्म तो जीव है; अधर्मास्ति अजीव है ।
- ७ धर्म अने धर्मास्ति एक के दोय दोय; किणन्याय
 धर्म तो जीव है; धर्मास्ति अजीव है ।
- ८ धर्म अने अधर्मास्ति एक के दोय दोय; किणन्याय
 धर्म तो जीव है; अधर्मास्ति अजीव है ।
- ९ अधर्म अने धर्मास्ति एक के दोय दोय; किणन्याय
 अधर्म तो जीव; धर्मास्ति अजीव है ।
- १० धर्मास्ति अने अधर्मास्ति एक के दोय दोय;
 किणन्याय धर्मास्ति को तो चालवा नो सहाय है;
 अने अधर्मास्तिनो थिर रहवानों सहाय है ।
- ११ धर्म अने धर्मो एक के दोय एक है; किणन्याय
 धर्म जीवका चोखा परिणाम है ।
- १२ अधर्म अने अधर्मो एक के दोय एक है; किण-
 न्याय अधर्म जीव का खोटा परिणाम है ।

* प्रश्नोत्तर *

- १ धारी गति कांई—मनुष्य गति ।
- २ धारी जाती कांई—पंचेन्द्री ।
- ३ धारी काय कांई—वसकाय ।
- ४ इन्द्रियां कितनी पावे—५ पांच ।
- ५ पर्याय कितना पावे—६ छव ।
- ६ प्राण कितना पावे—१० दश पावे ।
- ७ शरीर कितना पावे—३ तीन—ओदारिक, तैलस, कार्मण ।
- ८ लोग कितना पावे—९ नव पावे चार मन का; चार बचनका; एक काया की; ओदारिक ।
- ९ उपयोग कितना पावे—४ चार पावे सतिज्ञान १ श्रुतिज्ञान २ चक्षु दर्शन ३ श्रवण दर्शन ४
- १० धारे कर्म कितना ८ आठ ।

- ११ गुणस्थान किसो पावे—व्यवहारधी पांचमूं, साधु नें पूकै तो छट्ठो ।
- १२ विषय कितनी पावे—२३ तेबीस ।
- १३ सिध्यात्वनं दश बोल पावै कै नहीं, व्यवहारधी नहीं पावै ।
- १४ जीवका चौदा भेदासैं सैं किसो भेद पामै, १ एक चोदमूं पर्यासा सन्नी पंचेन्द्री को पावै ।
- १५ आतमां कितनी पावै श्रावकमे तो ७ सात पावै; अनं साधु मे आठ आवै ।
- १६ दण्डक किसो पावै—एक इकबीसमु ।
- १७ लेस्या कितनी पावै—६ छव ।
- १८ दृष्टी कितनी पावै—व्यवहारधी एक; सम्यक दृष्टी पावै ।
- १९ ध्यान कितना पावै—३ तीन, शुक्ल ध्यान टालके ।
- २० छवद्रव्यमें किसा द्रव्य पावै—१ एक जीव द्रव्य ।
- २१ राशि किसो पावै—एक जीव राशि ।
- २२ श्रावक का वारा व्रत श्रावक में पावै ।
- २३ साधुका पञ्च महाव्रत पावै को नहीं—साधु में पावै श्रावक में पावै नहीं ।
- २४ पांच चारित्र श्रावक में पावै कै नहीं, नहीं पावै, एक देश चारित्र पावै ।

- १ एकेन्द्री की गति कांई—तिर्यंच गति ।
- २ एकेन्द्री की जाति कांई—एकेन्द्री ।
- ३ एकेन्द्री से काया किसौ पावै—पांच घावरकी ।
- ४ एकेन्द्री से इन्द्रियां कितनी पावै—एक स्पर्श इन्द्री ।
- ५ एकेन्द्री से पर्याय कितनी पावै—४ च्यार मन भाषा ए होय टली ।
- ६ एकेन्द्री से प्राण कितना पावै—४ च्यार पावै स्पर्श इन्द्रिय बलप्राण १ काय बलप्राण २ श्वासोश्वास बलप्राण ३ आयुषी बलप्राण ४
- ७ मूरड भाटौ मुलतानी पत्थर सोनो चांदी रतना-
दिक पृथ्वीकाय का प्रश्नोत्तर :—

प्रश्न

उत्तर

गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	एकेन्द्री
काय किसी	पृथ्वीकाय
इन्द्रियां कितनी पावै	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी पावै	४ च्यार, मन भाषा टली
प्राण कितना	४ च्यार पावै, स्पर्श इन्द्री बल प्राण १ काय बल २ श्वासोश्वास बल ३ आयु बलप्राण ४

८ पांशी ओमादि अप्पकायकी

प्रश्न

गति काई
जाति काई
काय किसी
इन्द्रियां कितनी
पर्याय कितनी
प्राण कितना

उत्तर

तिर्यंच गति
एकेन्द्री
अप्पकाय
एक स्पर्श इन्द्री
४ च्यार, मन भाषाटली
४ च्यार, ऊपर प्रमाणे

९ चरनी तेउकायनी

प्रश्न

गति काई
जाति काई
काय किसी
इन्द्रियां कितनी
पर्याय कितनी
प्राण कितना

उत्तर

तिर्यंच गति
एकेन्द्री
तेउकाय
एक स्पर्श इन्द्री
४ च्यार, मन भाषा टली
४ च्यार, ऊपर प्रमाणे

१० वायु कायकी

प्रश्न

गति काई
जाति काई
काय काई
इन्द्रियां कितनी
पर्याय कितनी
प्राण कितना

उत्तर

तिर्यंच गति
एकेन्द्री
वायुकाय
एक स्पर्श इन्द्री
४ च्यार, ऊपर प्रमाणे
४ च्यार, ऊपर प्रमाणे

११ उच्च, लता, पान, फूल, फल, लीला,

फूलण आदि वनस्पतिकायनी

प्रश्न

उत्तर

गति काई	तिर्यंच गति
जाति काई	एकेन्द्री
काय काई	वमस्पतिकाय
इन्द्रियां कितनी	एक स्पर्श इन्द्रो
पर्याय कितनी	चार, ऊपर प्रमाणे
प्राण कितना	चार, ऊपर प्रमाणे

१२ लट गिंडोला आदि वेन्द्रोकी

प्रश्न

उत्तर

गति काई	तिर्यंच गति	
जाति काई	वेन्द्रो	
काय काई	त्रस काय	
इन्द्रियां कितनी	२ दोय, स्पर्श, रस, इन्द्रो	
पर्याय कितनी	५ पांच मन पर्याय टली	
प्राण कितना	६ छव, रस इन्द्रो बल प्राण	१
	स्पर्श इन्द्रो बल प्राण	२
	काय बल प्राण	३
	श्वासोश्वासबल प्राण	४
	आडखो बल प्राण	५
	भ्रमरा बल प्राण	६

१३ कोड़ी सक्कोड़ा आदि तेइन्द्रीका

प्रश्न	उत्तर
गति काई	तिर्यच गति
जाति काई	तेइन्द्री
काय काई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	३ तीन, स्पश १ रस २ घ्राण ३
पर्याय कितनी	५ पांच, मन टली
प्राण कितना	७ सात, छव तो ऊपर प्रमाणे घ्राण इन्द्री बल प्राण बध्यो

१४ साखी सच्छर टीडी पतंगिया विष्णु आदि
चोइन्द्री का

प्रश्न	उत्तर
गति काई	तिर्यच गति
जाति काई	चोइन्द्री
काय काई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	४ च्यार, श्रुत इन्द्री टली
पर्याय कितनी	५ पांच, मन टली
प्राण कितना	८ आठ, सात तो ऊपर प्रमाणे एक चक्षू इन्द्री बल प्राण और बध्यो

१५ पंचेन्द्रीकी

प्रश्न	उत्तर
गति कितनी पाये	४ च्यारुं हो पाये

जाति कांई

पंचेन्द्री

काय कांई

अस काय

इन्द्रियां कितनी

पांचोही

पर्याय कितनी

६ छवों ही पावै सन्नीमें, और

असन्नीमें ५ पांच, मन टल्यो,

सन्नीमें तो १० दशुं ही पावै,

असन्नी में ६ पावै मन टल्यो

प्राण कितना पावै

१६ नारकी पूछा

प्रश्न

उत्तर

गति कांई

नरक गति

जाति कांई

पंचेन्द्री.

काय कांई

अस काय

इन्द्रियां कितनी

५ पांचोही

पर्याय कितनी

५ पांच, मन भाषा भेली लेखवी

प्राण कितना

१० दशोही

१७ देवताकी पूछा

प्रश्न

उत्तर

गति कांई

देव गति

जाति कांई

पंचेन्द्री

काय कांई

अस काय

इन्द्रियां कितनी

५ पांचोही

पर्याय कितनी

५ मन भाषा भेली लेखवी

प्राण कितना

१० दशोही

१८ मनुष्य की पूछा असन्नी की

प्रश्न

गति काई
जाति काई
काय काई
इन्द्रियां कितनी
पर्याय कितनी
प्राण कितना

उत्तर

मनुष्य गति
पंचेन्द्री
त्रस काय
५ पांच
३॥ श्वास लेवेतो उश्वास न
७॥ श्वास लेवेतो उश्वास न

१९ सन्नी मनुष्य की पूछा

प्रश्न

गति काई
जाति काई
काया काई
इन्द्रियां कितनी
पर्याय कितना
प्राण कितना

उत्तर

मनुष्य गति
पंचेन्द्री
त्रस काय
५ पांच
६ छव
१० दश

- १ तुमे सन्नीके असन्नी ? सन्नी, किणन्याय मन
- २ तुमे सूजमके बादर, ? बादर किण० ? दीखूं
- ३ तुमे त्रमके स्यावर ? त्रस, किण० ? हालू चालूं
- ४ एकेन्द्री सन्नी के असन्नी—असन्नी, किण०
- नहीं ।
- ५ एकेन्द्रो सूजम के बादर—दोनूं ही छे

एकेन्द्री दोय प्रकार की है, दीखै ते बादर है, नहीं दीखै ते सूक्ष्म है ।

६ एकेन्द्री त्रस के स्यावर—स्यावर है, हाल चालै नहीं ।

७ एकेन्द्री में इन्द्रियां कितनी—एक स्पर्श इन्द्री (शरीर) ।

८ पृथ्वीकाय अप्पकाय तेउकाय वायुकाय वनस्पति-काय ।

प्रश्न

उत्तर

सन्नी के असन्नी

असन्नी छै मन नहीं

सूक्ष्म के बादर

दोनों ही प्रकार की छै

त्रस के स्यावर

स्यावर छै

९ बेइन्द्री तेइन्द्री चौइन्द्री को पूछा

प्रश्न

उत्तर

सन्नी के असन्नी

असन्नी छै मन नहीं

सूक्ष्म के बादर

बादर छै

त्रस के स्यावर

त्रस छै

१० तिर्यच पंचेन्द्री की पूछा

प्रश्न

उत्तर

सन्नी के असन्नी

दोनों ही छै

सूक्ष्म के बादर

बादर छै

त्रस के स्यावर

त्रस छै

११ असन्नी मनुष्य चौदे स्थानकमें नीपजै

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	असन्नी छै
सूक्ष्म के वादर	वादर छै
व्रस के स्थावर	व्रस छै

१२ सन्नी मनुष्य ते गर्भ में उपजै जिगारी पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	सन्नी छै
व्रस के स्थावर	व्रस छै
सूक्ष्म के वादर	वादर छै

१३ नारकी का नेरीया कौ पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	सन्नी छै
सूक्ष्म के वादर	वादर छै
व्रस के स्थावर	व्रस छै

१४ देवता कौ पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	सन्नी छै
सूक्ष्म के वादर	वादर छै
व्रस के स्थावर	व्रस छै

१५ गाय भैंस हाथी घोड़ा बलद मर्ची आदि पशु
जानवर कौ पूछा

प्रश्न

उत्तर

सन्नी के असन्नी

दोनों ही प्रकार का छै छिमो

छिमके मन नहीं, गर्भज के मन छै

सूक्ष्म के बादर

बादर छै, नेत्रसे देखवा मे आवै छै

ब्रस के स्थावर

ब्रस छै हालै चालै छै

१ एकेन्द्रौ मे वेद कितना पावै एक नपुंसक वेद पावै ।

२ पृथ्वी पाणी वनस्पति अग्नि वायरो यां पांचां मे वेद कितना पावै—१ एक नपुंसक ही छै ।

३ वेङ्गुन्दी तेङ्गुन्दी चोङ्गुन्दी मे वेद कितना पावै—
एक नपुंसक वेद ही पावै छै ।

४ पंचेन्द्रौमे वेद कितना पावै—सन्नी में तो तीनों ही वेद पावै छै, असन्नीमे एक नपुंसक वेदही छै ।

५ मनुष्यमे वेद कितना पावै—असन्नी मनुष्य चौदे यानक मे उपजै जीणां मे तो वेद एक नपुंसक ही पावै छै, सन्नी मनुष्य गर्भमे उपजै जिणांमे वेद तीनोंही पावै छै ।

६ नारकी में वेद कितना पावै—एक नपुंसक वेद ही पावै छै ।

७ जलचर थलचर उरपर भुजपर खिचर यां पांच प्रकार का तिर्यचा मे वेद कितना पावै—छिमो-

छिम उपजै ते असत्री कै जिणामें तो वेद नपुंसा
हो पावै कै, अने गर्भ में उपजै ते सत्री कै जि.
से वेद तीनोंही पावै कै ।

८ देवतासे वेद कितना पावै—उत्तर—भवनपती,
वाणव्यन्तर, जोतिषी, पहिला दूजा देव लोक
तांई तो वेद दोय स्त्री १ पुरुष २ पावै कै, और
तीजा देवलोक से स्वार्थ सिद्ध तांई वेद एक
पुरुष हो कै ।

९ चौबीस दण्डक का जीवां के कर्म कितना
उगणीस दण्डकका जीवांमें तो कर्म आठही
पावै कै, अने मनुष्य में सात आठ तथा चार
पावै कै ।

१ धर्म व्रत में के अव्रत मे—व्रत में ।

२ धर्म आज्ञा मांहि के बाहिर श्रीबीतरागदेव को
आज्ञा मांहि कै ।

३ धर्म हिंसा में के दया में—दया में ।

४ धर्म मोल मिलै के नहीं मिले—नहीं मिलै,
धर्म तो असृत्य कै ।

५ देव मोल मिलै के नहीं मिलै—नहीं मिलै,
असृत्य कै ।

गुरु मोल लियां मिले की नहीं मिले—नहीं मिले,
अमृत्य है ।

० साधुजी तपस्या करै ते ब्रत में की अब्रत में
ब्रत पुष्टको कारण है अधिक निर्जरा धर्म है ।

२ साधुजी पारणो करै ते ब्रत में की अब्रत में
अब्रतमें नहीं, किणन्याय ? साधुकी कोई प्रकार
अब्रत रही नहीं सब सावदा जोगका त्याग है ।
तिणसूं निरजरा थाय है तथा ब्रत पुष्टको
कारण है ।

६ श्रावक उपवास आदि तप करै ते ब्रत में की
अब्रत में—ब्रत में ।

० श्रावक पारणो करै ते ब्रत में की अब्रत में—
अब्रत में किणन्याय ? श्रावक को खाणों पीणों
पहरणों ए सर्व अब्रत में है श्रीउववाई तथा
सूयगडांग सूत्र में बिस्तारकर लिख्या है ।

११ साधुजी नें सूजतो निदोष आहार पाणी दियां
काई होवे, ब्रतमें की अब्रतमें—अशुभ कर्म जय
थाय तथा पुन्य बंधै है, १२ मूं ब्रत है ।

१२ साधुजी नें असूजतो दोषसहित आहार पाणी
दियां काई होवै तथा ब्रत में की अब्रत में—
श्री भगवती सूत्र में कह्यो है, तथा श्री ठाणांग

सूत्र के तीजे ठाणें सँ कच्चो छै अल्प आयुबंधे
अकल्याणकारो कर्म बंधे तथा असूजतो दीधोते
व्रत सँ नहौ । पाप कर्म बंधे छै ।

१३ अरिहंत देव देवता के मनुष्य—मनुष्य छै ।

१४ साधु देवता के मनुष्य—मनुष्य छै ।

१५ देवता साधुनों वंछा करै के नहीं करै—करै
साधु तो सबका पूजनीक छै ।

१६ साधु देवताको वंछा करैके नहीं करै—नहीं करै ।

१७ सिद्ध भगवान देवता के मनुष्य—दोनू नहीं ।

१८ सिद्ध भगवान सूक्ष्म के वादर—दोनू नहीं ।

१९ सिद्ध भगवान त्रसके स्थावर—दोनू नहीं ।

२० सिद्ध भगवात सन्नी के असन्नी—दोनू नहीं ।

२१ सिद्ध भगवान पर्याप्ता के अपर्याप्ता—दोनू नहीं ।

॥ इति पानाकी श्रचा ॥



अथः प्रतिक्रमण ।

अर्थ सहित ।

गमो अरिहंताणं गमो सिद्धाणं गमो
नमस्कार थावो श्री अरिहन्त नमस्कार थावो श्री नमस्कार
भगवन्त नैं सिद्ध भगवान नैं थावो
आयरियाणं गमो उवज्झायाणं गमो लोए
श्री आचारज नमस्कार थावो श्री नमस्कार थावो
महाराज नैं उपाध्याय महाराज नैं लोक के द्विचै
सब्ब साहुणं ।
सर्व साधु मुनिराजों नैं ।

॥ अथ तिख्खुता की पाटी ॥

● अर्थ सहित ●

तिख्खुत्ता आयाहिणं पयाहिणं वंदामि नमं
तीम वार दाहिणा प्रदक्षिणा वंदना सत्कार नम
पासाथी देई करुं स्कार

सामी सक्कारिमी समाणेमी कक्षाणं मंगलं
फरुं सत्कार देऊ सनमान करुं कल्याणकारी
मंगल कारी
देययं चैद्वयं पक्खुवासामी मत्थएण्ण बंदामी
धर्म देव चित्त प्रसन्न सेवता करुं मत्तके करो बंदना
कारी ज्ञान नमस्कार
वंत करु
बुद्धामि पड़िक्कमिओ इरिया वहियाए
इच्छूं, वाच्छूं प्रतिक्रमवोते मार्ग नें विषे ज्यो
निवत्तं वो
गमणागमणे पाणक्कमणे
विराइणा ए जातां आतां प्राणी वेदियादि नो
विराधना इइ आक्रमण करणूं ते
होय वचणूं
वीयक्कमणे हरियक्कमणे ओसा उत्तिंग - पणम
पांजको दावणूं हरि लीलीके ओसको कीडीका नीलण
दावणूं विल फूलण
दग मट्टी मकड़ा संताणा संकमणे जे
पाणी को माट्टीका मकड़ी का जाला मईवो तो जे
दावलो जीव इया होय
मे जावा विराइया एगिदिया वेईदिया
मे जीव विगइयो होय एकेन्ट्री जीव वेइन्ट्री जीव
तेईदिया चउरिंदिया पंचेंदिया चभी
तेइन्ट्री जीव चौदन्ट्री जीव पंचाइन्ट्री जीव सनमु

हया वस्तिया लेसिया संघाड्या संघ
 भाताहण्यां धूलसे रगड्या घातन कस्या संघट्ट
 घरती करी ढक्यां

ट्रिया परियाविया किलामिया उडविया
 किया हरिताप्या कीलामना उपजाई उपद्रव किया
 ठाणा उठाणा संकामिया जीवियाचो वव
 एक स्थानसे दूसरे स्थान पटक्या जीवत से
 रोविया तस्समिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥
 नासकिया तेहनो मिच्छामि दुक्कडं ।

॥ अथ तस्सुत्तरी ॥

तस्सउत्तरी करणेणं पायच्छित्त करणेणं
 तेहनो उत्तर करवो प्रायश्चित्त करवो
 प्रधान
 विसोही करणेणं विसल्ली करणेणं
 विशुद्धि करवो सत्य रहित करवो
 पावाणं कम्माणं निग्घाय शाट्टाए
 पाप कर्मका नास करवा निमित्त
 ठामि करेमि काउसग्गं अन्नत्थ
 स्थिरं करुंछुं काय उत्सर्ग इण सुजव
 दुई पतलो विशेष
 ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं कोएणं
 ऊंवास्वास नीवास्वास खांसी कीक

जंभाद्वयं उवासी
 उड्डुःएणं डकार
 वाय निसग्गेणं भमलीए भंवल
 अघोवायु
 अङ्गसंचालेहिं
 सुहुमेहिं सुक्ष्मपणे
 शरीरको हालवो
 पित्तमुच्छ्राए
 पित्तकर मूर्च्छा
 दिट्ठिसंचालेहिं
 सुहुमेहिं खलसंचालेहिं
 दृष्टी चलावो
 सुक्ष्म
 संचाल
 अमग्गो अविराही
 एवसाइएहिं
 आगारेहिं
 ध्यान भांगे नहीं
 वीराधना
 इत्यादिक यह
 आधार से
 जाव
 अरिहं
 ज हुज्ज
 मे काउस्सगं
 ध्यान जिहां तक
 नहीं होज्यो
 मनें काउसगते
 अरि
 ताणं भगवंताणं
 नमोकारेणं
 नपारेमि
 हन्त भगवन्तने
 नमस्कार करीने
 नहीं पारुं
 ताव कायं
 ठाणेणं सोणेणं
 भाणेणं
 तठाताई शरीरसे स्थानसे
 मौनकरी
 ध्यानकरी
 अप्पाणं वोसगमि ॥ इति ॥
 आतमां ने पापथकी वोसराजं ।

॥ अथ लोगस्स ॥

लोगस्स उज्जीयगरे धम्म तित्थयरेजि
 लोक के विषे उध्योतकारी धर्म तिर्यं करता
 अरिहन्ते किराइसं चउवोसंपि क्षेत्र
 अखिन्ताकी कान्ति करुं चोयीस वे

उसभ मजियं च बंदे संभव मभिनंदणं च
 ऋषभ अजित पुन. बंदु संभवनाथ अभिनन्दनजी पुनः

सुमदं च मउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं
 सुमति पुनः पद्म प्रभु सुपार्श्व जिन पुन. चदा प्रभु
 नाथजी

बंदे सुविहिं च पुप्फदंतं सीयल सिज्जंस
 बंदु सुविध पुनः दूसरो ना सीतल श्रेयांस
 पुप्फदंत

वासुपुज्जं च विमल मणं तंच जिणं धम्मं
 वासुपूज्य पुनः विमलनाथ अनन्तनाथजिन धर्मनाथ
 संति च बंदामि ३ कुंथु अरिहं च मल्लि
 शान्ति पुनः बंदु कुन्थु अर पुनः मल्लिनाथ
 नाथ नाथ

बंदे मुंणिमुब्बयं नमि जिणं च बंदामि
 बंदु मुनिसुव्रत नमि जिन पुनः बंदु
 रिट्ठनेमि पासं तह वड्डुमाणं च ४ एवं
 अरिष्टनेम पार्श्वनाथ तथारूप वर्द्धमान पुनः बंदु यह
 मये अभियुया विद्धय रयमला पहीणा जर
 में स्तुति करि दूर किया कर्म रूप खीणभया जनम
 रंजवैल

मरणा चज्ज वीसंपि जिणवरा तित्थ, यरा मे
 मर्णजिणाका पद्दवा चौवीस जिन राज तियेङ्कर म्हादे

लं भाव्यं उड्डुः एणं वायु निसर्गो गं भमली ए
 उवासी डकार अधोवायु भंघल
 पित्तसुच्छाए सुहुमेहिं अङ्गसंचालेहिं
 पित्तकर मूर्च्छा सूक्ष्मपणे शरीरको हालवो
 सुहुमेहिं खिलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं
 सूक्ष्मपणें श्लेष्मको संचाल सूक्ष्म दृष्टी चलावो
 एवसाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराही
 इत्यादिक यह आधार से ध्यान भांगे नही वीराधना
 ऊ हुज्ज मे काउस्सगं जाव अरिहं
 तहीं होज्यो मने काउसगते ध्यान जिहां तक अति
 ताणं भगवंताणं नमोक्कारेणं नपारेमि
 हन्त भगवन्तने नमस्कार करीने नहीं पारुं
 ताव कायं ठाणेणं मोखेणं भाणेणं
 तठाताई शरीरसे स्थानसे यौनकरी ध्यानकरी
 अप्पाणं वोसरामि ॥ इति ॥
 मातमां ने पापयकी वोसराजं ।

॥ अथ लोगस्स ॥

लोगस्स उक्कीयगरे धम्म तित्थियरेजिणे
 लोक के विषे उध्योतकारी धर्म तिथे करता जिन
 अरिहन्तं चउवोसं पि चउवोसं पि केवली
 धस्सिन्ताकी कीर्ति करुं दोवीस वे देवत

सम मजियं च बंदे संभव सभिनंदणं च
 अजित पुन. बंदु संभवनाथ अभिनन्दनजी पुनः
 मद्रं च पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं
 मति पुनः पद्म प्रभु सुपाश्वं जिन पुन. चदा प्रभु
 नाथजी

बंदे सुविहिं च पुप्फदंतं सीयल सिज्जंस
 बंदु सुविध पुनः दूसरो ना सीतल श्रेयांस
 पुप्फदत

वासुपुज्जं च विमल मणं तंच जिणं धम्मं
 वासुपूज्य पुनः विमलनाथ अनन्तनाथजिन धर्मनाथ
 संति च बंदामि ३ कुंथु अरिहं च मल्लिं
 शान्ति पुनः बंदु कुन्थु अर पुनः मल्लिनाथ
 नाथ नाथ

बंदे मुणिसुब्बयं नमि जिणं च बंदामि
 बंदु मुनिसुव्रत नमि जिन पुनः बंदु
 रिट्ठमेमि पासं तह वड्डमाणां च ४ एवं
 अरिष्टनेम पार्श्वनाथ तथारूप धर्म्ममान पुनः बंदु यह
 मये आभिधुया विह्वय रयमला पहौणा जर
 में स्तुति करि दूर किया कर्म रूप खीणभया जनम
 रंजयैल

मरणा चज वीसंपि जिणवरा तित्थ, यरा मे
 मर्णजिणाका प्पहवा चौवीस जिन राज तिर्यङ्कर म्हादे

पमौयं तु ५ किन्तिय वंदिए महिया जे ।
प्रसन्नभावो कीर्तिकरी वंदु मोटा प्रते तेह

पुण्या ध्याय

लोगरूम उत्तमा मिद्धा आरोग्य वीहिला
लोकने प्रिये उत्तम सिद्ध छै रोग रहित समकित

बोध ला

समाहि वर मुत्तमं दिंतुं ६ चंदेसु निम्न
समाधि प्रधान उत्तम देवो - अन्तमाथी निमं
यरा आइहेसु अहियं प्रयासयरा सागर वर
घणां सूर्यथी अधिक प्रकाश करी समुद्र समान
गम्भीरा मिद्धा मिद्धिं मम दिसंतु ७
गंभीर एहवा सिद्ध सिद्धी मनै देवो

॥ अथः नमोत्थुणं ॥

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं
नमस्कार धावो अरिहन्त भगवंत ने धर्म की भादि
करता

तित्वयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसोत्तमाणं
तीर्थ करता बिना गुरु पोते प्रति पुरुषांमें उत्तम
ओध पाभ्यां

पुरिस सिंहाणं पुरिमवरपुंडरीयाणं पुरि
पुरुषांमें सिंह समान पुरुषा ने पुंडरिक पुरुषा
कमल समान में

मवर, गन्ध हृत्थीणं नोगुत्तमाणां लोगनाहाणां
 गंध हाथी समान लोक मे उत्तम लोकका नाथ
 लोगहियाणां लोगपर्द्धवाणां लोगपज्जोय गराणां
 लोकमे हित लोकमें प्रदीप लोकमें उद्योत कारी
 कारी समान

अभयदयाणां चक्खुदयाणां मग्गदयाणां सरणदयाणां
 अभय दान ज्ञान चक्षु सुमार्ग दायक शरण दायक
 दाता दायक

जीवदयाणां बोहिदयाणां धम्मदयाणां धम्मदेश
 संजम जीत्वं बोधदायक धर्म दायक धर्म देशनां
 दायक

याणां धम्मनायगाणां धम्मसारहीणां धम्मवर
 दायक धर्मका नायक धर्मका सारथी उत्तम धर्मकर

चाउरंत चक्खवट्टीणां दीवोताणां सरणगई पट्ठा
 व्याप गतिका अंतकारी चक्र द्वीपा समान शरणागत नै
 वर्त समान

अप्पडिहय, वरजाणां दंसणां धराणां विश्वदृच्छ
 अप्रतिहत प्रधानज्ञान दर्शन धारक निवर्त्यो
 माणां जिणाणां जावयाणां तित्थिणां ताग्याणां
 छप्पस्थ जीत्या अने जीतावे पोते तीस्ता दूसरानें
 पणो दूजाने तारे

बुद्धाणां बोहियाणां मुत्ताणां मीयगाणां सव्वनूणां
 पोते प्रति दूजाने प्रति कर्मथी दूजाने सत्यज्ञा
 बोध पास्या बोधे मुकाध्या मुकावे

सर्वदुःखसोऽणं	शिवमयल	मरुथ	मगत
सर्व दर्शण	कल्याणकारी	अरुज	अनन्त
अचल			

सर्वदुःख सव्वावाह मण्णुणागावन्ती सिद्धिगर्ह
 अक्षय अन्यान्यायि फेरु आवे नहीं इसी सिद्धगति
 नामधेयं ठाणं सपत्ताणं नमो जिणाणं ॥ इति ॥
 नामवाला स्थान प्राप्त हुआ ज्यां जिनेश्वरानें
 नमस्कार थावो

अथ आवस्सही इच्छामिणं भन्ते ।

आवस्सही इच्छामिणं भन्ते तुव्भहिं अब्भणुं
 अवश्य इच्छूं छूं मैं हे भगवान तुम्हारी आज्ञासे
 नायेसमाणे देवसी पडिक्कमणूं ठाएमि देवसी
 दिवस प्रति क्रमण करूं दिवस
 संवन्धी संवन्धी
 ज्ञान दर्शन चारित तप अतिचार चिन्तवनायें
 ज्ञान दर्शन चारित तप अतिचार चिन्तवना के
 भरणे

करेमि काउसग्गं ॥

करूं छूं मैं काउसग ते ध्यान

अथ इच्छामि ठामि काउसग्ग ।

इच्छामि ठामि काउसग्गं जो मे देवसिउ अइ
 इच्छूं छूं ठाऊं काउसग ज्यो मैं दियसमें अति

चार कश्चो काईओ वार्द्धओ माणासआ उरमुता
 चार कीनों शरीरसे वचन से मनसे थूंडा सूत्र
 उमगो अकण्णो अकारणिज्जो दुज्जाउ दुब्बि
 उनमार्ग अकल्पनीक नहीं करवा जोग दुर ध्यान खोटी
 चिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो
 चिन्तवना अणाचार नहीं इच्छवा जोग
 असावगपावग्गो नास्से तहहंसणे चरिताचरिते
 श्रावक के नहीं कर ज्ञान दशन देश व्रत
 वा जोग पाप त
 व्रत भंगादि

सुए सामाद्वए तिगहं गुत्तौणं चउराहं कसायाणं
 श्रुत सामायक तीन गुप्ती च्यार कपाय
 पंचराहं मणुव्वयाणं तिगहं गुण वयाणं चउराहं
 पांच अणूव्रत तीन गुण व्रत च्यार
 सिक्खावययाणं वारस्स विहस्स सावग धम्मस्स
 सिक्खा व्रत बारै विधि श्रावक धर्म को
 जं खंडियं जं विराहियं तस्समिच्छामि
 ज्यो खंडमाकरी ज्यो विराधना करी तेहनो मिच्छामि
 दुक्कडं ॥
 दुक्कडं

॥ अथ खमासमणो ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए
 इच्छूं छूं क्षमावंत साधु वंदवा सचितादिछांडी निपप
 शरीरपणें हुई निर्जरा अर्थ

निसोहियाए अणुजाणह मेमि उगगहं निरसही
 शरीर करी आह्ला देवो मुजे मर्यादा, अशुभ जोग
 मांही निवर्ततो

अहो कायं कायसंफासं खमणिज्जो मे किलामो
 चर्ण फर्णवाकी म्हांरी कायासे खमज्यो हे भगवान किलामनां
 आह्ला देवो तुमारा चर्ण
 फर्णतां

अप्पकिलंताणं बहुसुभेण मे दिवसोवर्द्धकं तो
 थोड़ी किलामना बहुत समाधि भावकर, दिवस वीत्यो
 हुई हुवेते तुमारे

जत्ता मे जवणिज्जं च मे खामेमि खमासमणो
 संयम रूप इन्दीनोइन्दीना आपकुं खमाऊं हे क्षमावंत
 यात्राथो तुमारा, उपशम थकी छूं साधु
 निरोग शरीर

देवसियं वद्धकसं आवसिञ्चाए पडिक्कमामि
 दिवस सम्बन्धी व्यतिक्रम अवश्य करणी नां पडिक्कमूं छूं
 अतिचार थकी

खमामन्नणाणं देवसियाए आसायणाए
 हे क्षमावंत श्रमण दिवस संबन्धी आसातना
 तेतीसन्नयणाए जं किंचिमिच्छाए मणदुक्कडाए
 तेतीस मांहिली ज्यो कोई किंचित् मिथ्या मनसे दुष्ट
 क्रियाफरी किया

वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए
 वचन सँ दुक्त काया से दुक्त क्रोधथी मानथी
 मायाए लोभाए सबकालियाए सब्वमिच्छोवयराए
 माया कपट लोभकरी सर्व कालमें सर्व मिथ्याउप
 चारक्रिया

सब्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे देवसिओ
 सर्व धर्म क्रियाका एहवी आसातनाज्यो में दिवस ने
 उलंघन किया बिखे

अइयार कओ तरस खमासमणो पडिक्कसाभि
 अति चार किया तेहनों हे क्षमावंत श्रमण निवर्तू छूं
 निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥
 निन्दूं छूं गरहूं छूं आतमांथी वोसराउ छूं

अथः आगमें तिविहे पन्नत्ते ।

आगमे तिविहे पन्नत्ते तंजहा सुत्तागमे
 आगम तीन प्रकारे प्ररूप्यो ते कहे छै सूत्र आगम
 अत्यागमे तदुभयागमे ॥ एहवा श्रीज्ञान ने
 अर्थ आगम सूत्र अर्थ दोनूं आगम
 विधै अतिचार दोष लाग्यो होय ते आलोउ—
 जंवाइधं वच्चामेलियं हिक्खवरं अच्चक्खरं पयहीणं
 जे कोई बचन मिलाया हीणअक्षर अधिक पदहीण
 होय भक्षर

विणयहौण जागहिण घौसहिण सुट्ठुदिणं

विनय होण ते मन वचन उच्चारण चोखो सूत्र

अविनय काया हीण दीनूं अवनीतने

टुट्ठुपडिच्छियं अक्खल्लेकउ सिज्झाउ काले

घोटा सूत्रकी इच्छा विनाकाळे सज्झाय करी सज्झा

करी यनां

न कउसिज्झाउ असिज्झाए सिज्झाए सिज्झाए

कालमें सज्झाय न असज्झाय में सज्झाय सज्झायमें

करी करी

न सिज्झाए अणतां गुणतां चितारतां चोखतां ज्ञानकौ

सज्झाय न करी

ज्ञातवंत यौ आमातनां करो हावे तस्समिच्छामिदुक्खडं ।

तेहनो मिच्छामि दुक्खडं

अथः दंसणश्रीसमकित ।

दंसणश्रीसमकित अरिहंतो यहदेवो जावजीवं

सच्छत्रजना ते नमकित, तेह अरिहन्त मांहिरे, जाव जीव

दर्शग

देव

लग

सुमाहुणो सुसुणो जिणपन्नतं तत्तं दूयसम्मत्तं

सुख नाधु सुण जिण फण्यो ते तत्त्व यह समकित

धम्म

सए गच्छिदं ।

में प्रदणदित्या

एहवा समकितने विषै जे कोई अतिचार लाग्या
 होय ते आलोउं, जिन बचन सांचा न सरध्या होय,
 न प्रतित्याहोय, न रुच्या होय, पर दर्शगरी आकांक्षा
 बंका कीधी होय, फल प्रते संशय संदेह आण्ठा होय,
 पर पाषण्डी कौ प्रशंसा करी हुवे साख्खतो परिचय
 कीधी होय । एहवाभौ समकित रूपौ रत्न उपरि
 मित्थ्यात्व रूप रंज मैल खिह लागी होय तरसमिच्छामि
 दुक्कडं ।

॥ अथ बारै व्रत ॥

पढमे अणुव्वए थूलाउ पाणाइवायाउ
 प्रथम देशथी व्रत मोटको प्राणाति पात को
 विरमणं, व्रत पांच बाले करी उलखौजै, द्रव्यथकौ
 निवर्तवो व्रत
 त्रस जीव बेईन्द्री तेईन्द्री चौईन्द्री पंचेन्द्री विन
 अपराधे आकुटौ हणवानौ विधि करीनं सउपयोग
 हणूं नहीं हणाउ नहीं मनसा वायसा कायसा ॥
 द्रव्यथकी एहिज द्रव्य, क्षेत्रथकौ सर्व क्षेत्रां मांहि
 कालथकी जावजीवलग, भावथकी राग द्वेष रहित
 उपयोग सहित गुणथकी संवर निर्जरा, एहवा म्हारे
 पहला व्रतनें विषै जे कोई अतिचार दोष लागो
 होय ते आलोउं ।

जीवनें गाठै वस्त्रन बांध्या होय १ गाठा घाव
घाल्या होय २ चामड़ी छेदन किया होय ३ अति
भार घाल्या होय ४ भात पाणीनां विच्छोहा कीनां
होय ५ तस्स सिच्छामि दुक्कडं ।

दौण अणुव्वए थूलाउ सूसावायाउ विरमणं
वोजो अणू व्रत स्थलथी भूंट वोलवो निवर्तवो
पांचे' वाले करी ओलखौजै द्रव्यथकी कनालिक १
कन्याके ताई भूठ

गोवालिक २ भौमालिक ३ थापण मोमा ४
गाय भैंसादि भूमि निमित्त लेकर नटवो
कारण भूठ भूठ

कूड़ोमाख ५

भूठी लाखी

इत्यादिक मोटकी भूठ मर्याद उपरांत बोलूं नहीं
बोलाउं नहीं मनसा वायसा कायसा, द्रव्यथकी एहीज
द्रव्य, जेवथकी सर्व जेवामे कालथकी जाव जीव
लग, भावथकी राग द्वेष रहित, उपयोग सहित,
गुणथकी संवर निर्जरा, एहवा म्हारै दूजा व्रतने विषे
ज कोइ अतिचार दोष लागो होय ते आलाजं ।

किणहीं प्रते कूड़ो आलादियो होय १

रहस्य कानो बात प्रगट करी होय २

स्त्री पुरुषनां मर्म प्रकाश्या होय ३

मृषा उपदेश दोधां होय ४

कूड़ा लेख लिख्यो होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं
तद्वये अणुव्वए थूलाउ अदिन्ना दाणाउ विरमणं
तीजो अणुव्वत स्थूलथकी अणदीयो लेवो ते चोरीको
निवर्तवो

पांचे बोले करी ओलखीजे द्रव्यथकी खात्र खणी
गांठखोलौ तालो पडकूंचीकरौ वाटपाड़ी पड़ीवस्तु
मोटकी सधणियां सहित जाणी इत्यादिक मोटकी
चोरी मर्याद उपरांत करूं नहीं कराउं नहीं मनसा
बायसा कायसा द्रव्यथकी एहिज द्रव्य, चेतथकी
सर्व चेत्रां मे, कालथकी जावजीवलगे, भावथकी
राग द्वेष रहित, उपयोग सहित, गुणथकी संवर
निजरा एहवा म्हारै तीजाव्रतमें ज्यो कोई अतिचार
लागे होय ते आलोउं ।

चोरकी चुराई वस्तु लीधी होय १ चोरने सहाय
दीधो होय २ राज विरुद्ध व्योपार कीधी होय ३
कूड़ा तोला कूड़ामापा किया होय ४ वस्तु में
भेल समेल कीधी होय ५ सखरी दिखाय नखरी आपी
होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

॥ इति ॥

चउत्थ अणुत्थ थूलाउ सेहुणाउ विरमणं
 चांशो अणुत्थ स्थूलथकी मैथुनकी निवर्तवो
 पांचा वानांकारो आलखीजे द्रव्यथकी तो देवता देवां-
 गना सखन्धिया मैथुन सेवूं नहीं सेवावूं नहीं तिर्यंच
 तिर्यंचणी सखन्धी मैथुन सेवूं नहीं सेवावूं नहीं
 मनुष्य सखन्धो संयुन सेवूं नहीं सेवावूं नहीं, मनु-
 ष्यणी सखन्धी मैथुन सेवाकी मर्याद कीधी है तिण
 उपरांत सेवूं नहीं सेवावूं नहीं मनसा वागसा
 कायना, द्रव्यथकी एहिज द्रव्य क्षेत्रथकी सर्व क्षेत्रांमे
 कालथकी जावजीव लगे, भावथकी राग द्वेष
 रहित उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा एहवा
 इहांचै चौथा व्रतमे ज्यो कोई अतिचार दोष लागो
 होय ते आलोउ ।

धाड़ा कालकी राखी परिग्रही सूं गमन कीधी होइ १
 अपरिग्रही सूं गमन कीधी होय २ अनेक क्रिड़ा कीधी
 होय ३ परायानाता विवाह जोड़्या होय ४ काम
 भाग तिव्र अभिलाषासे सेव्या होय ५

तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

पंचम अणुबण्ड यूलाउ परिगहाउ विरमणं
 पांचमूं अणुब्रत स्थूलथकी परिग्रह ते धनको निवर्तवो
 पांचां ब्रोलां करी जलखीजै द्रव्य थकी खेतु
 उघाड़ी जमीन

वत्यु यथा प्रमाण हिरण्य सुवन्न यथा प्रमाण
 ढकी जमीन जेह प्रमाण कीधो चांदी सोनांको जे प्रमाण कीधो
 धन धान यथा प्रमाण द्विपद चउप्पद यथा प्रमाण
 द्रव्य धाननों जेह प्रमाण कीधो दासदासी हाथी घोड़ा, जे प्रमाण
 दिक चोपद कीधो

कुंभी धातु यथा प्रमाण ।

तांबो पीतल लोहादि नो जेह प्रमाण

द्रव्यथकी एहिज द्रव्य, क्षेत्रथकी सर्व क्षेत्रांमें
 कालथकी जावजीव लगे, भावथकी राग द्वेष
 रहित उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा एहवा
 म्हांरा पांचवां अणुब्रतमें ज्यो कोई अतिचार लागी
 होय ते आलोउं, खेतु वत्युरी प्रमाण अतिक्रम्यु
 होय १ हिरण्य सुवर्णरो प्रमाण अतिक्रम्यु होय २
 धन धानरो प्रमाण अतिक्रम्युं होय ३ द्विपद चउपदरो
 प्रमाण अतिक्रम्युं होय ४ कुंभी धातुरो प्रमाण अति-
 क्रम्युं होय तस्समिच्छामि दुक्कडं ।

॥ इति ॥

कटो दिशि व्रत पांचां बालां ओलखीजै द्रव्य
 यकी तो उंची दिशारो यथा प्रमाण, नीची दिशारो
 यथा प्रमाण, तिरछी दिशारो यथा प्रमाण, यां
 दिशारो प्रमाण कीधो तेह उपरान्त जायकर पंच
 आसव द्वार सेजं नहीं सेवाजं नहीं मनसा वायसा
 कायसा द्रव्ययकी तो एहिज द्रव्य जे चथी सर्व जे चां
 सें कालथकी जाव जीवलग भावथकी राग द्वेष रहित
 उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा एहवा मांहरै
 कट्टा व्रतके विषै जे बीरई अतिचार दोषलागी हुवे
 ते आलोउं ।

जंची दिशारो प्रमाण अतिक्रम्यो होय १
 नीची दिशारो प्रमाण अतिक्रम्यो होय २
 तिरछी दिशारो प्रमाण अतिक्रम्यो होय ३
 एक दिशा घटाई होय एक दिशा बधाई होय ४
 पंधमें आघो संदेह सहित चाल्यो चलायो होय ५
 तस्समिच्छामि दुक्कड' ।

॥ इति ॥

सातमं उपभोग परिभोग व्रत पांचां बालां करी ओल-
 खीजै, द्रव्ययकी छत्तीस बालांकी मर्याद ते कहै छै
 उलणीयां विहं १ दंतनविहं २ फल विहं २
 बंग पूछनादि विधि दांतन विधि फल विधि

अभिङ्गण बिहं ४ उवट्टण बिहं ५ मंजण बिहं ६

तेलाभिङ्गादि उवट्टणादि की स्नानकी विधि
तेल मालिस विधि

बल्य बिहं ७ विलेवण बिहं ८ पुष्प बिहं ९

वस्त्र विधि विलेपन विधि पुष्प विधि

आभरण बिहं १० धूप बिहं ११ पेज बिहं १२

गहणां पहरवा विधि धूपकी विधि दूध आदि
पीवाकी विधि

भट्ठखण बिहं १३ उदण बिहं १४ सूप बिहं १५

सूखड़ी आदि चावल की विधि दालकी विधि
भक्षण की विधि

बिगय बिहं १६ साग बिहं १७ मधुर बिहं १८

बिगयकी विधि सागकी विधि मधुर तथा वेलादि फल

जोमण बिहं १९ पाणी बिहं २० मुखवास बिहं २१

जोमणकी विधि पाणीकी विधि मुखवास तांबूलादि
की विधि

बाहण बिहं २२ सयण बिहं २३ पट्ठी बिहं २४

गाड़ी प्रमुखकी सोवाकी विधि पगरखी की
विधि पाटा कुरसी आदिपर विधि

संचित्त बिहं २५ द्रव्य बिहं २६

संचित्त की विधि द्रव्यकी विधि

ए छबीस बोलांकी मर्याद करी, जिण उपरान्त

भोगवूं नहीं मनसा वायसा, कायसा, द्रव्यकी

एहिज द्रव्य चैतयकी सर्व चैतामें, कालयकी जाव

जीवलग, भावंधकी राग द्वेष रहित, उपयोग सहित
 गुणधकी संवर निजरा, एहवा मांहरा सातमां व्रत
 के विषे जे कोई अतिचार दोष लागे हुवे ते आलीजं
 पच्चखाणां उपरान्त सचित्तरो आहार किनो होय १
 पच्चखाजां उपरान्त द्रव्यरो आहार किनो होय २
 पच्चखाणां उपरान्त गहिणां अधिका पहस्या होय ॥ ३ ॥
 पच्चखाणां उपरान्त कपड़ा अधिका पहस्या होय ॥ ४ ॥
 पच्चखाणां उपरान्त उपभोग परिभोग अधिका भोगवरा
 होय । तस्समिच्छामि दुक्कडं ।

पंदरह करमांदान जाणवा जोग छै पण
 आदरवा जोग नहीं ते कहै छै ।

डंगालकम्मे १	वणकम्मे २	साड़ीकम्मे ३
धनि करि लूहा- रादि कर्म	वन कर्म ते वनमे घास, दरखतादि काटवो	सकट कर्म ते गाड़ीप्रमुखनो कर्म
भाड़ी कम्मे ४	फोड़ी कम्मे ५	दन्तवाणिज्जे ६
भाड़ा कर्म	लूपादि कर्म ते नारेल सुपारी पत्थर आदि फोड़वो	दांतको चिणज ते व्योपार
लखवाणिज्जे ७	रसवाणिज्जे ८	केसवाणिज्जे ९
लाग को वाणिज्य	रस व्यापार ते घां, तैल सहतादि	वाल चमरादि व्योपार

विषबाणिज्जे १०	जन्तु पिलण्यां कम्मे ११
जहरको व्यापार	कल घाणी प्रमुख व्यापार
निलच्छणियां कम्मे १२	दवगीदावणियां कम्मे १३
कसी वधियादि कर्म ते	दावानलदेवो कर्म
ज्यानवराने बाधी कर्म	

सर द्रह तलाव सोसणियां कम्मे १४ असद्वज्जण
सरोवर द्रह तलाव सोषाया ते कर्म असंजतीनें
पोसणियां कम्मे १५ ॥ इति ॥

पोषावा नो कर्म

ए पन्दरे कर्मादान मर्याद उपरान्त सेवाया सेवाया
होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति ॥

आठमूं अनर्थ दंड विरमण व्रत पांचा बेलांकरी
ओलखीजै, द्रवाथकी अवज्झाणचरियं १

भूंडा ध्यान नों आचरवो

पम्माय चरियं २	हंसपयाणं ३	पावकम्भोवएसं ४
प्रमाद करवो	प्राण हिंसा	पाप कर्मको उपदेश

ए च्यार प्रकारे अनर्थ दंड आठ प्रकारका आगार
उपरान्त सेउं नहीं वे कहै कै ।

आएहिउवा १	नाएहिउवा २	आघारिहिउवा ३
आपणे हित	न्यातिके हित	घरके हित

परिवारहिउवा ४	मित्तहिउवा ५	नागहिउवा ६
परिवार के हित	मित्रके हित	नाग देवता निमित्त

भूतहिउवा ७ जख्खहिउवा ८

भूत देवता

जक्ष देवता

निमित्त

निमित्त

द्रवाथकी एहिज द्रवा चेतथकी सर्व चेत्रांमें
कालथकी जाव जीव लग, भावथकी राग द्वेष
रहित उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा,
एहवा स्हांरा आठमां व्रत के विषे जे कोई अतिचार
दोष लागीहुवै ते आलोउ' ।

कांदर्पनी कथा कीधी होय १ भंडकुचेष्टा कीधीहोय २
काम किड़ाकी कथा करवो भान्दनीपरै कुचेष्टाकरी होय
मुखसे अरि वचन बोलया होय ३ अधिकरण
मुखसे छोटा वचन बोलया होय नाताजोड़कर
जोड़ सुकाया होय ४ उपभोग परिभोग
तुड़ाया तथा ह्यो भरतार एकवार भोग बारम्बार भोग
नो चिरह कियो में आवै ते में आवै ते
अधिका भोगवारा होय ५ तरुस मिच्छामि दुक्कडं
मर्याद उपरांत अधिक तो मिच्छामि दुक्कडं
भोग्या होय ते

॥ इति ॥

नवमो सामायक व्रत पांचां बोलान्करी ओलखीजै
करेमि सन्ते सामाईयं सावज्जं जोगं पच्चखामि
कहं हूं मैं हे भगवंत सामायक सावय जोग पच्चखान

जाव नियम (मुहूर्त एक) पञ्जवासासौ दुविहेणं
यावत नियम एक मुहूर्त ते सेऊं छूं दोय करण
दोय घड़ी

तिविहेणं नकरेमि नकारवेमि मनसा वायसा
तीन जोग नहीं करूं नहीं कराऊं मनसे वचन से
कायसा तसभंते पडिक्रमामि निन्दामि गरिहामि
शरीरसे तिणसूं हे पडिक्रमूं निन्दूं छूं ग्रहणा ते
भगवान निषेधूं छूं

अप्याणं वीसरामि ॥

पाप ते आतमानेवोसरऊं छूं

द्रव्यथकी कजे राख्या ते द्रव्य जे लथकी सर्व
जे वांमैं कालथकी एक मुहूर्त तांई भावथकी राग
द्वेष रहित उपयोग सहित गुणथकी संवर निर्जरा
एहवा नवमां व्रतकी विषे जे कीई अतिचार दोष
लागो हुवे ते आलोउ' ।

मन बचन कायाका साठा जोग प्रवर्ताया होय १
पाड़वा ध्यान प्रवर्ताया होय २ सामायक में समता
नहीं करौ होय ३ अण पूगी पारी होय ४ पारवी
विसाखो होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कड' ।

॥ इति ॥

दशमीं देशाबिगासी व्रत पांचां बोलांकरी ओल-
खोजै द्रव्यथकी दिन प्रते प्रभातथौ प्रारंभौने पुर्वादि

छव दिशिरी मर्याद करी तिण उपरान्त जाई पांच
 आस्रव द्वार सेजं नहीं सेवाजं नहीं तथा जेतली
 भोमिका आगार राख्या तिणमें द्रवाद्रिकरी मर्याद
 करी तिण उपरान्त सेजं नहीं सेवाजं नहीं मनसा
 वायसा कायसा द्रवाथकी एहिज द्रवा जेत्रथकी सर्व
 जेतां में कालथकी जेतली काल राख्यो भाव थकी
 राग द्वेष रहित उपयोग सहित गुणथकी संवर निर्जरा
 एहवा म्हारै दशमा व्रतके विषे जे कोई अतिचार
 दोष लागीते आलोउ' ।

नवीं भूमिका वारली वस्तु अणाई होवे १ मुक
 लाई होवे २ शब्दकरी आपो जणायो होय ३ रूप
 देखाई आपो जणायो होय ४ पुद्गल न्हाखी आपो
 जणायो होय तस्स मिच्छामि दुक्कड' ।

॥ इति ॥

इग्यारमूं पोषद व्रत पांचां बोलांकरी ओलखीजै
 द्रवाथकी ।

असाण पाण खादिम स्वादिमनां पच्चखाण
 आहार पाणी मेवादिक पान सुपारीदिक को पच्चखाण
 अवस्मनां पच्चखाण उमकमणी सुवन्ननां पच्चखाण
 मेधुन सेवाका त्याग वोसरायो हुयो रत्न सोना का पच्चखाण
 माला वणग विलेवन नां पच्चखाण
 पुष्पमाला गुलाल रंगादि चंदनादिक नो विलेपनका त्याग

सस्य सुसलादि सावज्ज जोगरा पच्चखाण
 सस्य सुसलादिक सावद्य जोगका पच्चखाण
 इत्यादि पच्चखाण, कने द्ववाराख्या जिणा उपरान्त
 पंच आसव द्वार सेउं नहीं सेवाजं नहीं मनसा
 बायसा कायसा द्रव्यथी एहिज द्रव्य चेच्चथी सर्व
 चेत्तामें कालथकी (दिवस) अही रात्रि प्रमाण भाव
 थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित गुणथकी संबर
 निर्जरा एहवा म्हांरे इग्यारमां व्रतकी विषै जे कोई
 अतिचार दोष लागे होवे ते आलोउं ।

सेज्जा संथारे अपडिलेहाहोय दुपडिलेहा
 सोवाकी जगां विसतरो पडिलेहा नहीं होय आच्छीतरह नहीं
 होय १ अप्रमाज्या होय दुप्रमाज्या होय २
 पडलेहना नहीं प्रमाज्या आच्छीतरह नहीं प्रमाज्या
 करी

उच्चारपासवणरी भूमिका अपडिलेहीहोय दुपडि
 छोटी बड़ी नीतको जमीन नहीं पडिलेही होय अथवा
 लेही होय ३ अप्रमार्जी होय दुप्रमार्जी होय ४
 पोषहमें निन्दा विकथा कषाय प्रमादकरी होय ५
 तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

॥ इति ॥

बारमूं अतिथि संविभाग व्रत पांचां बोलांकरौ
 ओलखीजे द्रव्यथकी ।

समणे निगंधे फासू एसणीज्जेणं असाणं १
 श्रमण निग्रन्थ ने फासुक निर्दोष आहार
 अचित

पाणं २ खादिसं ३ खादिसं ४ वत्थ ५ पडिग्गह ६
 पाणी मेवो लोणं सूपारी आदि वत्थ पात्रो
 कांवलं ७ पाय पुच्छणं ८ पाडियारा ९ पौठ
 कांचलो पग पूंछणो जाचीने पाछा पाट
 भोलावै ते

फलग १० सेज्या ११ संथारो १२ चौषट्ठ १३
 वाजोटादि जमीन जायगां त्रणादिक १ दवाई
 भेषद १४ पडिलाभमाणे विहरामि ॥

चूर्णादि घर्णां मिली प्रतिलाभ तो थको विचलं

इत्यादिक चवदे प्रकारनं दान शुद्ध साधुने देउं
 देवाउं देवतां प्रतिभलो जाणूं मनसा वायसा कायसा
 द्रव्यधकी पहिज कलपतो द्रव्य, जेत्यकी कलपै तकी
 जेत्यमें, कालधकी कलपै जिन कालमें, भावधकी
 राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुण धकी संवर
 निर्जरा, एहवा स्थांरा वारसां व्रत की विषै जे कीर्द्ध
 अतिचार दोष लागो होवै ते आलोउं सृजती वस्तु
 सचित पर मेली होय १ सचित्तधीं ठांकी होय २
 काल अतिक्रम्यो होय ३ आपणी वस्तु पारकी पारकी

वस्तु आपणी कीधी होय ४ भाणैं बैठ साधु साध्वीयां
की भावनां नहीं भावी होय तो मिच्छामि दुक्कडं ।

॥ इति ॥

अथ संलेखणा की पाटी ।

इह लोगा संसह पउगो १ परलोगासंसह
इह लोककी जशकी तथा पर लोकमें सुखकी
द्रव्यादिक की इच्छा

पउगो २ जीविया संसह पउगो ३ मर्णाउ संसह
चांछा जीवत की इच्छा मरण की

पउगो ४ काम भोगा संसह पउगो ५ मासु
इच्छा काम भोगकी इच्छा ए मुजनें

जुहुज्ज मरणान्ते ।

मर्णान्त तक मत होज्यो । ॥ इति ॥

अथ अठारे पाप ।

प्राणातिपात १ मृषावाद २ अदत्तादान ३
मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ८ लोभ ९
राग १० द्वेष ११ कलह १२ अव्याख्यान १३
पैशुन्य १४ पर परिवाद १५ रति अरति १६ माया
मोसा १७ मित्या दर्शन सत्य ॥ इति ॥

तस्स सव्वस देवसी यस्स आचारस्स दुचिन्तियं दुभासियं
ते सर्व दिवसमें अतिचार खोटी चिन्तवनां खोटी भाषा

छोटी चेष्टा कायाकी

आलि यंते पङ्क्तिमामि निंदामि

આલોડ તેદ પડિક્કમેડં

निन्दु

गरिहामि अप्पाणं वासरामि ॥

ग्रहणा करुं पाप कर्मथी आतमां नै वोसराउं

॥ इति ॥

अथ तस्सधम्मस ।

तस्स धम्मस्स कीवली पन्नत्तस्स अब्भुट्ठि एमि

तेह धर्म केवली परूप्यो तेहने विषै उठ्यो छुं

आराहणाए विरज्जमि विराहणाए सव्वेतिविहेणं

आराधन निमित्त निवर्तू छुं बीराधनाथी अतिचार सर्व

त्रिविध करी

पडिक्कंतो, वंदामि जिन चौबीसं ॥

पड़िकमूं छूं वांदूं छूं जिनराज चौबीस ।

॥ इति ॥

अथ मंगलिक ।

चत्तारि मंगलं अरिहन्ता मंगलं सिद्धा मंगलं

ચ્યાર મંગલિક અરિહન્ત મંગલ છે સિદ્ધ મંગલકારિ છે

साङ्ग मङ्गलं केवली पद्मत्तो धम्मो मङ्गलं ॥

साधु मंगल केवली प्ररूप्यो धर्म ते मंगल

घत्तारिलोगुत्तमा अरिहन्ता लोगुत्तमा

ए च्यार लोकमें उत्तम जाणवा अरिहन्त लोकमें उत्तम

सिद्धा लोगुत्तमा साङ्ख्यलोगुत्तमा क्वैवलि

सिद्ध लोकमें उत्तम साधु लोकमें उत्तम केवल

पन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमा चत्तारि सरणं
 प्ररूप्यो धर्म ते लोक में उत्तम च्यार शरणां
 पवज्जामि अरिहन्ता सरणं पवज्जामि सिद्धा
 ग्रहणकरूं अरिहन्तों का शरणां ग्रहण करताहूं सिद्धाका
 सरणं पवज्जामि साधु सरणं पवज्जामि केवल
 शरणा लेता हूं साधुका शरण है केवली
 पन्नत्तो धम्मो सरणं पवज्जामि ।
 प्ररूपित धर्मका शरण ग्रहण करता हूं
 च्यारों सरणा एसगा अवर न सगो कोय जे भव प्राणी
 आदरे अच्छय अमर पद होय ।

॥ इति ॥

अथ देवसी प्रायश्चित ।

देवसी प्रायश्चित्त विसोद्धानार्थं करेमि काउसगं
 दिवसनो प्रायश्चित्त शुद्ध करवाने अर्थ करूं छूं काउस्सग
 ॥ इति प्रतिक्रमणं ॥

अथ पडिक्रमणां करने की विधि ।

प्रथम चौबीस्यो करणो जिणामें

१ इच्छामि पडिक्कमेउ की पाटी । २ तस्सुत्तरीकी
 पाटी । ध्यानमें इच्छामि पडिक्कमेउ की पाटी मनमें
 चितारकर एक नवकार गुणनीं । ३ लोगस्सउज्जोगरे
 की पाटी । ४ नमोत्थुणं की पाटी ।

१ प्रथम आवसग्ग सामायक मे ।

१ आवस्सई इच्छासिणं भंते ।

२ नवकार एक ।

३ करेसि भंते सामाईयं ।

४ इच्छासिठासि काउसग्गं ।

५ तस्सुत्तरी की पाटी ।

ध्यानमे ६६ नन्नाणवे अतिचार ।

आगमे तिविहे पन्नंते की पाटी तिणमे ज्ञानका
चवदे अतिचार ।

दंसण श्रीससत्ते की पाटी तिणमे समकितका ५
अतिचार ।

बारे व्रतांका अतिचार ६० साठ तथा १५ पंदरह
कर्मदान ।

इह लोग संसह पउगोकी पाटी अतिचार ५
संलेखणांका ।

अठारे पाप स्थानक कहणा ।

इच्छामि ठामि आलोउं जो मै देवसी आयाकउ
ए पाटी कहणी ।

एक नवकार कह पारलेणी ।

दूसरा आवस्सग की आज्ञा ।

लोगस्सकी पाटी ।

॥ इति द्विजो आवस्सग समाप्त ॥

तीजा आवस्सगकी आज्ञा ।

देय खसा समणां कहणा ।

॥ तीजो आवस्सग समाप्त ॥

चौथा आवस्सगकी आज्ञा ।

उभायकां ध्यानमे' कच्चा सी प्रगट कहणा ।

८ आठ पाटी बैठा थकां कहणी जिणांकी बिगत ।

१ तस्स सव्वस्सकी पाटी ।

२ एक नवकार ।

३ करेमि भंते सामाईयं की पाटी ।

४ चत्तारि मंगलंकी पाटी ।

५ इच्छामि ठामि पडिक्कमेउ जो मै' देवसी ।

६ इच्छामि पडिक्कमेउ की पाटी ।

७ आगमे' तिबिहे की पाटी ।

८ दंसण श्री समकीत्ते की पाटी ।

ए आठ पाटी कही, बारे ब्रत अतिचार सहित कहणा ।

पांच संलेखणा का अतिचार कहणा ।

अठारे पाप स्यानक कहणा ।

इच्छामि ठामि पडिक्कमेउ जो मैं देवसीकी पाटी
कहणी तस्स धम्मस केवली पन्नतस्सकी पाटी, देय
खमासमणां कहणां ।

पांच पदांकी वंदना कहणी ।

सातलाख पृथ्वीकाय सातलाख अप्पकाय इत्यादि
खमत खामणांकी पाटी ।

॥ चौथो आवस्सग समाप्त ॥

पंचमा आवसग्गकी आज्ञालई कहै ।

१ देवसी प्रायश्चित् विसोधनार्थं करेमिकाउसग्गं ।

२ एक नवकार ।

३ करेमिभंते सामाईयं की पाटी ।

४ इच्छामि ठामि काउसग्गं कौ पाटो ।

५ तस्सुत्तरी की पाटी ।

ध्यानमें लोगस्स कहणांकी परमपराय गीतीसे ।

प्रभाते तथा सांस्क वत्त ४ च्यार लोगस्सको ध्यान ।

पखौने १२ वारि लोगस्स को ध्यान ।

चौमासौ पखौ ने २० बांस लोगस्सको ध्यान समत्स-
रीने ४० चालीस लोगस्सको ध्यान ।

ध्यान पारी लोगस्सकी एक पाटी प्रगट कहणी ।

२ देय खमासमणां कहणा ।

॥ इति पंचमं आवस्सग समाप्त ॥

छद्म आवसगकी आज्ञालेई कहणा तेहनी विगत ।

गये कालनूँ पड़िकमणों बर्तमान कालमे' समता
भागमे' कालका पचखाण यथा शक्ति करणां ।

समाई १ चौबीसत्यो २ बंदना ३ पड़िकमणो ४
काउसग ५ पचखाण ६ यां छज्ज' आवसगां मे'
ज'ची नीची हिणी अधिकी पाटी कही होय तस्स
मिच्छामि दुक्कडं ।

दाय नमोत्थुणं कहणां जिणमे' पहिला मै तो
सिद्धिगई नाम धेयं ठाणं संपताणं नमो जिणाणं ।

दूजा नमोत्थुणं मै सिद्धिगई नाम धेयं ठाणं
संपवेकामी नमो जिणाणं ।



❀ च्यार निक्षेपां री चौपाई ❀

❀ दोहा ❀

अरिहंत सिद्धनें आयरिया, उवज्झाय नें सब साध ।
 यांरा गुण ओलखावणां करे, ते पामें परम समाध ॥ १ ॥
 केई हिंसा धर्मीं जीवड़ा, माने निगुणा देव धर्म ।
 सारे छः काय ना जीवानें, बांधे अशुभ कर्म ॥ २ ॥
 नाम थापना द्रव्य भाव नें, ए माने निक्षेपा च्यार ।
 त्यांरी पिण समझ पड़े नही, त्यारा घटमें घार अंधार
 ॥ ३ ॥ ए च्यार निक्षेपां री नाम ले, भोला नें देवे
 भरमाय । त्यांरी श्रद्धा नो प्रश्न पूछ्यां थका, ते भूठे
 बोले फिर जाय ॥ ४ ॥ ते भूठ बोले छै किण विधे,
 किण विध फिर फिर जाय । हिवे नाम निक्षेपा री
 निर्णय कहूं, ते सुणज्यो चित लाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहली ॥

(धीज करे सीता सती रे लाल । एदेशी)

एह टेढ़ डूम ने थोरी सरगरा रे लाल, भील
 सीणा नें मुसलमान रे, सुगण नर चंडाल धुराधुर सर्व

जात में रे लाल, केई कांरो नाम छै भगवान रे, सु०
 नाम निक्षेपा रो निर्णय करे रे लाल ॥ १ ॥ जे गुण
 बिना नाम माने तेहनेरे लाल, सगला नाम भगवान
 बंदनीक रे सु० तिणने पूछीजे सगलौ न्यातने रे लाल,
 करणी नाम भगवान री ठीक रे, सु० ना० ॥ २ ॥
 पछै गुण बिना नाम भगवानरा रे लाल, जो उन
 बांदि सगला पाय रे, सु० तो उण अद्वा थापौ ते उद्यम
 गई रे लाल, ते पिण गहिला ने खबर न काय रे,
 सु० ना० ॥ ३ ॥ केई जोगी संन्यास्यांरा नाम छै रे
 लाल, सिद्धगिरी ने सिद्धनाथ रे, सु० जे गुण बिना
 नाम माने तिके रे लाल, तिण सिद्ध ने क्यों न बांदि
 जोड़ी हाथ रे, सु० ना० ॥ ४ ॥ केई करिं मिनखां
 रे कारटीया रे लाल, ते पिण बाजे आचारज लोकांरे
 मांहि रे सु० जे गुण बिन नाम माने तिके रे लाल,
 क्यूं न बांदि तिण आचारज रा पाय रे सु० ना० ॥ ५ ॥
 केईक ब्राह्मण लोक में रे लाल, त्यांरी जातां बाजे
 उपाध्याय रे सु० जे गुण बिना नाम माने तिके रे
 लाल, क्यूं न बांदि उपाध्याय रा पाय रे सु० ना० ॥ ६ ॥
 केई साध बाजे भगति ठुंठिया रे लाल, ते निगुणा
 छै रहित समाध रे सु० ते गुण बिना नाम माने तिके
 रे लाल, क्यूं न बांदि एहवा साध रे सु० ना० ॥ ७ ॥

ए नाम निक्षेपा पांचू गुण बिना रे लाल, त्यांरा पूछै
 पूछै ने नाम रे सु० गुण बिना माने नाम तेहने रे
 लाल, वांदि पूजै करणा गुण ग्राम रे सु० ना० ॥ ८ ॥
 ए नाम निक्षेपा पांचू गुण बिना रे लाल, जो उन
 माने तो श्रद्धा मांहि फूट रे सु० भाव भगत कर वांदि
 नहीं रे लाल, तो माननि नाम निक्षेपो गया जठ रे
 सु० ना० ॥ ९ ॥ गुण बिना नाम माने तिके रे लाल,
 तेहने काम पडां दे उधाप रे सु० पग पग झूठ बोलि
 घणो रे लाल, कर रक्षा कुगुरु बिलाप रे सु० ना०
 ॥ १० ॥ यां ने नाम चन्दन रो कछां थकां रे लाल,
 जब तो बोलि छै एम रे सु० कहै नाम छै तो पिण
 गुण नहीं रे लाल, तिणने शीश नमावां क्षेम रे सु०
 ना० ॥ ११ ॥ जे नाम निक्षेप मानता रे लाल,
 ते गुण रो शरणो ले किण न्याय रे सु० यांरी खोटी
 श्रद्धा घटकै घणो रे लाल, जब साच बोल्या आया
 ठाम रे सु० ना० ॥ १२ ॥ ते कहिवा ने ठाम आविया
 रे लाल, मांहि न भीजै मूढ़ रे सु० त्यारे लागा डंक
 कुगुरां तणां रे लाल, ते किण विध छोड़े खुद रे सु०
 ना० ॥ १३ ॥ ए नाम निक्षेपो कर रक्षा रे लाल,
 तिणरी खबर पिण काय रे सु० भरमाया कुगुरां तणां
 रे लाल, ते चोड़े भूला जाये रे सु० ना० ॥ १४ ॥

सैनो रूपो नाम मिनखरो रे लाल, ते पिण कहिवां
 नो छै नाम रे सु० जो काम पड़े गहणां तणो रे
 लाल, ते नावे गहणा रे काम रे सु० ना० ॥ १५ ॥
 किणही मिनख रो नाम हीरो पनो रे लाल, ते नावे
 गहणा रे काम रे सु० जो काम पड़े जड़ाव रो रे
 लाल, ते नावे जड़ाव रे काम रे सु० ना० ॥ १६ ॥
 किण ही मिनख रो माणक मोती नाम छै रे लाल,
 ते पिण कहविवा नो छै नाम रे सु० जो पहरे सिण-
 गार करवा भणी रे लाल, ते नावे पहिरण रे काम
 रे सु० ना० ॥ १७ ॥ केशर कस्तूरी नाम छै मिन-
 खरो रे लाल, ते पिण कहिवा नो नाम रे सु० जो
 काम पड़े विलेपण गंध रो रे लाल, नावे विलेपन
 गंध रे काम रे सु० ना० ॥ १८ ॥ किणही मिन-
 खरो नाम लाडू दियो रे लाल, ते पिण कहिवा नो
 छै नाम रे सु० ते भूख लागे तिण अवसरे रे लाल,
 तो नावे खावा रे काम रे सु० ना० ॥ १९ ॥ किण-
 हीक लकड़ी रो नाम घोड़ी दियो रे लाल, ते पिण
 कहिवा नो छै नाम रे सु० जो काम पड़े चालण
 तणो रे लाल, ते नावे चढ़ण रे काम रे सु० ना०
 ॥ २० ॥ इत्यादिक जीव अजीव रा रे लाल, दीधा
 नाम अनेक रे सु० पिण गरज सरी नहीं नामसूं रे

लाल, ससम्पत्ती आण विवेक रे सु० ना० ॥ २१ ॥ ज्यू
 गुण विना नाम भगवान छै रे लाल, ते पिण कहिवा
 नो छै नाम रे सु० ना० ॥ २२ ॥ नाम भगवान सर्व
 जीव रो रे लाल, दियो अनन्ती वार रे सु० पिण
 गुण विना नाम भगवान सूं रे लाल, न सरी गरज
 लिगार रे सु० ना० ॥ २३ ॥ गुण विना नाम भग-
 वान स्यूं रे लाल, न टलै दुर्गत दोष रे सु० जी
 त्यांने वदिया सदगत होवे रे लाल, तो सगला जीव
 जाता मोक्ष रे सु० ना० ॥ २४ ॥ गुण विना नाम
 मान्यां थकां रे लाल, गरज सरे न लिगार रे सु०
 गरज सरे एक भाव स्यूं रे लाल, जीवो सूत्र संभार
 रे सु० ना० ॥ २५ ॥ गुण विना नाम माने तेहने
 रे लाल, बोल्यो नहौं दीसे बंध रे सु० फिरती भाषा
 बोलि घणो रे लाल, ते होय रज्यो लाह अंध रे सु०
 ना० ॥ २६ ॥ गुण करजे अरिहंत छै रे लाल, गुण
 करने सिद्ध साध रे सु० त्यांरा गुण नें नाम एकहीज
 छै रे लाल, त्यांने बांढ्यां परम समाध रे सु० ना०
 ॥ २७ ॥ किणरी माता रो नाम सरूपा दियो रे
 लाल, तेहज नाम असन्नी रो हुव जाय रे सु० जे
 गुण विना नाम माने तेहने रे लाल, यां दियां ने
 गिण लेणी माय रे सु० ना० ॥ २८ ॥ कै दियां ने

गिण न लेणी असनी रे लाल, उण री श्रद्धा सामो
 जोय रे सु० असनी ने मा जूदी गुणे रे लाल, तिण
 नाम निचेपो दिया खाय रे सु० ना० ॥ २६ ॥ किण
 रे बाप रो नाम धनरूप कै रे लाल, त्यारे मांहो
 मांहि हित मिलाप रे सु० जे गुण बिनां माने नहीं
 रे लाल, सगला कै धनरूपा बाप रे सु० ना० ॥ २७ ॥
 सगला धनरूपा नाम तेहने रे लाल, संकतो लेखवे
 नहीं बाप रे सु० ओ धनरूप स्यूं दुजागी करे रे
 लाल, तिण नाम निचेपो तोहि दिया उथाप रे सु०
 ना० ॥ २८ ॥ बहन बहनोई काका बाबादिके रे
 लाल, यांरा नाम कै नाम अनेक रे सु० त्यांरा नाम
 प्रमाणे नहीं लेखवे रे लाल, तो छोड़ देणी कूड़ी टेक
 रे सु० ना० ॥ २९ ॥ गुण और नाम और कै रे
 लाल, ते कहि बावत लावण काम रे सु० कीई भूली
 मत भूलज्यो रे लाल, सुण सुण एहवा नाम रे सु०
 ना० ॥ ३० ॥ कीईक नाम कहिवां ने दिया रे लाल,
 कीईक गुण निपन्न कै नाम रे सु० ते कहिवा ना
 नाम कहवा भणी रे लाल, गुण निपन आवे काम रे
 सु० ना० ॥ ३१ ॥ इस कहिने कितरो कहूं रे लाल, नाम
 निचेपा रो बिस्तार रे सु० जो गुण बिना नाम बांटे नहीं
 रे लाल, तिण सफल कियो अवतार रे सु० ना० ॥ ३२ ॥

॥ दोहा ॥

गुण विना नाम दियो लोकीक में, ने प्रत्यक्ष लीजो देख ।
घोड़ासो परगट करूँ, ते सुणने मत करज्यो द्वेष ॥

॥ ढाल दूजी ॥

(चौपई नी देशी)

नाम दियो छै राधाकिशन । सेवतो जावे सातों
विसन ॥ १ ॥ नाम दियो छै गोविंदराय । फिरै
चगावै पराई गाय ॥ बाई रो नाम दियो छै लाछ ।
पिण मांगी न मिले कुलड़ी छाछ ॥ २ ॥ सासू कहै
म्हारी कपूर दे बह्न । सांभल नाम बालावे सह्न ॥ नाम
नाम दियो कस्तूरी जास । मांहे नहीं होंग री वास
॥ ३ ॥ टेंट घणी न बांकी निहाले । दुर्भिक्ष पड़ियो
देश दुकालें ॥ नाम दियो छे जगत पाल । पिण
सधलां पहली बेच्या वाल ॥ ४ ॥ किणहीक नाम
सेना दियो । साथ विना एकलो चालियो ॥ घणी
दरिद्र बहैल लार । नाउ ने कदे उठे न धार ॥ ५ ॥
बाई रो नाम दियो कुशाल । पिण मिटियो नहीं
मोग रो साल ॥ कुढ़ कुढ़ नें दिन पूरा करे । कूवे
बावड़ी पड़ी मरे ॥ ६ ॥ नाम दियो छे धर्मशाह ।
परभव नी नहीं परवाह ॥ कूड़ कपट लंपट चित

धरे । इसी धर्मे नरकां पड़े ॥ ७ ॥ लोक कहै आ
लक्ष्मी बाय । ऊगा सूरज छाया ने जाय ॥ किणहिक
नाम सरूपा दियो । एक काली नें कुजस लियो ॥ ८ ॥
सुन्दर नाम दियो कै अनूप । खाटी बोले बली कुरूप ॥
कुत्ता चाटे कै हांडिया । सीडे करने घर भंडिया ॥ ९ ॥
ज्युं नाम दियो अरिहंत भगवान । पिण मांहे न दोसे
अकल गिनान ॥ तरण तारण रौ समझ न काय ।
तिण नें सूरख बांदि जाय ॥ १० ॥ इण अनुसारै
दोधा नाम अनेक । त्यां सूं गरज सरै नहीं एक ॥ ते
सुणने समझे चतुर सुजाण । पिण सूरख न माने मांडे
ताणा ताण ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

नाम निक्षेपो ओलखावियो, हिवै थापना अधिकार ।
गुण बिन देखी थापना, भूला भरम संसार ॥ १ ॥
बांदि पूजे तीर्थकर नौ थापना, त्यांरे आकारे पत्यर
को राय । सीना पीतल धात अनेक सूं, त्यांरे आकारे
बिम्ब भराय ॥ २ ॥ बले कपड़ादिक कागद ऊपरै,
भगवंत रौ मांडे आकार । तिण ने शीश नमाय
बन्दना करे, जाणे हुवै लाभ अपार ॥ ३ ॥ कहै
जिन प्रतिमा जिन सारखी, फेर न जाणो कोय ।
दोयां ने बांद्यां थकां, लाभ सरीखा होय ॥ ४ ॥ कहै

गुण लारे पूजा कही, तोहि निगुण पूजंता जाय । ते
 चाड़े भूला मानवी, तेहनें किम आणीजे वाय ॥ ५ ॥
 कदे तो कहे गुण भणी, कदे कहे बांदा आकार ।
 त्यांरी श्रद्धा मांहे फूट फजीत्यां घणी, ते कहितां न
 आवे पार ॥ ६ ॥ अ गुण विन आकार न बांदतां
 त्यांने प्रश्न पूछे जाय । तो फिर जावे भूठ बेले घणी,
 ते सुगज्यो चितलाय ॥ ७ ॥

॥ ढाल तीजी ॥

(जिया अणकंपा आज्ञा मांहीए । एदेशी).

चक्रवर्त्त बलदेव वासुदेवा, ते तो तीन खंड कः
 खंड रा सिरदार । इत्यादिक मनुष्य ने सर्व जुगलिया,
 ते सगलाई छै भगवंत आकार ॥ थापनो निचेपा रो
 निरणो कीजा ॥ १ ॥ भवनपति ने व्यंतर देवा ज्यो-
 तिषी देव ने विमाणिक वखाणो । ए पिण छै भगवंत
 रे आकारे, समचोरस छै सगलां रो संठाणो ॥ था०
 ॥ २ ॥ जे गुण विना आकार भगवान रा बांदे त्यांरे
 लेख बांदणा कुण कुण आकार । समचोरस संठाण
 रा देवां ने सिनख हर्ष धरे बांदणा वारम्बार ॥ था०
 ॥ ३ ॥ जो हर्ष धरे व्यांने बांदे नहीं, तो उगरी
 श्रद्धा उगरे लेखे खोटी । आप घापी छै ते आप उयापे,

आपण रे अंधारे भोलप मोटी ॥ था० ॥ ४ ॥ पत्थर
 धात चित्रामादिक ना करे करवा दे भगवान ।
 आकार तो लाट गोबर धूर कीयलादिक ना, आकार
 करे बन्दना बारम्बार ॥ था० ॥ ५ ॥ जो गोबरादिक आकार
 ने बांदे, तो आपरी श्रद्धा रो आप अजाण । पत्थर धात
 चित्रादिक ना आकार देखी मूढ भ्रम भूलाण ॥ था०
 ॥ ६ ॥ कीर्द थापना सचित ने अचित द्रव्य नें, भगवंत
 रे आकार बणावे चिरो । तिण आगे आप पांचूं अंग
 नमे नै, नमोत्पुणो कहै मूढ होय होय नेडो ॥ था०
 ॥ ७ ॥ तिण री सेवा पूजा करे भाव भगत स्युं, एहज
 मांहरी आवागमन निवारे । ते तो एकेन्द्री जीव
 अज्ञानी, ते तरे नही ते किण विध तारे ॥ था० ॥ ८ ॥
 आचारज उवज्झाय साधु गुणवंता, त्यांरे आकारे दोसै
 ठूठिया भेषधार । जे गुण बिन आकार ने बांदे तो,
 क्यूं न बांदे यांगी देख आकार ॥ था० ॥ ९ ॥ जे जे
 आकार मिनख तणा कै, तेहिज आकार साधारो
 जाणो । जे गुण बिना आकार नें बांदे तो, सर्व जीवा
 रे क्यों न बांदै आयाणो ॥ था० ॥ १० ॥ तोऊ सर्व
 मिनखां ने नहीं बांदे तो, तिण थापना आकार दियो
 उठाय । ए अकल बिह्वणा श्रद्धा परूपै, ते पग पग भूठ
 बोले फिर जाय ॥ था० ॥ ११ ॥ जे आकार बांदण

रो कहै कीर्त उण नें तब तो सूधा बेलि भाखसूं एमो ।
 कहै आकार कै तो पिण गुण नहीं मांहि, तिखजे शीश
 नसावां कियो ॥ धा० ॥ १२ ॥ जे थापना आकार
 माने निक्कीवल, ते गुणरा शरणो ले छै किण न्यायो ।
 थारा खोटो श्रद्धा अटक्या जाव नावै, जब साच बेलो
 जब आया छ ठायो ॥ धा० ॥ १३ ॥ ते कहिवा ने
 ठाय आया जाणा, पिण मनमें न भीजे अज्ञानी लूढ़ ।
 त्यारे कुगुरु तणा डंक करड़ा लाग्या, ते पिण किण
 विध छेडे खोटो रूढ़ ॥ धा० ॥ १४ ॥ ए थापना थापना
 कर रक्षा लूरख, पिण स्थापना री समझ न कायो ।
 कुगुरां रा भरमाया लूरख, चोड़े मारग भूला जायो ॥
 धा० ॥ १५ ॥ जो ऊ हाथी सकलियां भांत कपड़ो
 बेचे जब, ज्यांरा फाड़ौ फाड़ करं दिय टुकड़ा । जे
 गुण विन आकार वांदि तिण लिखे, तो हाथी सकलियां
 मारण रा टुका ॥ धा० ॥ १६ ॥ कहै हाथी सकलियां
 भांत कपड़ो फाड़्या स्युं हाथी सकलियां मारणो न
 लागी करमो । तो भगवंत रे आकारे प्रतिमा वांद्यां,
 तिण में निश्चय स जाणो धरमो ॥ धा० ॥ १७ ॥ किण
 रा सगा मनेही व्याही नातीला, तिणरे रेतरा लाडु
 वणाय ने सेले । ते भगवंत रे आकार प्रतिमा पूजे ।
 ते रेतरालाडु पाछा काय ने ठेले ॥ धा० ॥ १८ ॥ कहै

रेतरा लाडु में सवाद नहीं कै तो प्रतिमा में गुण
 मूल म जाणो । गुण बिन वस्तु ते काम न आवे,
 समझो रे थे मूढ़ अयाणो ॥ था० ॥ १६ ॥ पत्थर
 कोरनें प्रतिमा बनावे, तिण प्रतिमा ने भगवंत ज्युं
 सेवे । तिण ने तिणही पत्थर रा रुपया देवे तोऊं
 चाखा रुपया में क्यूं नहीं लेवे ॥ था० ॥ २० ॥ घृत
 तैलादि करी सोदो देइ नें, पथर रा रुपया ले पलै
 नहीं बांधे । ते भाठा तणा भगवत बनाया, तोऊं
 भगवंत किण लेखे बांदि ॥ था० ॥ २१ ॥ भाठा रा
 रुपया लेई सोदो देवे तो, बीं में पड़ जावे जाबकतो
 टोटी । भाठा रा प्रभु बांदि तिण रो मत, खोटी रे
 निषेवल खाटी ॥ था० ॥ २२ ॥ रूपा तणा रुपिया रे
 ठिकाणें, पत्थर रा रुपया कदे न हाले । तो तरण
 तारण भगवंतरी ठोर, भाठा रा भगवंत किण बिध
 चाले ॥ था० ॥ २३ ॥ भाठा रा रुपया ले घाले खजाना,
 त्यारे काम पड़े जब घणो सिद्धावे । ज्युं भाठारा भग-
 वंत थापना बांदि, तो परभव सांहे घणो पिसतावे ॥
 था० ॥ २४ ॥ परख बिना खाय रुपया में खोटी, ते
 तो रूपा तणो भील रे प्रतापो । ए भगवंत में खोटा
 खाधा किण लेखे, आ तो प्रतिमा दीसे पत्थर रो
 आपो ॥ था० ॥ २५ ॥ धीरेक कागद ऊपर कटक

अल'कै, सांहि भल घाड़िया असवार वणावै । त्यारे
 सुरमणा रो आस न दीसै, वैरो दुश्सन हटावन अरथ
 न आवै ॥ था० ॥ २६ ॥ ज्युं चौबीस आदि दे अनेक
 तीर्थकर जिणा रो यथातथा आकार वणावै । त्यां मे
 ज्ञानादिक गुण आसन न दीसै, ए तारण तरण नें
 काम न आवै ॥ था० ॥ २७ ॥ जोऊ राखे भरोसा
 कागद रा कटकरो, तो झुज्जत जाय रहे नही आवो ।
 ज्युं प्रतिमां ने वांदि तिण रे भरोसै, ते चह्ल'गतमें होसी
 घणा खराबो ॥ था० ॥ २८ ॥ पोलरे दोऊ' कवलें हाथी
 वणाया, ते चढ़वारे काम कदे नहीं आया । ज्युं
 प्रतिमा वणाय देवल सांय बेसारी, आ पिण जाणजो
 थायी साया ॥ था० ॥ २९ ॥ उण री स्त्री सुवां जो
 फेर परणीजे तो उण पिण थड़ा गया छै भूलो । गुण
 विन आकार वांदि तिण लेखे, स्त्री आकार कर लेणी
 ठूलो ॥ था० ॥ ३० ॥ भरतार सुवां स्त्री रोवे तो, वो
 पिण थड़ा गई छै भूलो । गुण विन आकार वांदि तिण
 लेखे, भरतार रे आकारि कर लेणी ठूलो ॥ था० ॥ ३१ ॥
 स्त्री री गरज ठूलो नहीं सारै भरतार री गरज सारे
 नहीं ठूलो । दूण दृष्टान्ते आकार वांदि, त्यांरो पिण
 जाणजो ओहीज सूलो ॥ था० ॥ ३२ ॥ वालपणमे रमें
 डावड़ा डावड़ी, विकल पणे ठूलो न ठूलो । ज्युं भग-

वंत री प्रतिमा करी नें बाँदे, तिण पिण भूला रे नि
 केवल भूला ॥ था० ॥ ३३ ॥ पापड़ रा लोया नें गधेड़ा
 रा लौंडा, यां दोयां रो दीसै कै एक विचार । ज्यूं
 प्रतिमा कै भगवंत आकारे, ओ गुण बिन अर्थ न
 आवे लिगार ॥ था० ॥ ३४ ॥ गध लिंडारा पापड़ न
 थाय, कीरा खादां पिण बिगड़े कै मुंठो । ज्यूं प्रतिमा
 ने बांदां धर्म किहांथी, छोड़ो रे छोड़ो खोटौ रुठो ॥
 था० ॥ ३५ ॥ इण लोक मांही आंधा लोक घणा कै, जेह
 रीतसु बाकैरी मोह अंध गाय, तिणरो बाकरो हुंता
 ते चल गयो चेतन, तिणरो खाल चाढ़े प्रवास
 बजाय ॥ था० ॥ ३६ ॥ बाकैरी खाल देखी ते गाय
 भूली, आ प्रतिमा देख भूला किण लेख । आ प्रतिमा
 नहीं भगवंत री काया, ते तो मोह अंध गाय मूं भूला
 विशेख ॥ था० ॥ ३७ ॥ अरिहंत भगवंत सुकते गया
 जब, त्यांरो शरीर आकार लारे रही काय । ते तो
 गुण जड़ बिना अचेतन पुद्गल, कीर्त्त तेहने बांदां
 धर्म नहीं होय ॥ था० ॥ ३८ ॥ त्यांरो शरीर असल
 आकार शरीर पड़िया ते, तिण ने ही बांदां बंधे
 निश्चय कर्मो । तो आकार और बणाय बांधे, त्यां
 बांधां ने होसी किण बिध धर्मो ॥ था० ॥ ३९ ॥ गुण
 बिन आकार बांदण वालो बोली, आकार बांदां कहै

लाभ अनन्त । तिणम्युं भगवंत री प्रतिमा करे बांदे,
 तिण प्रतिमा ने लेखवे भगवन्त ॥ था० ॥ ४० ॥ प्रणाम
 चले ज्युं स्त्री दीठां, विषय न दीठा रहे शुद्ध प्रणाम ।
 ज्युं प्रतिमा दीठां भगवन्त याद आवे, एहवा कुहेत
 लगावे ताम ॥ था० ॥ ४१ ॥ उण रे मा वहन स्त्री
 हुवै एक आकारे, कदे एक दीठां याद आवती नांहीं,
 पिण एक तीनां ज्युं काम न आई, याद आवे पिण
 गरज सरै नहों कांडे ॥ था० ॥ ४२ ॥ कदे प्रतिमा
 दीठां भगवन्त याद आवे, कदे भगवंत दीठां प्रतिमा
 याद आवे । पिण धर्म तो भगवन्त गुण बांद्या, प्रतिमा
 गुण बांद्या कर्म बंध जावे ॥ था० ॥ ४३ ॥ मा वहन
 आकार स्त्री तिण स्युं, घरवासी करतां शंकासन आणे,
 ज्युं गुण विन आकार बांदी तिणनें, स्त्री ने मा वहन
 ज्युं कीं न जाणे ॥ था० ॥ ४४ ॥ माय वहन स्त्री तिणने
 दीठां हरखैरे विषै रे कास । ज्युं प्रतिमा दीठां मन
 धरे तो, छकाय सारणरा किया परिणाम ॥ था० ॥ ४५ ॥
 मा वहन आकारे स्त्री हुवै तो मा वहन री गरज
 निश्चय नहों सारे, ज्युं भगवन्त रे आकारे प्रतिमा
 कीधी, ते आपिण जाणो कदे नहीं तारे ॥ था० ॥ ४६ ॥
 भगवन्त रे आकार प्रतिमा बांदे, त्यारे आकारे वले
 अनेक विलापो । उणरा वाप रे आकारे मिनख वणा

है, त्यां सगला ने लेखवणा बापो ॥ था० ॥ ४७ ॥ तो
 सगला ने बाप लेखवतो लाजे, ओ मत उणारे लेखे
 कूड़ी । जे गुण बिन आकार बांदे अज्ञानी, ते कर
 रंझा मूरख फेन फितूरो ॥ था० ॥ ४८ ॥ उणारे मा रे
 उणियारे बींदणी हुंती, तिण धन खरच नें परण
 ल्यायो । जे गुण बिना आकार बांदे, तिण लेखे यां
 दोनां ने लेखणी मायो ॥ था० ॥ ४९ ॥ कै दोन्यां ने
 लेखवलै स्त्री, आपणी श्रद्धावाला रो देखो ले न्यायो ।
 बले माय ने उणहारे अनेक लुगायां, ते सगली नें
 लेखवणी मायो ॥ था० ॥ ५० ॥ बले बहनोई काका
 बाबादिका रों, आकार कै नाम अनेक, थारो आकार
 प्रमाणे नहीं लेखवे तो, छोड़ देनी कूड़ी जावक ठेक ॥
 था० ॥ ५१ ॥ छोई बाई कै हिंसाधर्मी अनारज, तिण
 पुत्र जायो ते भरतार ने आकारो । आकार बांदे तिण
 बाई रे लेखे, यां दयां ने लेखव लेणो भरतारो ॥
 था० ॥ ५२ ॥ कै दयां ने बेटा लेखव लेणा, तो
 उणरी श्रद्धा में वा प्रणवीण पूरी । भरतार बेटा जुदे
 गिणे तो, उण री श्रद्धा रे लेखे पड़सी कूड़ी ॥ था०
 ॥ ५३ ॥ इत्यादिक जीव अजीव रा घणा है, कीधा
 अकीधा अनेक आकार, पिण गरज सरे नहीं आकार
 बांदां, थे समझो रे समझो आण बिचार ॥ था० ॥ ५४ ॥

गुण विना थापना भगवान री है, ते देखीने जाण
 लेणो आकार । पिण धर्म नहीं तिणमें शीश नमायां,
 तरण तारण मत जाणो लिगार ॥ था० ॥ ५५ ॥ भगवंत
 री आकार सर्व जीव हुवो है, अनन्त अनन्ती वार ।
 पिण गुण विना नाम भगवान रा स्यूं, किणरो ही न
 हुवो दीसे उधार ॥ था० ॥ ५६ ॥ गुण विन आकार
 भगवान रा सूं, निश्चय नहीं टले आतम दोष । जो
 आकार बांढ्यां सदगत होय, तो सकला जीव जाय
 विराजता मोक्ष ॥ था० ॥ ५७ ॥ गुण विन आकार
 भगवंत रा सूं, निश्चय गरज सरै नहीं कायो । गरज
 सरै नहीं भगवंत ने बांढे, सांसी हुवै तो सूत्र में
 जोयो ॥ था० ॥ ५८ ॥ गुण विन आकार मानें तिणनें,
 वाली में मूल न दीसै बंध । फिरती भाषा बोले
 अज्ञानी, ते रह्या होय मतवाला ज्यूं अंध ॥ था०
 ॥ ५९ ॥ गुण करनें अरिहंत भगवंत है, गुण करनें है
 ऋषिप्रवर साधो । त्यांरा आकार सूं गुण न्यारा नहीं
 है, त्यांने बांढ्यां सूं पामे परम समाधो ॥ था० ॥ ६० ॥
 जे गुण विन आकार थाप राखै ते, कहवता जावण
 आवे कामो । भ्रम भुलाया आकार देखनें, वलि सुण
 मुण ने आकार री नामो ॥ था० ॥ ६१ ॥ कीडक आकार
 कहिवारा है, गुण निपन आवे बांढण रे कामो । ते

कैहवा आकार कहिवारा कै, गुण निपन चारित परि-
णामो ॥ था० ॥ ६२ ॥ इम कहिनें कहिनें कितरोक
कहिये, इण थापना निक्षेपा रो अधिकार । गुण बिन
थापना बांदे नाहीं, त्यां निश्चय सफल कियो अवतार ॥
था० ॥ ६३ ॥

॥ दोहा ॥

ए थापना निक्षेपो कह्यो, हिवै द्रव्यनी करज्यो
पिछाण । कीर्त द्रव्य निक्षेपो सांभली, भूल्या लोक
अजाण ॥ १ ॥ ते गुण बिन बांदे द्रव्य नें, कूड़ा कुहेतु
लगाय । अतीत अनागत कालनी, माने गुण पर्याय
॥ २ ॥ कहि साध हुआ श्री ऋषभ ना त्यां कियो
चोबिसथो ले नाम । चोबीस तीर्थंकर हुआ नहीं,
त्याने बांदे कियो गुण ग्राम ॥ ३ ॥ इम कहि कचि नें
भोला लोक नें करे निगुण बांदण रो थाप । ऊंधी श्रद्धा
प्रह्व नें बाहला बांधि पाप ॥ ४ ॥ त्यां स्यू काम पड़े
चरचा तणो, ते झूठ बोल फिर जाय । त्यांरी श्रद्धा ने
झूठ प्रकट करूं, ते सुणज्यो चितलाय ॥ ५ ॥

✽ ठाल चौथी ✽

(आउखो टूट्यां नें सांधा की नहीं रे । एदेशी)
तीर्थंकर होसी आगमिया काल में रे, त्यांनें बांदे

नं करे अज्ञानी पाप रे । तेहनें नमोत्पुणं सें घालियो
 रे, त्यां कौधी निगुण बांदणा री थाप रे ॥ द्रव्य निक्षेपा
 रो निरणो सुणो रे ॥ १ ॥ नमोत्पुणं बोवित्पु किया
 थकां रे, कहे गुण रो मत जाणो काम रे । उणारी श्रद्धा
 लेखे कुण कुण बांदणा रे, ते सुणजो राखे चित
 एका ठाम रे ॥ द्र० ॥ २ ॥ एक झूला में सँ जीव
 निकली रे, अनन्ता तीर्थ'कर आगे पाय रे । जे द्रव्य
 तीर्थ'कर बांदे गुण विना रे, तो झूला ने क्यों न बांदे
 जाय रे ॥ द्र० ॥ ३ ॥ पृथ्वि आदि देई छः काय
 में रे, जे द्रव्य तीर्थ'कर अनन्ता पिछाण रे । जे द्रव्य
 तीर्थ'कर बांदे गुण विना रे, तो क्यूँ नहीं बांदे याने
 जाय रे ॥ द्र० ॥ ४ ॥ अनन्ता जीव द्रव्य छः काय
 में रे, सिद्ध होसी ज्ञानादिक पाय ऋद्ध रे, जे द्रव्य
 तीर्थ'कर बांदे गुण विना रे, तो क्यूँ न बांदे द्रव्य
 सिद्ध रे ॥ द्र० ॥ ५ ॥ अनन्ता द्रव्य साधु छः काय
 में रे, भावे होसी चारित्र आराध रे, जे द्रव्य तीर्थ'कर
 बांदे गुण विना रे, तो वे क्यों न बांदे द्रव्य साधरे ॥
 द्र० ॥ ६ ॥ ए द्रव्य तीर्थ'कर सिद्ध साधु कछा रे,
 तहि जन बांदे त्यांरा पाय रे, इण लेखे इण री श्रद्धा
 खोटी परी रे, पिण आंधां ने समझ पड़े नहीं काय रे ॥
 द्र० ॥ ७ ॥ भरत चक्री रो हुवा डीकरो रे, ते

महावीर स्वामी री जीव मरीच रे, ते घर छोड़ी ने
 हुवा चिदंडियो रे, तिण री करणी सावज न श्रद्धा
 नीच रे ॥ द्र० ॥ ८ ॥ जे द्रव्ये तीर्थंकर हुंतो तिण
 दिने रे, श्री ऋषभ जिनेश्वर दियो बताय रे । श्री
 ऋषभ जिनेश्वर साधु ने साधवी रे, क्यूं न बांदा
 त्यां पाय रे ॥ द्र० ॥ ९ ॥ चौबीसथो करतां बांदि
 तेहने रे, तिण स्युं तो भेलो करणो आहार रे । श्री
 ऋषभ जिनेश्वर सरीखो लेखवी रे, श्री करता बन्दना
 ने नमस्कार रे ॥ द्र० ॥ १० ॥ श्री ऋषभ जिनेश्वर
 रा साधु ने साधवी रे, त्यां नहीं बांद्यो न गिणो
 मरीच रे । जे कोई द्रव्य तीर्थंकर बांदसी रे, तिण
 री पिण सावज करणी नीच रे ॥ द्र० ॥ ११ ॥
 भरतजी बांदा कहि मरीच ने रे, ते पिण नहीं छै
 सूत्र मांछि रे । भोला में बिगोय पाड़ा भरम में रे,
 त्यां निगुण ने बांदि हरकत थाय रे ॥ द्र० ॥ १२ ॥
 द्रव्य तीर्थंकर होता किशनजी रे, श्री नेम जिनेश्वर
 दिया बताय रे, पिण नेम जिनेश्वर रा साधु न
 साधवी रे, कृष्ण रा क्यों नहीं बांदां पाय रे ॥ द्र०
 ॥ १३ ॥ त्यां उलटो कृष्ण ने पगे लगावियो रे, पिण
 गुण बिन द्रव्य न बांद्यो क्हाय रे, तो चौबीसथो
 करतां तिण ने किम बांदसी रे, तुमे हिये विमासी

बुध सूं जोय रे ॥ द्र० ॥ १४ ॥ बले द्रव्य तीर्थंकर
 होती देवकी रे, रोहिणी ने बलभद्र बखाण रे । पिण
 नंस जिनेश्वर रा साध साधवियां रे, नहीं बांढा ते
 गुण विना द्रव्य पिछाण रे ॥ द्र० ॥ १५ ॥ यां तीनां
 ने उल्टा पगे लगाविया रे, पिण गुण विन द्रव्य न
 बांढो कौय रे । चौबीसथो करतां निगुणा किम
 बांढसी रे, तुमे हिरदे विमासी बुध सूं जोय रे द्र०
 ॥ १६ ॥ बले द्रव्य तीर्थंकर श्रेणिक राय थारे, श्री
 वीर जिनेश्वर दियो बताय रे । पिण वीर जिनेश्वर
 रा साधु ने साधवियां रे, श्रेणिक रा क्यूं नहीं
 बांढा पाय रे ॥ द्र० ॥ १७ ॥ तिशां उल्टो श्रेणिक
 ने पगां लगावियो रे, पिण गुण विन द्रव्य ने बांढो
 कौय रे । चौबीसथो करतां निगुण किम बांढसी रे,
 हिरदे विमासी बुध सूं जोय रे ॥ द्र० ॥ १८ ॥ मोटी
 सतियां श्री रानी कृष्ण नी रे, त्यांने तीर्थंकर बांढण
 रो घणो उलास रे । तो द्रव्य तीर्थंकर बांढे गुण
 विना रे, तो कृष्ण स्यूं नहीं करती घर वास रे ॥
 द्र० ॥ १९ ॥ बले मोटी सतियां श्रेणिक री राणियां
 रे, त्यांने तीर्थंकर बांढण रो घणो उलास रे । जे
 द्रव्य तीर्थंकर बांढे गुण विना रे, ते श्रेणिक सूं नहीं
 करती घर वास रे ॥ द्र० ॥ २० ॥ त्यां भरतार

जाणी नें कीधी बिटंमणा रे, त्यां सूं पिण सीव्या काम
 न भोग रे तो चोवीसत्थो करता तिण ने किम बांदसी
 रे, आ गुरां री श्रद्धा जाणो अजोग रे ॥ द्र० ॥ २१ ॥
 कृष्णजी ने श्रेणिक री राणियां रे, समदृष्टि नें चतुर
 मुजाण रे । त्यां तो सामायक पोसा में बंदना करी
 रे, ते भाव तीर्थंकर देव जाण रे ॥ द्र० ॥ २२ ॥
 जे द्रव्य तीर्थंकर बांदे गुण बिना रे, त्यांने गुण बिना
 बांदणा द्रव्ये साध रे । जोऊ कहि द्रवा साधु ने
 बांदणा रे, उण ने उण री श्रद्धा री न पडी लाध रे ॥
 द्र० ॥ २३ ॥ कीर्द्ध आगमिया कालि शुद्ध साधु हुसी
 रे, कीर्द्ध भागल हुसी चारित्र विराध रे । ते द्रव्ये
 छे गुण बिण ठाली ठीकरा रे, त्यां सगलां ने कहौजे
 द्रव्ये साध रे ॥ द्र० ॥ २४ ॥ जो द्रव्ये साधु ने बांदे
 गुण बिना रे, तो यां सगलां ने बंदणा करणी ताम
 रे । उणारी श्रद्धा रे लेखे गुण कुण बांदणा रे, हिवै
 द्रवा साधु रा कहूं छूं नाम रे ॥ द्र० ॥ २५ ॥ तो
 गोसाला कुपाल ने बांदणो रे, ते पिण आगमिया कालि
 साधु थाय रे । जे द्रव्ये साधु ने बांदे गुण बिना रे,
 तो गोसाला ने क्यूं न बांदे ताय रे ॥ द्र० ॥ २६ ॥
 बले इग्यारा श्रेणिक रा डीकरा रे, क्षीणक कालि-
 दिक कुमार रे । जे द्रवा साधु ने बांदे गुण बिना रे,

तो यांने पिण वांदणा वारम्बार रे ॥ द्र० ॥ २७ ॥
जमाली ने कंडरीकादिक जे हुआ रे, ते विगद्या कै
संजम समकित खोय रे । जे द्रवे साधु ने बांदे गुण
विना रे, ता यांने पिण वांदणा नीचा होय रे ॥ द्र०
॥ २८ ॥ इत्यादिक भागल होया कुसीयालीया रे त्यांरो
द्रव्ये निक्षेपो न गया ताम रे । जे द्रव्ये साधु ने
बांदे गुण विना रे, तो यांने पिण बांदे ले ले नाम
रे ॥ द्र० ॥ २९ ॥ जो उन बांदे या भाव सूं रे, तो
उन रो मत उन थाप उथाप रे । जो द्रवा साधु ने
बांदे गुण विना रे, त्यांरे कै पोते बाहला पाप रे ॥
द्र० ॥ ३० ॥ उण स्त्री परणी सूं घर वासी कियो रे,
ते तो माता होती पाछला भव मांय रे । जो माने
केवल गुण विन द्रवा ने रे, तो स्त्रीने लेखवणी माय
रे ॥ द्र० ॥ ३१ ॥ उण जन्म देई ने मा सोटा कियो
रे, ते तो स्त्री होती पाछला मभार रे । जे माने
निकेल गुण विन द्रवा ने रे, उण लेखे माता ने गिण
लेणी नार रे ॥ द्र० ॥ ३२ ॥ के साता ने लेखव लेणी
नी रे, के स्त्री ने लेखवणी माय रे, जे माने निके-
वल द्रवा ने रे, उण री श्रद्धा रो ओहीज उंधी न्याय
रे ॥ द्र० ॥ ३३ ॥ उण रे जीव हुआ ने स्त्री रे, ते
मगला ही जीव हुआ मा बहिन रे । जे माने निके-

बल गुण बिन द्रव्य ने रे, तिण रा किण बिध चालसी
 कूड़ा फेन रे ॥ द्र० ॥ ३४ ॥ बले बेटो उण रे घर
 जाय जनमीयो रे तिण रो पाकल भव नो बेटो हंतो
 बाप रे । जे माने निकैवल गुण बिन द्रव्य नें रे, तो
 बेटा ने लेखवणो बाप रे ॥ द्र० ॥ ३५ ॥ दूण रो बाप
 पाकल भव बेटो हंतो रे, तिण रो ही जे बेटो हुवो
 आप रे । जे माने निकैवल गुण बिना द्रव्य नें रे, ते
 बाप ने बेटो गिण लेणो ताय रे ॥ द्र० ॥ ३६ ॥ थोड़ी
 मेणादिक सर्व जीवनी रे, त्यांगो बेटो हंतो पाकल
 भव आप रे । जे माने निकैवल गुण बिन द्रव्य नें रे,
 तो दूण लेखे सगलाई दूण रा बाप रे ॥ द्र० ॥ ३७ ॥
 जो उ सगला ने बाप न लेखवे रे, तो उण रो श्रद्धा दूण
 लेखे कूड़ रे । जे माने निकैवल गुण बिन द्रव्य ने रे,
 त्यांगो चिहुं गत में होसी घणो फितूर रे ॥ द्र० ॥ ३८ ॥
 बले काका बाबादिक सगपण तेहने रे, सगलाई हुआ
 अनन्ती बार रे । जे मानें निकैवल गुण बिन द्रव्य नें
 रे, ते किण बिध करसी बिचार रे ॥ द्र० ॥ ३९ ॥
 अरिहंत सिद्ध साधु दूण जीवरे रे, जे हुवा न्यातीला
 बार अनन्त रे । जे माने निकैवल गुण बिन द्रव्य नें
 रे, त्यांगे लेखे तो सगला एक भांत रे ॥ द्र० ॥ ४० ॥
 औ कुण कुण मारै नें कुण कुण पूजसी रे, तिण रो कै

दिन कहतां आवै याग रे । ते डूबा अज्ञानी निगुणा
 बांदने रे, त्यांरो भव भव में हीसो घणो अभाग रे ।
 द्र० ॥ ४१ ॥ ए द्रवा निचेपो बांदे गुण विना रे, ते
 पिण काम पड्यां देवे उधाप रे । ते पग पग भूठ बोले
 अति घणो रे, ते कर रच्या लूढ़ कूड़ विलाप रे ॥ द्र०
 ॥ ४२ ॥ यांने गुण विन द्रवा बांदण रो कह्यो रे, जब
 तोऊ विसूधा बोले एम रे । कहै द्रवा छै तो गुण
 नहों पिण सांहि रे, तिण नें शीश नमावां घेस रे ॥
 द्र० ॥ ४३ ॥ जी द्रवा निक्कीवल माने रे, गुण रो शरणो
 ले किण न्याय रे । आ खोटी श्रद्धा थारी अटकै घणी
 रे । जत्र सांच बोली ने आयो ठाय रे ॥ द्र० ॥ ४४ ॥
 ते कहिवा ना ठाय आया अज्ञानी रे, पिण मन में
 न भोजें लूरख लूढ़ रे । त्यांरे डंक लाग्या कुगुरां
 तणां करडा रे, किण विध ते छोडे करडी रुढ़ रे ।
 ॥ द्र० ॥ ४५ ॥ जो द्रव्य निचेपो मुख स्यू कर रच्या
 रे, तिण रो पिण समझ पड़े नहीं काय रे । ते
 भरमाया लाग्य छै कुगुरु तणां रे, ते प्रत्यक्ष चोड़ै
 भूला जाय रे ॥ द्र० ॥ ४६ ॥ फेई द्रव्ये तीर्धहर
 अनादि काल ना रे, त्यांरो पिण गरज सरी नहीं
 काय रे । तो वंदणा करसो तिण ने किम तारसो रे,
 विवेक आगो समझो द्रव्य न्याय रे ॥ द्र० ॥ ४७ ॥

द्रव्य तीर्थ'कर कै कीर्द्ध गुण बिना रे, ते पिण कहवा
 ने द्रव्ये नाम रे । पिण धर्म नहीं तिण नें बांदिंया
 रे, तरण तारण नहीं कै नाव रे ॥ द्र० ॥ ४८ ॥ गुण
 बिन द्रव्य तीर्थ'कर तेहसूं रे, किण बिध घटसी
 आत्म दोष रे । जो त्यांने बांदिंयां सद्गत हुवै रे,
 तो जीव सगलार्द्ध जावता मोक्ष रे ॥ द्र० ॥ ४९ ॥ जे
 द्रव्य तीर्थ'कर बांदि गुण बिना रे, त्यांरे लूल न दीसे
 बोले बंध रे । फिरती भाषा बोले कपटौ थका रे,
 ते होय रक्षा मोह अंध रे ॥ द्र० ॥ ५० ॥ गुण करके
 तीर्थ'कर देव कै रे, गुण करने कछा कै सिद्ध साध
 रे । त्यांरा गुण नें द्रव्य तो एकहीज कै रे, त्यांने
 बांदिंयां सूं परम समाध रे ॥ द्र० ॥ ५१ ॥ गुण और
 ने द्रव्य और कै रे, ते तो कहिवता लावण काम रे ।
 कोर्द्ध भोले मत भूलो गुण बिन द्रव्य सूं रे, सुण सुण
 द्रव्य रा चोखा नाम रे ॥ द्र० ॥ ५२ ॥ कीर्द्ध द्रव्यरा नाम
 कहिवा ने दिया रे, कीर्द्ध गुण निपन आवे काम रे ।
 ते कहिवारा द्रव्य जाणो कहिवा भणी रे, पिण गुण
 बिन निपन ते आवे काम रे ॥ द्र० ॥ ५३ ॥ इम
 कहतां कहतां पूरा हुवै नहीं रे, इण द्रव्य निक्षेपा
 रो विस्तार रे । कीर्द्ध गुण बिन थोथो द्रव्य माने नहीं
 रे, त्यां निश्चय सफल कियो अवतार रे ॥ द्र० ॥ ५४ ॥

॥ दोहा ॥

नाम धापना द्रव्य तणो, यां तीनां रो कछो
 विस्तार । ए गुणा निगुणा भाव रहित मे, एणकण
 नहीं लिगार ॥ १ ॥ गुण विन नाम निक्षेवलो, गुण
 विन धापना आकार । जे द्रव्य निक्षेपो गुण विना,
 ए तीनों ई निक्षेपा असार ॥ २ ॥ तिण कारण मोटो
 कछो, गुण सहित निक्षेपो भाव । च्यारु' निक्षेपा
 मांहि भाव है, तिण रो विरला जाणे सार ॥ ३ ॥
 भाव निक्षेपो रुड़ी रीतसूँ, ओलखज्यो नर नार ।
 इण ओलखियां विन जीव रे, घट में घोर अंधार ॥ ४ ॥
 जे जे द्रव्य रा नाम है, नाम जिसा गुण तिण मांहि ।
 भाव निक्षेपो श्री जिनवर कछो, ते सुणज्यो चित्त
 लगाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांचवीं ॥

(पूज्यजी पधारे नगरों सेविया । एदेशी)

अनन्ता तीर्थ'कर आगे होसी बले, ते अवारु'
 रुलें च्यारु' गत मांहि हो भविक जण, जे द्रव्य तीर्थ'-
 कर कहिजे तेहने, पिण भावे एकेन्द्रियादिक ताहि
 हो भविक जण, भाव निक्षेपो भवियण ओलखो ॥ १ ॥
 तीर्थ'कर घर वासे वसतां गकां, जब भोगी पुरुष

विख्यात हो भ० द्रव्य तीर्थङ्कर त्यां ने ही जिन कछ्या,
 पिण भाव तो गृहस्थ साक्षात हो भ० ॥ भा० ॥ २ ॥
 तीर्थङ्कर घर छोड़ी चारित्र्य लियो, पाले कै शुद्ध
 आचार हो भ० तो द्रव्य तीर्थङ्कर कहीजै तेहनें, भावे
 होया मोटा अणगार हो भ० ॥ भा० ॥ ३ ॥ केवल
 ज्ञान दर्शन उपनां पकै, थापै तीर्थ चार हो भ० भाव
 तीर्थंकर कहिजै तेहनें, समझो आण विचार हो भ० ॥
 भा० ॥ ४ ॥ चोतीस अतिशय करने परबस्या, बाणी
 गुण पेंतीस हो भ० तीर्थंकर ना सगला गुण, कै तेहमें,
 तीर्थंकर भाव जगदीस हो भ० ॥ भा० ॥ ५ ॥ अनंता
 तीर्थंकर आगे होसी, बलें हिवड़ां तो चिहुंगत
 गोता खाय हो भ० द्रव्य तीर्थंकर त्यां नहीं जिन
 कछ्या, पिण भावे तो ऐक्येन्द्रियादिक साय हो भ० ॥
 भा० ॥ ६ ॥ घर छोड़ी सूधो पाले साध पणो, पिण
 हणिया नहीं कर्म चार हो भ० त्यां लग द्रव्य तीर्थङ्कर
 कछ्या तेहने, ते भावे हुया सुध अणगार हो भ० ॥
 ॥ ७ ॥ चार कर्म घन घातिया कै अरि, ए अरि
 हणियां सूं अरिहंत हो भ० भावै अरिहंत कहीजै
 तिण समै, ते वो लखवां दे मतिवंत हो भ० ॥ भा०
 ॥ ८ ॥ अनन्ता सिद्ध आगमिया काले हुसौ, ते तो
 हिवड़ां चिहुंगत गोता खाय हो भ० द्रव्य तो सिद्ध

कहोजै तेहनें, पिण भावे एकेन्द्रियादिक मांहि हो
 भ० ॥ भा० ॥ ९ ॥ वले अरिहंत साधु मुक्ति नें
 निकल्या, त्यां भाव प्रमाणे गुण कट्ठ हो भ० पिण
 ज्यां लग मुक्ति न पोहता, त्यां लगे द्रव्य कहोजै सिद्ध
 हो भ० ॥ भा० ॥ १० ॥ सकल काज साजो मुक्तो
 गया, त्यां आठों हो कर्म क्षय कौध हो भ० त्यां
 आवागमन सेव्यो गत चार नौ, त्यांने भाव कहोज हो
 भ० ॥ भा० ॥ ११ ॥ चनन्ता आचारज उपाध्याय
 साधु होसो, ते हिवड़ां नरका ना मांहि हो, भ० ते
 आचारज उपाध्याय साधु द्रव्ये कछा, भावे नेरिया-
 दिक नाम हो भ० ॥ भा० ॥ १२ ॥ वले आचारज
 उपाध्याय घर में थकां, ते द्रव्ये कै भाव रहित हो
 भ० त्यांरा गुण प्रगट होवा घर कोडिया पकें, जब
 भावे गुण सहित हो भ० भा० ॥ १३ ॥ कोई आचा-
 रज उपाध्याय साधु भागल थया, ते द्रव्ये कै गुणरहित
 हो भ० त्यां से आगमिया काले गुण परगव्या, जब
 होसो वले भाव सहित हो भ० ॥ भा० ॥ १४ ॥
 कृतोस गुण आचारज पडिवज्यो पचीस गुण उपा-
 ध्याय हो भ० सतावीस गुण सहित साधु कछा, ए
 भावे सगला भावे मुनिराय हो भ० ॥ भा० ॥ १५ ॥
 ए भावे अरिहंत सिद्ध साधु कछा, त्यांने वांट्या

निज रंग धर्म हो भ० निगुणा तीन निक्षेपा मानिया,
 बांधे सात आठो सब कर्म हो भ० ॥ भा० ॥ १६ ॥
 जे माता पितारा अंगसुं अपनो, ते भावे पुत्र साक्षात
 हो भ० मात पिता पण भावे छै तेहना, लीवे ज्यां
 लग त्यांरो अंग जात हो भ० ॥ भा० ॥ १७ ॥ ते
 पुत्र मरे ओर जायगा, उपनो जब यांरो नहीं अंग
 जात हो, भ० ए माता पिता पण भावे नहीं तेहना
 भावे सगपण नहीं तिल मात हो भ० ॥ भा० ॥ १८ ॥
 कोई स्त्री परणें घर बासी करे, ते भावे बरते नार हो
 भ० ते पाकल भव दुण री माता हुंती, ऊ सगपण
 नहीं रह्यो लिगार हो भ० ॥ भा० ॥ १९ ॥ इम
 भाई भतीजा काका बाबादिक, बहन बहनोई आदि
 पिछाण हो भ० जे जे सगपण वर्तमान काल में, ते
 भाव सगपण जाण हो भ० ॥ भा० ॥ २० ॥ भाव
 सगपण जे संसार मे, ते आवे गुण परमाणें काम हो
 भ० द्रव्ये सगा सगला एक एक रे, त्यांरा कुण कुण
 कहीजे नाम हो भ० ॥ भा० ॥ २१ ॥ भावे सगपण
 बीता पछें भावे ज्युं अर्थ न आय हो भ० द्रव्ये तो
 पण भावे मांहि नहीं, त्यां सूं गरज सरे नहीं काय
 हो भ० ॥ भा० ॥ २२ ॥ सगला ई जीव छै द्रव्य
 नेरिया, पण भावे तो नारकी सभार हो भ० तिहां

छेदन वेदन जेन वेदना, ते खाय अनन्ती मार हो
 भ० ॥ भा० ॥ २३ ॥ जो देवता होसो आगमिया
 काल में, जे द्रव्य है देवता पिछाण हो भ० भवनपति
 व्यंतर ज्योतिषी विमाणीया, ते भावे तो देवता जाण
 हो भ० ॥ भा० ॥ २४ ॥ नारकी आदि चौबीस डंडक
 मझे, तिहां जीव उपजै आय हो भ० ते भावे तो
 कहीजे ब्रते तेहवो, जीवो सूत्र मांहि हो भ० ॥ भा०
 ॥ २५ ॥ अणघड़िया रूपा ने द्रव्ये रुपयो कह्यो,
 तिण रो घड़ आकार तेह हो भ० पछे उपर सिक्की
 दियो चलण हुवै जेहवो, जव भावे रुपयो एह होय
 हो भ० ॥ भा० ॥ २६ ॥ सूत पूणी ने द्रव्ये कपड़ो
 कहै, गुण विन तेहनो नाम हो भ० भावे तो कपड़ो
 कहीजै वणिया पछे, ते आवे पहरण रे काम हो
 भ० ॥ भा० ॥ २७ ॥ इत्यादिक भाव निक्षेपा अनेक
 है, ते पूरा कैसे कहाय हो भ० अने अनुसारि बुधवंत
 समझ नें, ओलख लीजो न्याय हो भ० ॥ भा० ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

दुनियां मे सोलप घणी. ते कही कठां लग जाय ।
 अर्थ अनर्थ धर्म कारणे, हण रह्या जीव क काय ॥१॥
 अर्थ हणे ते आठां करण. आतम न्यात घर परवार ।
 सित न्याती नें भूत जल. यांरो घणी कह्यो विस्तार ॥२॥

ए आठ करणां बिना हणै, ते अकल बिना वे फाम ।
 ते अनर्थ दंड श्री जिन कह्यो, छ काय हणे बिन काम
 ॥३॥ देव गुरु धर्म कारणे, जाणे जीव हण्या कै धर्म ।
 धर्म हेत हणै कै किण बिध, ते भूला अज्ञानी भर्म ॥४॥
 अर्थ अनर्थ धर्म कारणे, सगलै ठाम हण रह्या कै
 प्राण । ते दया किसी पर पालसी, अै मूढ़ मिथ्याती
 अयान ॥ ५ ॥ ते हिंसा धर्मी जीवड़ा, तिण रे उदय
 मिथ्यात अज्ञान । यांरे छ काय मारण तणो, रहै
 निरंतर ध्यान ॥ ६ ॥ देव गुरु धर्म कारणे, किण बिध
 हणे छ काय । त्यांरी खाटी अद्वा प्रगट करू, ते
 सुणज्यो चितलाय ॥ ७ ॥

* ढाल छठी *

(बिछिया नी देशी)

अरिहंत देव री करै थापना, हण रह्या जीव छ
 काय जी । देव काजि हणे जीव किण बिध, ते सांभल
 ज्यो चितलायजी ॥ जीव मारे ते धर्म आछो नहैं ॥१॥
 ते देवलादिक करावता लगावे हजारों दाम जी । धन
 खरचे पूजादिक कारणे, बलि करे अनेक हगाम जी ॥
 जी० ॥२॥ पत्थर कान सूं काढ़ मंगावतां, लस थावर
 मारे अनेकजी । त्यांरो लेखो करे घट भीतरे, कोई

वुधवंत आण विवेक जी ॥ जी० ॥ ३ ॥ पत्थर फोड्यां
 पृथ्वि काय में रे, पांणी घाले चूनादिक मांझिजी ।
 वायु काय मरे लेतां मेलतां, टांची बाज्यां उठे तेज
 काय जी ॥ जी० ॥ ४ ॥ वनस्पति तस जीवड़ा, गाडा-
 दिक हेठे चिंथ्या जाय जी । नौव देई देवल चुणता
 थकां, तठै पण मरे छः काय जी ॥ जी० ॥ ५ ॥ चूनी
 वाले ऊपर देती थकां, तिहां पिण जीव मरे अथाग
 जो । अनन्ता जीव मार देवल कियो, ओ तो नहीं
 कै सुगत रो मागजी ॥ जी० ॥ ६ ॥ देवल करांवता
 हिंस्या हुई, ते पुरी क्षम कहायजी । पकै पूजादिक
 करावतां, नितरानित मारे छ कायजी ॥ जी० ॥ ७ ॥
 कठै टांची वाजि निरंतर, नित नित मारे पृथ्वीकाय
 जी । त्यांने दुख उपजे तिण समें, घणी तु अतुल
 वेदना घायजी ॥ जी० ॥ ८ ॥ नित पाणी ढोले नव-
 रावतारे । अगन मारे दोवा उजवालतांजी । नित
 नित रा वाजकाय मारे घणां, कूट मजीरा तालजी ॥
 जी० ॥ ९ ॥ नित काची कलियां तोड़ ने, माथा गूथ
 चढ़ावे आणजी । दीवादिक सं मरे पतंगिया, तस
 काय रा याय पिण घमसान जी ॥ जी० ॥ १० ॥
 इत्यादिक छः काय मारवा, नितका करै कै संग्राम
 जी । वले कहे न्हान पाप लागो नहीं, हणिया अरि-

हंत देव रे काम जी ॥ जी० ॥ ११ ॥ आवै दया पालण
 रे पगथीयो, तिण पूर्व पजूसण मास जी । ते तो तिण
 दिन जीव मारे घणां, करे जनेक जीवां रो बिनास
 जी ॥ जी० ॥ १२ ॥ पछै सतरह भदै पूजा रचै, तिण
 रो माडे घणो बिस्तारजी । तहै दया तणो सीचो नहीं,
 करे छ काय रो संहारजो ॥ जी० ॥ १३ ॥ बांधे पगां
 मे घूघरा, हाथ मे लेवे मजीरा तालजी । ते तो बजावै
 गावै कुदड़का करै, छः काय रो खिंगारजी ॥ जी०
 ॥ १४ ॥ देव काज हणै जीव इण बिध, तिण में मूल
 मजाणो दोषजी । जाणे लाभ हुयो जिन धर्म रो,
 तिण स्युं नेड़ी छै अविचल मोक्षजी ॥ जी० ॥ १५ ॥
 इत्यादिक देवल काजि हणै तिण रो कहता न आवै
 पारजी । हिवै गुरु रे काजि हणै जीव नें, ते सांभल
 ज्यो बिस्तारजी ॥ जी० ॥ १६ ॥ देव रे काजे देवल
 करावतां थकां, चस थावर रा लूझा प्राणजी । तिन
 गुरु काजे थानक किया, हुवै छ काय रो घमसानजी ॥
 जी० ॥ १७ ॥ थानक करावता हिंसा हुई, ते तो
 देवल नी परे जाणजी । छः काय मारे छै किण बिधि,
 तिण री बुधवन्त करज्यो पिछाणजी ॥ जी० ॥ १८ ॥
 बले बांधे परदाने परछनें, चन्दवा भारादिक आणजी ।
 इत्यादिक थानक रे कारण हणै, चस थावरां रा प्राण

जी ॥ जी० ॥ १६ ॥ खीर खांड फीन्यां रोख्यां करै,
 पाणी उकाले भरभर ठासजी । और अनेक वस्तु करै
 घणी, गुरुने पडिलाभण कामजी ॥ जी० ॥ २० ॥ आहार
 पाण्यादिक निपजावतां, करे छ कायरो विनासजी ।
 पकै तेड़ वहरावै तेहनें, बले करे सुक्ति नी आसजी ॥
 जी० ॥ २१ ॥ इत्यादिक गुरु काजे हिंसा करे, ते तो
 पूरौ क्षेम कहायजी । धर्म काजे हिंसा करै जीवरी,
 ते सांभल ज्यो चितलायजौ ॥ जी० ॥ २२ ॥ करे
 उजवणा नें पारणा, बले साहमी बकल जाणजी ।
 त्यानि न्यांत जिमायां कारणें, करै छः कायरो घम-
 माणजी ॥ जी० ॥ २३ ॥ बले धर्म काजे धंकल करै,
 सिंघ काड लेव जावे जातजी । चोमासादिक में
 आवता जावता, करे चस घावर री घातजी ॥ जी०
 ॥ २४ ॥ तप सांडो ते पूरो हुआ पकै, जीमण करे
 लोक जायजौ । बले लाडुयादिक करावता, ते तो
 हगई जीव छ कायजी ॥ जी० ॥ २५ ॥ बले समदंड
 होई दान दे, उपर बाडा रा फल देई जाणजी ।
 आंवादिक ना फल नी चोवीसौ देई, इत्यादिक दान
 पिछाणजौ ॥ जी० ॥ २६ ॥ हगे अर्थ अनर्थ जीव ने,
 ते ता भारी हावे वांटे पायजौ । धर्म हते हगे छः
 काय ने, श्रीतो कुगुरां तणा प्रतापजी ॥ जी० ॥ २७ ॥

पंखी आला घाले देवल मभे, झंडा मेलव से तिण
 सांहिजी । ते निजरां पडे कुगुरां तणी, तो आला दे
 तुरत पडायजी ॥ जी० ॥ २८ ॥ केई झंडा पंखी जीवां
 मारे, केई उड़ता जाय आकासजी । तिणमें धर्म
 परुमै पापिया, करै जीवां रो बिनासजी ॥ जी० ॥ २९ ॥
 जे अनारज आवे देस उपरे, जब करे अकारज काम
 जी । दुख उपजावे रांक गरीब ने, फिर फिर मारे
 नगर ने गामजी ॥ जी० ॥ ३० ॥ तिम कुगुरु अनारज
 सारिखा, त्यांरा दुष्ट घणा परिणामजी । ते पिण गांवां
 नगरां फिरता थकां, मरावे पंखियां रा ग्रामजी ॥ जी०
 ॥ ३१ ॥ अनारज देस मार गयां पिकै, बले ग्राम नगर
 वसें केमजी । अनारज फेर आवे तिहां, तो बले मार
 करे घमसानजी ॥ जी० ॥ ३२ ॥ ज्यू कुगुरु विहार किया
 पकै, पंखी फेर आला घाले लागजी । बले कुगुरु
 आवे तिण ग्राम में, पंख्यां रो जाणो अभागजी ॥ जी०
 ॥ ३३ ॥ मोटा विरद महाजन रा कुल मभे, बाजी
 जीव दया प्रतिपालजी । पिण कुगुरु तिण भरमाविया,
 पाडै पंखियारा मालजी ॥ जी० ॥ ३४ ॥ अनारज ग्राम
 नगर माखां पकै, केई आणे मन में पश्चातापजी ।
 कुगुरु जीव मार हर्षित हुबै, त्यांरे हिंसा धर्मीरी थाप
 जी ॥ जी० ॥ ३५ ॥ अनारज करै कतल जीवां तणी,

ते पिण फेरे दुहाई बेगजी । कुगुरु जीव मरावण नया
 नया, त्यांरो कठे न दीसे थोगजी ॥ जी० ॥ ३६ ॥
 अनारज विच तो कुगुरु बुरा, त्यांरो मूरख माने बात
 जी । ते तो धर्म जाणे जीव मार नें, ओ तो करडो
 घणो मिथ्यातजी ॥ जी० ॥ ३७ ॥ कुगुरु कहै हिंसा
 किया बिना, धर्म न होय केमजी । पोते त्याग किया
 हिंसा तणां, त्यांने धर्म किहां थी होयजी ॥ जी०
 ॥ ३८ ॥ जो हिंसा कियां धर्म नौपजै, तो गृहस्थ
 हो जाय निहालजी । पिण साधां रे हिंसां करणी
 नहीं, त्यांरो होसी कवण ज्वालजी ॥ जी० ॥ ३९ ॥
 जीव मारियां धर्म कहै, ए तो कुगुरु तणां छे वैगजी ।
 त्यांने वांदि पूजै गुरु जाण नें, त्यांरा फूटा अंतर नैण
 जी ॥ जी० ॥ ४० ॥ जीवतव्य नें प्रशंसा कारणे, बले
 माने बड़ाई कामजी । हणै जन्म मरण मुकायवा,
 बले दुख दूर करवा तामजी ॥ जी० ॥ ४१ ॥ हणै
 क कारण कः काय नें, ते तो ए कारण साक्षातजी ।
 धर्म हेत तिण जीव नै हणै, समकित जाय आवै
 मिथ्यातजी ॥ जी० ॥ ४२ ॥ क कारण हिंसा कियां
 बांधे, आठ कर्म गांठ पूरजी । निश्चय मोह नें मार
 बधे घणी, नहीं वरतनरक स्युं दूरजी ॥ जी० ॥ ४३ ॥
 कः कारण हिंसा करे, ते तो दुख पावे डण संसारजी ।

आचारंग पहला अध्ययन में, कृजं उदेशां कक्षो
 विस्तारजी ॥ जी० ॥ ४४ ॥ कै समण माहण अना-
 रज यकां, कहै हिंसा धर्म नी थापजी । कहै प्राण भूत
 जीवां सतबनें, धर्म हित हणां नहीं पापजी ॥ जी०
 ॥ ४५ ॥ एहवी ऊंधी परूपे तेहने, आरनार्ये साधु
 बोलया केमजी । तुमे भूठो दीठो सांभल्यो, भूडो दीठो
 भूडो सांभलो केमजी ॥ जी० ॥ ४६ ॥ जीव माखां रो
 दोष गिणनें, ए वचन अनारज जाणजी । एहवा मूढ़
 मिथ्याती नें दुर्मती । त्यांरो सुध बुध नहीं है ठिकाण
 जी ॥ जी० ॥ ४७ ॥ कोइ हिंसा धर्मी ने इम कहै,
 यांने माखां हुवै धर्म के पापजी । जब कहे म्हांने
 माखां पाप कै, सुधी सांच बोलया साची थापजी ॥
 जी० ॥ ४८ ॥ जो यांने माखां रो पाप कै, तो इम
 सर्व जीवां माखां जाणजी । और नें माखां धर्म परूपे,
 ये कांई बूड़ो कर कर ताणजी ॥ जी० ॥ ४९ ॥ ए
 आचारंग चौथा अध्ययन में, दूजे उदेशे जाण विस्तार
 जी । हिंसा धर्मी अनारज तेहनें, कीधा जिन मार्ग
 खूं न्यारजी ॥ जी० ॥ ५० ॥ धर्म होसी एकेन्द्री मारियां,
 जो बेन्द्री माखां पाप न थायजी । अधिक मार्यां
 अधिक धर्म कै, इण री श्रद्धा री ओहीज न्यायजी ॥
 जी० ॥ ५१ ॥ जो एकेन्द्री मार्यां पाप कै, तो बेन्द्री

मारग्रां पाप विशेषजी । अधिक्का मारग्रां अधिको पाप
 के इस जेण धर्म सामो देखजी ॥ जी० ॥ ५२ ॥ कोई
 हिंसा धर्मी चवडे कहै, हिंसा कीधा विना न हुवै
 धर्मजी । कोई चवडे न कहै कपटौ थकां, सांच
 कहतां आवै शर्मजी ॥ जी० ॥ ५३ ॥ कोई दया धर्मी
 वाजे लोकमें, चाले हिंसा धर्मी नी रीतजी । ते पिण
 छे तिण ही पांत रा, बतलाथां बोले विपरीतजी ॥
 जी० ॥ ५४ ॥ सूत्र सिद्धान्त में इस कह्यो, जीव हणियां
 सूं लागे पापजी । न मारग्रां सूं पाप लागे नहीं, श्री
 जिण मुख भाखियो आपजी ॥ जी० ॥ ५५ ॥ बले देहरा
 प्रतिमा करावतां, जीव हण रछा पृथ्विकायजी ।
 त्यांने मंदबुद्धि श्री जिन कह्यो, दशमां अंग पहला
 अध्ययन मांयजी ॥ जी० ॥ ५६ ॥ बले जुद्ध मत कहौ
 तेहनी, तेतो दीठ बूढ़ घणो अत्यंतजी । दुरंत पंत
 लक्षण रो घणौ, हिंसा धर्मी ने कहै भगवंतजी ॥ आ०
 ॥ ५७ ॥ जीव हिंसा करै तेहनें, श्रीलखायो श्रीजिन-
 रायजी । हिवै हिंसा धर्मी रा फल कह्यो, ते सांभल
 ज्यो चितलायजी ॥ जी० ॥ ५८ ॥ कोई हिंसा धर्मी
 जीवड़ा, मरे उपजै नरक सभारजी । तिहां केदन
 भेदना अति घणा, बले खाय अनंती मारजी ॥ जी०
 ॥ ५९ ॥ मार खाय नरक थी निकलै, पड़ै तीर्थच सं

जायजी । तिहां पिण दुख पामें अति घणां, ते तो
 पूरा केम कहायजी ॥ जी० ॥ ६० ॥ बली निगोद में
 पडियां पकै, दुख पामें अनन्तो कालजी । परिभ्रमण
 करे संसार में, जाणे अरट तणी घडमालजी ॥ जी०
 ॥ ६१ ॥ इस रुलतो संसार में, कदे मनुष्य तणी भव
 प्रायजी । ते किम पावै कै अवसाता, ते सांभल ज्यो
 चितलायजी ॥ जी० ॥ ६२ ॥ त्यांरी बाल पणै माता
 मरे, बले पितारो पड़ै बिजोगजी । सयण सगारो
 बिछोह पड़ै, मिलै दुश्मणरो संजोगजी ॥ जी० ॥ ६३ ॥
 बालक थकी मरे बेटा बेटियां, बले घर भांगे अंध-
 गालजी । दुख दुख जमारो पूरो हुवै, बले आवे अण-
 हुंतो आलजी ॥ जी० ॥ ६४ ॥ कीर्द्ध होय टूटां पांगला,
 कीर्द्ध गूंगा बेहरा जाणजी । कीर्द्ध होय जावे आंधां ने
 दरिद्रो, रहे दिन दिन ताणा ताणजी ॥ जी० ॥ ६५ ॥
 सोलह रोग शरीर में उपजै, तिणस्यूं पामें दुःख
 संतापजी । जनम मरण रा दुख पामें घणा हिंसा धर्म
 तणे प्रतापजी ॥ जी० ॥ ६६ ॥ सूयगडांग अंग अध्ययन
 अठारमें, ए भावे कहा जिनरायजी । इस सांभल ने
 नर नारियां, धर्म हेत मत हणो कः कायजी ॥ जी०
 ॥ ६७ ॥ देवल हिंसा निषेधी सांभलै, कीर्द्ध पाछो
 उत्तर देवे हामजी । पाप हुवै तो नहीं लगावता,

मारग्रां पाप विशेषजी । अधिको मारग्रां अधिको पाप
 कै इम जेण धर्म सामो देखजी ॥ जी० ॥ ५२ ॥ कोई
 हिंसा धर्मी चवडे कहै, हिंसा कीधा बिना न हुवै
 धर्मजी । कोई चवडे न कहै कपटी थकां, सांच
 कहतां आवै शर्मजी ॥ जी० ॥ ५३ ॥ कोई दया धर्मी
 बाजे लोकमें, चाले हिंसा धर्मी नी रीतजी । ते पिण
 कै तिण ही पांत रा, बतलाथां बोले बिपरीतजी ॥
 जी० ॥ ५४ ॥ सूत्र सिद्धान्त मे इम कह्यो, जीव हणियां
 सूं लागे पापजी । न मारग्रां सूं पाप लागे नहीं, श्री
 जिण मुख भाखियो आपजी ॥ जी० ॥ ५५ ॥ बले देहरा
 प्रतिमा करावतां, जीव हण रक्षा पृथ्विकायजी ।
 त्यांने मंदबुद्धि श्री जिन कह्या, दशमां अंग पहला
 अध्ययन मांयजी ॥ जी० ॥ ५६ ॥ बले जुद्ध मत कही
 तेहनी, तेतो दीठ बूढ़ घणो अत्यंतजी । दुरंत पंत
 लक्षण रो घणो, हिंसा धर्मी ने कहै भगवंतजी ॥ जी०
 ॥ ५७ ॥ जीव हिंसा करै तेहनें, ओलखायो श्रीजिन-
 रायजी । हिवै हिंसा धर्मी रा फल कह्यं, ते सांभल
 ज्यो चितलायजी ॥ जी० ॥ ५८ ॥ कोई हिंसा धर्मी
 जीवड़ा, मरे उपजै नरक सभारजी । तिहां छेदन
 भेदना अति घणा, बले खाय अनंती मारजी ॥ जी०
 ॥ ५९ ॥ मार खाय नरक थी निकलै, पड़ै तीर्थच मे

जायजी । तिहां पिण दुख पामें अति घणां, ते तो
 पूरा केम कहायजी ॥ जी० ॥ ६० ॥ बली निगोद में
 पडियां पकै, दुख पामें अनन्तो कालजी । परिभ्रमण
 करे संसार में, जाणे अरट तणी घडमालजी ॥ जी०
 ॥ ६१ ॥ इस रुलतो संसार में, कदे मनुष्य तणी भव
 पायजी । ते किम पावै कै अवसाता, ते सांभल ज्यो
 चितलायजी ॥ जी० ॥ ६२ ॥ त्यांरी बाल पणै माता
 मरे, बले पितारो पड़ै बिजोगजी । सयण सगारो
 बिकोह पड़ै, मिलै दुश्मणरो संजोगजी ॥ जी० ॥ ६३ ॥
 बालक थको मरे बेटा बेटियां, बले घर भांगे अंघ-
 गालजी । दुख दुख जमारो पूरो हुवै, बले आवे अण-
 हुंतो आलजी ॥ जी० ॥ ६४ ॥ कीर्द्ध होय टूटां पांगला,
 कीर्द्ध गूंगा बेहरा जाणजी । कीर्द्ध होय जावे आंधां ने
 दरिद्रो, रहे दिन दिन ताणा ताणजी ॥ जी० ॥ ६५ ॥
 सोलह रोग शरीर में उपजै, तिणस्थूं पामें दुःख
 संतापजी । जनम मरण रा दुख पामें घणा हिंसा धर्म
 तणे प्रतापजी ॥ जी० ॥ ६६ ॥ सूयगडांग अंग अध्ययन
 अठारमें, ए भावे कछा जिनरायजी । इस सांभल ने
 नर नारियां, धर्म हेत मत हणो छः कायजी ॥ जी०
 ॥ ६७ ॥ देवल हिंसा निषेधी सांभलै, कीर्द्ध पाछो
 उत्तर देवे हामजी । पाप हुवै तो नहीं लगावता,

लाखां कोड़ां हजारों दामजी ॥ जी० ॥ ६८ ॥ आगे
 बड़ा बड़ेरा भोला था नहीं, धन खरचे लगावे पाप
 जी । किणही री उठाई उठे नहीं, माहरा बड़ा बूढ़ा
 थापजी ॥ जी० ॥ ६९ ॥ आगे सर्व मार्ग हुआ घणा,
 त्यांरो जीवो पुराण विचारजी । त्यां पिण लाखां
 कोड़ां लगाविया, कराया देवल हरद्वारजी ॥ जी०
 ॥ ७० ॥ आगे बड़ा बड़ेरा तुरकां तणां, त्यां पिण
 कराई मसीतजी । त्यां पिण लाखां कोड़ां लगाविया,
 सगलां रे आहोज रीतजी ॥ जी० ॥ ७१ ॥ जैनी, शिव,
 ने सुसलमान रे, सगलां रे बड़ा री आही रीतजी ।
 त्यां पिण लाखां कोड़ां लगाविया, ने कराया देवल
 आदि मसीतजी ॥ जी० ॥ ७२ ॥ और देवल मसीत
 कराविया, त्याने पाप बतावे पूरजी । जैन रा देहरा
 कियां तेहने, धर्म कहै ते एकन्त क्रूरजी ॥ जी० ॥ ७३ ॥
 धर्म होसी तो सगला धर्म कै, पाप होसी तो सगला
 पापजी । ए लेखो कियां तो लड़ पड़ै, खोटी श्रद्धा
 करवा री थापजी ॥ जी० ॥ ७४ ॥ आपरा देवल री
 करे थापना, और देवल देवे उथापजी । पिण धर्म
 नहीं हिंसा कियां, कोई मत करो कूड़ बिलाप
 जी ॥ जी० ॥ ७५ ॥ दया धर्म कै जिन तणी,
 तिण ने जीव न हणवो विणेषजी । जीव मायां

सूँ धर्म निपंजै नहीं, इस प्रवचन सामी देखजी ॥
जी० ॥ ७६ ॥

इतिश्री चार निक्षेपां री चौपाई सम्पूर्णा ।



नित्यप्रति उद्यम अति घणोरे मुक्त स्हामी धुन कीनहो
 लाल ॥ ७ ॥ स्त्रियादिक ना संगनेरे जाण्या विष फल
 जेमहो लाल हांसकितोहलने हणीरे हिये निर्मला हेमहो
 लाल ॥ ८ ॥ सीयल धखो नववाड़ सूं रे धुर बोला
 ब्रह्मचारहो लाल ए तप उत्कृष्टो घणोरे सुरपति प्रणमें
 सारहो लाल ॥ ९ ॥ उपशम रस माहें रम रह्यारे
 बिबिध गुणारी खाणहो लाल एकंत कर्म काटण
 भणीरे संवेग रस गलताणहो लाल ॥ १० ॥ स्वाम
 गुणारा सागरुर, गिरवो अति गम्भीरहो लाल । उजा-
 गर गुण आगलारे मेरु तणी पर धीरहो लाल ॥ ११ ॥
 कठिन वचन कहिवा तणोरे, जाणकी लीधो नेमहो
 लाल । बहुल पणे नहीं बागखोरे वचनामृत सूं प्रेमहो
 लाल ॥ १२ ॥ बिबिध कठिन वच सांभलीरे, ज्यांरे
 मनमें नहीं तमायहो लाल । तन मन वच मुनि वश
 कियोरे ए तप अधिक अथायहो लाल ॥ १३ ॥ मु० ॥
 चोथे आरे सांमत्यारे क्षमा शूरा अरिहन्तहो लाल
 बिरला पंचम काल मेरे हेम सरिषा संतहो लाल
 ॥ १४ ॥ मु० निरलोभी मुनि निर्मलारे आर्जव निर
 अहंकारहो लाल हलका कर्म उपधिकरीरे सत्यवच
 महा मुखकारहो लाल ॥ १५ ॥ मु० संयम में शूरा
 घणारे । वर तप बिबिध प्रकारहो लाल उपधि अना-

दिक् मुनि भणीरे दिलरो हेम दातारहो लाल ॥ १६ ॥
 मु० घोर ब्रह्म मुनि हेमनोरे स्युं कहिये बहु बारहो
 लाल अखिल व्रत उचरङ्ग सुंरे पाल्यो अधिक उदारहो
 लाल ॥ १७ ॥ इर्था धुन अति ओपतिरे जाणे चाल्यो
 गजराजहो लाल गुण मुरत गमती घणीरे प्रत्यक्ष भव
 दधि पाजहो लाल ॥ १८ ॥ मु० मो सूं उपकार कियो
 घणीरे कछो कठा लग जायहो लाल निश दिन तुम्ह
 गुण संभरुंरे वस रछा मन मांयहो लाल ॥ १९ ॥
 मुपने में सूरत स्वामनीरे पेखत पामें प्रेमहो लाल
 याद कियां हियो हुलसिरे कहणी आवे किमहो लाल
 ॥ २० ॥ मु० हुंती विन्दु समान थो रे तुम कियो
 सिन्धु समानहो लाल तुम गुण कवहुन विमरुंरे निश
 दिन धरुं तुम्ह ध्यानहो लाल ॥ २१ ॥ साचा पोरण
 ये सहीरे करदेवो आप सरिसहो लाल विरह तुमारी
 दोहिलोरे जाण रछा जगदीशहो लाल ॥ २२ ॥ मु०
 जीत तणी जय थे करीरे विद्यादिक विस्तारहो लाल
 निपुण कियो सतीदास नेरे बलि अवर संत अधिकार
 हो लाल ॥ २३ ॥ स्वाम गुणारा सागरुंरे किम कहिये
 मुख एकहो लाल उंडी तुम्ह आलोचनारे वारुं तुम्ह
 विवेकहो लाल ॥ २४ ॥ मु० अखंड आचार्य आगन्यारे,
 ते पाली एकणधारहो लाल मान मेठ मन वश कियोरे

नित्य कीजी नमस्कारहो लाल ॥२५॥ मु० साभ घणा
 संता भणौरे, तें दीधो अधिक उदारहो लाल गण
 बळल गण बालहोरे समरे तौरथ च्यारहो लाल ॥२६॥
 मु० सुखदाइ सहू जग भणौरे, कर्म काटण ने शूरहो
 लाल तन मन रंज्यो आप रे तुं मुभ आशा पूरहो
 लाल ॥ २७ ॥ मु० हेम ऋषि इण रीतसूरे लीधो
 जनम नो लाहहो लाल हेम तणा गुण देखनेरे गुणी-
 जन कहै वाह रे हो लाल ॥ २८ ॥ मु० चर्म चौमासो
 आमेटमें रे आप कियो उचरङ्गहो लाल ध्यान सुधा-
 रस ध्यावतारे सखरी भांत सुरङ्गहो लाल ॥२९॥ मु०
 सातमी ढाल विषे कछ्यारे हेमतणा गुण सारहो लाल
 हेम गुणारो पोरसोरे याद करे नरनारहो लाल ॥३०॥



* ढाल *

गाफिल तू सोच मनमे हरिनाम क्यों विसारा ॥ एदेशी ॥

श्री पूज्य यह विनय है, फिर शीघ्र दर्श देना ।
 करके कृपा हमारी, जल्दी तलास लेना ॥ ए आंकड़ी ॥
 दिन बीसही कराकी, कौन्हा विहार साहिव । अब
 आपके बिना तो, हम चित्तही लगेना ॥ श्री० ॥ १ ॥
 हम ज्ञान नित्य मुनते, सेवा तुम्हारी करते । प्रभु
 आपके दर्श विन, दिल धैर्य तो धरेना ॥ २ ॥ प्रभु
 ग्राम २ जाके, उपकार तो कराकी । फिर यहां भी
 शीघ्र आके, हमको संभाल लेना ॥ ३ ॥ तुम ध्यान
 हम धरेंगे, तुम जाप हम करेंगे । निज व्याधिको
 हरेगे देखेंगे मार्ग नैना ॥ ४ ॥ विनती ये गौर करके,
 सबकी हृदयमें धरके । जल्दी ही आयेंगे हम, मुखसे
 यह वाक्य कहना ।

॥ इति समाप्तम् ॥

